शुद्धिपत्र

	पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
उपोद्घात	२	३	प्रकृतभाषा	प्राकृतभाषा.
	३	१५	हेमचेन्द्राचार्ये	हेमचन्द्राचार्य
	४	१७	संस्कृत	सांस्कृत
	८	१८	रुप	रूप
	११	१२	प्रद्शोनी	प्रदेशोनी
	१२	१६	तै	ते
	१४	२१	अध्यायोंमां	अध्यायोमां
	१५	२	जैनोंने	जैनोने
	१५	५	कइंक	कंइक
	१८	१४	प्राकृतरुपावतार	प्राकृतरूपावतार
	१६	२	आणवामां	आपवामां
	२२	१६	—रुपे	-रूपे
	”	२३	”	”
	२३	१	भाषाना	भाषानो
	२७	१	रुपो	रूपो
	”	२	”	”
	३५	२५	गंणाव्यो	गणाव्यो
	४१	२१	करता	करतां
	४८	३	रुपो	रूपो
पाठमाला	१	६	बोच्छ	वोच्छं
	१	६	ताथ	तथा
	२	२०	पइहरं	पईहरं
	२	२४	गोरिहरं	गोरीहरं
	३	२	नेमितक	निमित्तक.
	३	१८	गुरुल्लापाः	गुरुल्लापाः
	४	८	पूर्व	पूर्वं
	११	६	मदन	मदनः
	”	२१	कइ	कई
	१५	१८	[illegible]	[illegible]

પૃષ્ઠ,	પંક્તિ.	અશુદ્ધ	શુદ્ધ.
૨૧	૬	દરિસણ	દરિસણં
૨૫	૨૪	ગ. વાઉ	ગોવાઉ
૨૮	૨૬	પ્રકાર	પ્રકાર
૩૮	૪	ભવભ્રમણ	જગત્
૪૧	૧૨	કપડાં	કપડું
૪૨	૨૧	વયમવલિઅ	વયમવલિઅં
૪૪	૨૦	ઉત્તરાજ્ઝયણ	ઉત્તરજ્ઝયણ
,,	૨૨	મૂલરુપને	મૂલરૂપને
૪૫	૮	હિયઅ	હિયઅં
,,	૧૨	ઉત્તરાજ્ઝ-	ઉત્તરજ્ઝ-
૪૬	૧૬	સાપઇ	આસાપઇ
૪૭	૨૨	સંસ્કૃતસાં	સંસ્કૃતમાં
૪૮	૧૯	રુપો	રૂપો
૫૦	૨	જાણવા	જાણવાં
,,	૪	માત્ર	માત્ર
,,	૧૫	નવકારવાલી	નવકારવાલી
૫૧	૩	સહ	સહ (સહ્)
૫૧	૧૩	ઉત્તરાજ્ઝયણમ્મિ	ઉત્તરજ્ઝયણમ્મિ
૫૩	૨૪	(સ્વાધ્યાય)	(સ્વાધ્યાય)
૫૪	૧૩	સીગ્ધં	સિગ્ધં
૫૫	૫	,,	,,
,,	૯	,,	,,
૫૬	૧૨	ઋકારાનો	ઋકારનો
૫૭	૨૦	રુપો	રૂપો
૫૮	૧૧	શણિઅં	સણિઅં
,,	૧૨	થાડુ	થોડું
૫૯	૪	દોહિતરી-	દોહિતરો, દોકરીનો
૬૦	૧૮	કરોમા	કરો માં
૬૨	૨	ગચ્છાઇ	ગચ્છઇ
,,	૧૩	પ્રવૃત્તિ	પ્રવૃત્તિ
,,	૧૬	(સવજ)	(સવાદ્)
૬૭	૧૨	થાય તે.	થાય છે.

पृष्ठ	पंक्ति.	अशुद्ध	शुद्ध
६६	१०	हुकुम	हुकम
७०	११	राईणं णोसु	राईणं मणेसु
७२	१९	पढज्जइ	पढिज्जइ
७३	८	(कार्यते इत्यर्थ.)	(कार्यते इत्यर्थः.)
७५	३	सारु	सारुं
७७	५	सस्स	जस्स
,,	७	सिम	सिम्
,,	१७	कीस्सा	किस्सा
७९	१०	वम्भइ	वयइ
८३	२४	वेभवग्राणो	वैभववालो
८५	५	पम्हुच्छं	पम्हुट्ठं
,,	७	कंदोहं	कंदोट्टं
८८	८	घणुशब्दवत्	घेणुशब्दवत्
८९	१६	जींदगी	जन्म
९०	२०	घर्म	धर्म
९८	१६	पट्टि	पट्ठि
९९	६	पातरु	पातरुं
,,	२१	मज्झ(मध्य)	मज्झे (मध्ये)
१००	२०	साहुणं	साहूणं
१०१	१०	जणनो	जणना
१०४	२	सावज्झं	सावज्जं
१०७	५	अम्हस्सि	अम्हस्सि
१०८	२०	हिमि को	हिमि, मंको
११०	१२	धनमस्यास्तीति	धनमस्यास्तीति
११२	६	पिञ्जरमेवं	पिञ्जरमेव
११८	३	एतावान्मात्रम्	एतावन्मात्रम्
१२७	६	सीमावइ	सीयावइ
१२७	१८	दौवारिअं	दोवारिअं
१२८	८	पिपत्तति:	पिपत्तति
१२६	१८	(शिक्ष व्रतिक)	(शिक्षाव्रतिक)
१३०	२	समुप्पज्जित्था:	समुप्पज्जित्था:
,,	१४	वयासी:	वयासी.

पृष्ठ,	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१३३	४	फकमः	कतमः
,,	१३	विष्वक	विष्वक्
१४३	२५	पृथक	पृथक्
१४५	२३	पितृपतिः	पितृवती
१४७	२२	णिच्छरो	सणिच्छरो
,,	२४	ए=अइ	ऐ=अइ
१५१	४	खीलक	खीलको
,,	२१	शृङ्खलम	शृङ्खलम्
१५३	४	पिठर	पिठरः
१६५	२२	सम्मडिओ	सम्मड्डिओ
१६७	२	उत्थारो	उत्थाहो
१७५	१५	शार्ङ्गम	शार्ङ्गम्
१९६	१७	(स्यामन)	(स्यामन्)
२०१	१०	तामोतरोः	तामोतरो.
२०३	२३	नियमावालिनी	नियमावलिनी
२०७	१५	सयुंक्त	संयुक्त
२२६	११	(पाणहद)	(पाणह्रद)
२३२	१९	पोहो	थोहो
२४४	१६	पे	ए
२४५	१०	फज्जाण	कज्जाणि
,,	१३	णिरिविखआणि	णिरिक्खिआणि
,,	२०	थोहइ	थोहह
२४७	६	अधम्मकज्जाणि	अ धम्मकज्जाणि
२५१	६	देखे	देखाय
२६९	६	आत्माथी	आत्मार्थी

उपोद्घात.

प्राचीन आर्य पुरुषोनो अनुभव जे भाषाना गर्भमां व्यवस्थित थयो छे अने हजारो वर्षव्यतीत थया छतां टकी रह्यो छे, ते भाषानुं स्वरूप जाणवाने जिज्ञासु के मुमुक्षु वर्गने इच्छा थाय ए स्वाभाविक छे. भारतवर्षना आर्यरत्नोने वहन करनारी मुख्यत्वे बे भाषा छे, संस्कृत अने प्राकृत. अनुयोगद्वार-सूत्रमां कह्युं छे के "संखया पागया चेव पसत्था इसि-भासिया" षड्भाषाचंद्रिकाकार लक्ष्मीधर कहे छे के "भाषा द्विधा संस्कृता च प्राकृती चेति भेदतः" । संस्कृत भाषाना बे प्रकार छे, वैदिक संस्कृत अने लौकिक संस्कृत, अथवा प्राचीन संस्कृत अने अर्वाचीन संस्कृत. ऋग्वेदादिनी भाषा वैदिक अथवा प्राचीन संस्कृत अने भारत रामायणादिनी भाषा लौकिक संस्कृत अथवा अर्वाचीन संस्कृत छे. खासकरीने कौमार अने पाणिनीय आदि ए व्याकरणो रची भाषाने संस्कार पमाडी नियमबद्ध करी त्यारथी संस्कृतनाम प्रसिद्धिमां आव्युं होय अने वैदिकभाषाने ते विशेषण पाछलथी लगाडवामां आव्युं होय ए वधारे संभवित लागे छे अने ए रीते संस्कृत शब्दना अर्थनी बराबर उपपत्ति थाय छे. रूपक परिभाषामां कह्युं छे के—

भाषाना प्रकार.

संस्कृतभाषा

"कौमारपाणिनीयादि-संस्कृता संस्कृता मता" संस्कृत भाषा मुख्यत्वे साहित्यमांज वपराएली होवाथी तेमां विशेष फेरफार न थतां एक रूपे रही तेथी तेना अवांतर प्रकारो न

पड्या किन्तु वैदिक अने लौकिक ए ने भेदमांज अटकी रही. संस्कृत सह चारिणी बीजी भाषानुं नाम प्राकृत भाषाछे.

प्रकृतभाषा

प्राकृतशब्द 'प्रकृतिशब्दने तद्धित प्रत्यय अण् लगाडवाथी बन्यो छे. प्रकृतिशब्दनो अर्थ स्वभाव या निसर्ग थाय छे.तेथी प्राकृतशब्दनो शक्यार्थ स्वाभाविक अथवा नैसर्गिक थाय छे. शब्दार्थ प्रमाणे प्राकृत भाषानो अर्थ स्वाभाविक भाषा या नैसर्गिकभाषा थाय छे. अर्थात् जे भाषा ने काप कुप करी संस्कारित न बनावी होय किन्तु जे प्रमाणे साधारण लोकोमां बोलाती होय ते प्रमाणे जेनुं स्वरूप कायम रह्युं होय ते प्राकृतभाषा. प्राकृतशब्दनो साधारण अथवा असंस्कृत अर्थ पण कोषमां बताववामां आव्यो छे. आ उपरथी संस्कार पाम्या वगरनी साधारण लोकोनी बोलाती जे भाषा ते प्राकृत भाषा एवो फलितार्थ थाय छे. आ एक मत छे. आ मत प्रमाणे प्राकृतभाषा संस्कृतभाषा नी पुत्री नही पण माता छे अर्थात् प्राकृत भाषा संस्कृत मां थी जन्म पामी नथी पण संस्कृत भाषा (वैदिक भाषा शिवायनी अर्वाची न संस्कृत-भाषा) प्राकृत-भाषामांथी संस्कार पामी उत्पन्न थइ छे. उपर जणाव्या प्रमाणे संस्कृत नाम जो पाछल नुं होय तो वैदिक भाषा पण वेदना समय नी बोलाती भाषा होवी जोइए अने तेने 'संस्कृत ए विशेषण लगाडवा करतां प्राकृत ए विशेषण लगाडवुं वधारे उचित भासे छे, अर्थात् वेदनीभाषा ने प्राचीन संस्कृत कहेवा करतां प्राचीन प्राकृत कहीए तो वधारे बन्धबेसतुं थाय. तेथी अर्वाचीन प्राकृत नी माता पण होइ शके. आ बाबतमां युष्मत् शब्दना प्रथमा बहुवचननां रूपो आपणुं वधारे

ध्यान खेंचे छे. वैदिक युष्मे अने अस्मे रूपो प्राकृतनां तुम्हे अने अम्हे नी साथे गाढ सम्बन्ध दर्शावे छे ज्यारे संस्कृतनां यूयं अने वयं तद्दन अलग पडी जाय छे.

आ मतनी स्हामे एक बीजो मत उपस्थित थाय छे ते एम कहे छे के'' प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवं तत आगतं वा प्राकृतम्'' प्रकृति एटले संस्कृत, तेमां उत्पन्न थएल के तेमांथी उतरी आवेल ते प्राकृत. अर्थात् संस्कृत भाषामांज थोडो थोडो विकार थतां प्राकृत भाषा बनी आवो अर्थ करी प्राकृत भाषाने संस्कृतभाषानी पुत्री तरी के मानी तेना प्राकृतिक के नैसर्गिक अर्थने उडावी दे छे म्होटे भागे ब्राह्मण पंडित समाजमां आ मत वधारे प्रचलित छे; तेनुं कारण ते समाजनुं संस्कृत भाषा प्रत्येनुं मान छे. हिंदुधर्मनां घणाखरां पुस्तको संस्कृत भाषामां ज होवाथी तेमनी संस्कृत भाषा तरफ वधारे मानबुद्धि रहे ते स्वाभाविक छे।

मतान्तर

पण सवाल ए थाय छे के हेमचन्द्राचार्ये आ मतनो केम आदर कर्यो? तेणे पोताना व्याकरणमां प्राकृत भाषाने संस्कृत भाषामां थी उत्पन्न थएली मानी तेनुं शुं कारण? आ प्रश्ननो जवाब एम आपी शकाय के हेमचन्द्रना समय पहेलां केटलाक वखतथी जमानानुं वलण संस्कृत-भाषा तरफ वली चुक्युं हतुं. तेनी असर जैनसमाज उपर पण पुरे पुरी थइ हती. अत एव जैन आचार्योए सूत्र उपरनी टीकाओ बौद्धना धर्मघोषनी माफक मूल आगमनी भाषामां न लखतां संस्कृत भाषामां लखी. सूत्रो उपर भाष्य अने निर्युक्ति रचाइ त्यां सुधी प्राकृत भाषानो आदर रह्यो पण चूर्णि अने टीकाना समयमां वलण बदलायुं. हेमचंद्रना

समयमां अने त्यार पछी आजसुधी पण हजी ते वलणो केटलेक अंशे चालु छे. ए असरथीज हेमचंद्रे पोतानां सिद्धहेम व्याकरणमां मुख्य स्थान संस्कृत ने आप्युं. सात अध्यायो संस्कृत भाषा माटे अने एक ज अध्याय प्राकृत भाषा माटे रोकवामां आव्यो. जो हेमचंद्राचार्यने संस्कृत-भाषा जेटलुं प्राकृत भाषा माटे मान के वलण होत तो सामान्य प्राकृत अथवा आर्ष-प्राकृत नुं संस्कृतानुगत नहीं पण स्वतंत्र व्याकरण रच्या विना रहेत नहीं. संस्कृतनां पठन पाठने लोकोनुं वलण संस्कृत तरफ वाळ्युं हतुं. आनी असर एटले सुधी थइ के प्रकृतिशब्दनो अर्थ संस्कृत भाषा कोइ पण कोषमां न होवा छतां उक्त महाशयोए प्रकृति शब्दनो अर्थ संस्कृत स्वीकार्यो. एटलुं तो कहेवुं जोइए के प्रकृति शब्दना शक्यार्थ स्वभाव निसर्ग वगेरेने कोराणे मुकी लाक्षणिक अर्थ कल्पवो ए प्राकृत भाषा ने अन्याय आपवा बराबर छे. आवा करतां प्रकृति शब्द ने बदले संस्कृत भाषा वाची संस्कृत शब्द ज राख्यो होत अने तेने तद्धित प्रत्यय लगाडी 'संस्कृते भवं तत आगतं वा सांस्कृतं' एम संस्कृत शब्द बीजी भाषा माटे वापर्यो होत तो शुं खोटुं हतुं? प्रचलित प्राकृत शब्द ने नवीन संस्कृत शब्दमांथी बाद न करी शकाय तो प्रचलित प्रकृति शब्दना अर्थने नवीन कल्पित अर्थमांथी केम बाद करी शकाय ए विचार संस्कृत तरफना पक्षपातने दूर करी न्याय-बुद्धिथी करीए तोज प्राकृतशब्दने खरो इन्साफ आपी शकाय. प्राकृतभाषा संस्कृतमां थी उत्पन्न थएली छे एवो अभिप्राय बंधायानुं एक कारण ए छे के प्राकृत व्याकरण रचनाराओए

रहेलाइनी खातर संस्कृतशब्दो लइने तेनां प्राकृतरूपो बताव्या तेमां जे फेरफार जणायो तेज मात्र नियमोथी सिद्ध कर्या. बाकीने माटे संस्कृतवत्— कही संस्कृतनी भलामण आपी एटले प्राकृत व्याकरणने सदाय संस्कृत व्याकरणने आधीन रहेवुं पड्युं अने तेथी प्राकृत भाषा संस्कृतजन्य छे ए अभिप्राय वधारेने वधारे मजबूत थतो गयो. प्राकृत पाठमालामां पण तेज पद्धतिनुं अनुसरण कर्युं छे, ते एटलामाटे के भाषानुं ज्ञान मेलववा उपरांत व्याकरणोनी तुलना करवामां कोइने गुंचवण उभी न थाय. अर्द्धमागधी–आर्षभाषानुं व्याकरण के जे नवीन तैयार करवामां आव्युं छे, तेमां उक्त पद्धतिनुं अनुसरण न करतां प्राकृतभाषानी स्वतंत्रता बताववाने स्वतंत्रपणे प्राकृत रूपोनी सिद्धि करीछे।

लोकभाषा–प्राकृत भाषाने साहित्यमां स्थान मलवानो

प्राकृतभाषा ना प्रकार

युग महावीर स्वामी अने गौतम बुद्धना समयथी शरु थाय छे. बन्ने नी जन्मभूमि मगध देश अने मातृभाषा मागधी हती. परन्तु उपदेश भाषा महावीर स्वामिनी अर्द्धमागधी अने गौतमबुद्धनी पाली हती. अर्द्धमागधी मगध अने शूरसेन देशनी सरहद उपर ते वखते जे भाषा बोलाती तेनुं नाम अर्द्धमागधी, मगधदेशनो अर्द्धभाग ते भाषाए रोक्यो हतो माटे तेनुं नाम अर्द्धमागधी पड्युं होय ए ऐतिहासिक दृष्टिए ठीक लागे छे. केटलाक एवो अर्थ करे छे के अर्द्ध शब्दो मागधी भाषाना अने अर्द्ध शब्दो बीजी भाषाना मल्या तेथी तेनुं नाम अर्द्धमागधी, परन्तु जैन साहित्य तपासनां ते विभाग प्रमाणे शब्दो मली शकतां नथी. अलबत

आ हिसाब अकारान्तशब्दोना प्रथमाविभक्तिना एकवचन-मांज मात्र मेलववा बेसीए तो मली शके; केमके प्रथमाना एकवचनमां महाराष्ट्रीय अने शौरसेनी भाषामां ओकार थाय छे अने मागधी भाषामां एकार थाय छे.

जैन आगममां ओकार वाला प्रयोगो अने एकार वाला प्रयोगो लगभग अर्धा अर्ध होवानो संभव छे ते उपरथी प्राकृत नामनी घटना करीए तो थइ शके छे. "शौरसेन्या अदूरत्वादियमेवार्द्धमागधी" "राक्षसी श्रेष्ठिचेटानुकर्त्यादेरर्द्धमागधी" ए भरते कहेली अर्द्धमागधी ते मात्रनाटकमां ज वपराएली अर्द्धमागधी प्राकृत अर्द्धमागधी थी तद्दन भिन्न छे. ते तेना आ एक प्रयोग उपरथी समजी शकाशे. "अज्जवि णो शामिणीए हिलिम्बादेवीए पुत्त शद्दक अशोएण उवशमदि"

प्राकृत भाषानो बीजो विभाग पाली नामथी प्रसिद्धिमां

पाली भाषा

आव्यो. पालीशब्दनो मूल अर्थ पंक्ति श्रेणि इत्यादि थाय छे. बौद्ध साहित्यमां धर्मशास्त्रना कोई पण वचनो उद्धृत करती वखते के समजावती वखते आचार्यो ते वचन पंक्तिने माटे पाली शब्दनो प्रयोग करता हता, तेमज मूलग्रंथना अर्थमां पण ते शब्दनो उपयोग करता तेथी पाछलना समयमां ते धर्मशास्त्रोनी भाषा पाली नामे ओलखावा लागी. आनुं बीजुं नाम मागधी पण छे. ते नाम देशना नाम उपरथी पड्युं छे. एथी स्पष्ट थाय छे के ते भाषा मगधदेशमां बोलाती हती. नाटकोमां मागधी समान जे प्राकृतभाषा आवे छे. ते अर्द्धमागधी अने पालीथी तद्दन भिन्न छे तेमां र नो ल अने स नो श

थाय. छे जे उपरनी. ने भाषा मां नथी थतुं—जेम संस्कृत निर्झर-शब्द पाली अने अर्द्धमागधीमां निज्झर अने नाटकनी मागधीमां निज्झल थाय छे. आ भेदने लइने कोइ २ जैन साहित्यनी भाषा ने जैन मागधी, बौद्ध-साहित्यनी भाषा ने पाली मागधी अने नाटकनी मागधीने प्राकृत मागधी पण कहे छे. प्राकृत भाषाना आ साहित्य-प्रवेशयुगने मागधी युग कहीए तो ते खोटुं नथी कारण के मगधदेशमांज तेने प्राथमिक साहित्य स्थान प्राप्त थयुं छे. उपरनी त्रे प्राचीन भाषामांनी अर्द्धमागधी भाषानुं कोई खास व्याकरण उपलब्ध नथी. जो के चंडनुं प्राकृत लक्षण थोडेक अंशे ते भाषानो स्पर्श करे छे अने हेमचंद्रे कोई कोई स्थले पोताना प्राकृत व्याकरणमां आर्षभाषा तरीके तेनी नोंध लीधी छे. पण पूर्ण व्याकरण एके नथी. पाली भाषा ना त्रण व्याकरण मुख्य छे कच्चायन, मोग्गलायन अने सद्दनीति. कच्चायनने आधारे रूपसिद्धि, महानिरुत्ति, चूल-निरुत्ति, निरुत्तिपिटक तथा बालावतार वगेरे व्याकरणो रचायां छे. मोग्गलायनने आधारे पयोगसिद्धि, मोग्गल्लानवुत्ति, सुसद्दसिद्धि तथा पदसाधनी वगेरे ग्रंथो रचाया छे अने सद्दनीतिने आधारे एक चुल्लसद्दनीति नामे ग्रंथ रचायो छे. आ बधामां कच्चायन प्राचीन छे. तथापि तेना करतां रूप-सिद्धि मोग्गल्लानवुत्ति, पदसाधनी तथा पयोगसिद्धि वधारे उपयोगी छे. सद्दनीति ए पूर्वोक्त बधा करतां श्रेष्ठ छे. रूप-सिद्धि व्याकरण म्होटुं नही तेम न्हानुं नही छतां बधा विषयोनो तेमां समावेश करवामां आव्यो छे एटले विशेष उपयोगी छे एम कहेवाय छे. के कच्चायन बुद्धना समकालीन

हता अने ते कच्चायन थेरे कच्चायन व्याकरण रच्युं. तेना उप-र घणी टीकाओ अनुटीकाओ थई छे. रूपसिद्धि अने बालावतार बन्ने कच्चायनना सूत्रो लईने रचाया छे. बालावतार सिंहलमां साधारण रीते प्रचलित छे.

पाली भाषामां बौद्धना हीनयानपंथनां महावंश जातको वगेरे धर्म पुस्तको उपरांत अशोकना शिलालेखो लखाया छे. हिमालय थी विंध्य अने सिंधुना किनाराथी गंगाना मुखसुधी अशोकना समयमां प्राये आ भाषा बोलाती हती एम शिलालेखो उपरथी साबित थाय छे. इ. स. पूर्व त्रीजीशताब्दीथी मांडीने इ. स. नी चोथी शताब्दीसुधीना शिलालेखो घणे भागे उपर कहेल भाषामां छे।

शिलालेखो

अर्द्धमागधी अने पाली साहित्य रचना पछी प्राकृतना मध्य युग नो प्रारम्भ थाय छे. आ मध्य युगमां महाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी, पैशाची, अपभ्रंश वगेरे भाषाओ प्रादुर्भाव पामे छे. जे भाषा बोलाती न होय किन्तु केवल साहित्यमां वपराती होय ते भाषा मांथी बीजी भाषा न जन्मे अर्थात् तेनुं परिवर्त्तन न थतां एक ने एक रूप रहे एटले अवान्तर प्रकारो न थाय तेमज जे भाषा बोलाती होय पण साहित्य-बद्ध थई न होय तेमां परिवर्तन थाय छतां अवान्तर प्रकारो न थाय कारण के परिवर्त्तन वखते पूर्व रूपो नष्ट थयां होय छे एटले जूनी भाषा नो लोप अने नवी भाषा नी उत्पत्ति थाय छे. जे भाषा बोलाती होय अने साहित्यबद्ध थई होय तेना अवान्तर प्रकारो संभवे. कालना प्रवाह साथे बोलाती भाषानुं कालभेदे अने देशभेदे परिवर्त्तन थतां तेमां नवीनता आवे छे

मध्यप्राकृतयुग

अने साहित्यमां एने ए रूपे रहे छे. वधारे फेरफार थतां बोलाती भाषा साहित्यनी भाषाथी जुदी पडे छे. आ नियम प्रमाणे बोलाती प्राकृत भाषा साहित्य निबद्ध थया पछी तेना प्रकारो पडवा मांड्यां अने जुदां जुदां नामो धारण करवा मांड्यां.

महाराष्ट्री

मध्यमयुगनी प्राकृतभाषामां महाराष्ट्री प्राकृत मुख्य छे. शौरसेनी वगेरे बीजी प्राकृत भाषा करतां आ वधारे प्रसिद्धिमां आवी, ते एटले सुधी के बीजी भाषाओ ज्यारे पोत पोताना विशेषणोथी ओलखावां लागी। जेम शौरसेनीप्राकृत मागधीप्राकृत इत्यादि, त्यारे महाराष्ट्री प्राकृत महाराष्ट्री विशेषण विना शुद्ध प्राकृत शब्दथी ओलखावा लगी. काव्यादर्श--१-३५ मां दंडी कहे छे के "महाराष्ट्राश्रयां भाषां प्रकृष्टं प्राकृतंविदुः" आजसुधी पण प्राकृत भाषा तरीके महाराष्ट्री प्राकृतनोज व्यवहार थाय छे प्राकृत व्याकरणकारोए मुख्यपणे महाराष्ट्री प्राकृत भाषानाज नियमो रच्या छे. शौरसेनी आदि बीजी भाषाओना सामान्य नियमो माटे महाराष्ट्री प्राकृत भाषानी भलामण आपी छे. बीजी भाषाओना मात्र विशेष नियमोज बताव्या छे.महाराष्ट्री प्राकृतनीज सामान्य भाषा तरीके गणना करी छे. महाराष्ट्री भाषा पण अर्द्धमागधी अने पाली भाषानी पेठे बोलाती अने साहित्यनी भाषा हती. मध्ययुगमां गोदावरीना विशाल प्रदेश उपर महाराष्ट्र देशमां ते भाषा बोलाती हती. अकारान्त नामने छेडे प्रथमा एकवचनमां एकार नही पण ओकारज आवे ए महाराष्ट्रीनुं खास लक्षण छे अने तेथीज ते अर्द्धमागधीथी जुदी पडे छे. बे स्वर वचे

आवता असंयुक्तव्यंजनोनो लोप करवामां बीजी बधी भाषाओ करतां आ भाषा आगल वधेली छे. अर्द्धमागधी अने पालीमां नकारनो णकार विकल्पे थतो ते महाराष्ट्रीमां नित्य थयो एटले नकारनो सर्वथा अभाव थयो. अर्वाचीन मराठी भाषा आ भाषा उपर थी उतरी होय एम संभवे छे. महाराष्ट्री प्राकृतमां रचायलां काव्यो महाराष्ट्रीनी बहार पण घणा वखणाता हता. सेतुबंधकाव्य गउडवहोकाव्य वगेरे महाराष्ट्री प्राकृतमां रचाएलां छे. कालिदास आदिना संस्कृत नाटकोमां पण महाराष्ट्रीनो उपयोग थयो छे. ते नाटकोमां स्त्रीपात्रो शौरसेनी प्राकृत बोले छे छतां तेमनां गीतो महाराष्ट्री प्राकृतमां होय छे.

जैनमहाराष्ट्री

महाराष्ट्री प्राकृतनो ब्राह्मण ग्रन्थकारो करतां जैनश्वेताम्बर ग्रन्थकारोए वधारे आश्रय लीधो छे. सुरसुन्दरीचरिय, पउमचरिय, कुमारपालचरिय, कुमारपालप्रबन्ध, समराइच्चकहा, सुपासनाहचरिय वगेरे अनेक ग्रन्थो महाराष्ट्री प्राकृतमां रचाया छे, पण आ ग्रंन्थोनी भाषामां जैन आगमनी भाषानी छाया पड्या विना रही नथी—एटले के अर्द्धमागधी नी माफक नकारनो क्वचित् णकार अने क्वचित् नकारनो नकारज राख्यो छे के जे महाराष्ट्री प्राकृत ने संमत नथी, उद्वृत्त अकारनी यकार श्रुति पण महाराष्ट्री प्राकृतमां नथी छतां उपरना जैन ग्रंथोमां यकारश्रुति छे. आ बाबत वररुचि अने हेमचन्द्रना व्याकरणनी तुलनामां स्पष्ट पणे दर्शावी छे. खास करीने आ बे बाबतमां जैनमहाराष्ट्रीप्राकृत महाराष्ट्रीप्राकृतथी जुदी पडे छे.

" शूरसेनोद्भवा भाषा शौरसेनीति गीयते "

शौरसेनी — मध्ययुगनी महाराष्ट्री समकालीन बीजी प्राकृत भाषा शौरसेनीना नामथी प्रसिद्ध थइ हती. मथुरानी आसपासना प्रदेशो जे शूरसेन नामथी ओलखाता,ते प्रदेशमां आ भाषा बोलाती. शूरसेनप्रदेशना नाम उपरथी भाषानुं नाम शौरसेनी पड्युं. दिगम्बरीओनुं धर्मसाहित्य शौरसेनी भाषामां रचायुं छे. कालीदासना संस्कृतनाटकोमां विदूषको तथा स्त्रीपात्रो आ भाषा बोले छे. राजशेखरकविनी कर्पूरमंजरी नाटिकामां तो खुद राजा पण आ प्राकृत बोले छे.

" मगधोत्पन्नभाषां तां मागधीं संप्रचक्षते "

मागधी — पूर्व तरफना प्रदेशोनी भाषा मागधी प्राकृत हती. पूर्वोक्त पाली अने अर्द्धमागधीथी आ मागधी भिन्न छे. आ मागधी कोई धर्मसाहित्यमां निबद्ध थएली नही पण संस्कृत नाटकना हलका पात्रोमां बोलाती भाषा छे. र नो ल, स नो श अने प्रथमाना एक वचनमां अकारान्त नामने छेडे आवतो एकार आ भाषानां खास लक्षणो छे. मागधी प्राकृतमां दकार कायम रहे छे अने ज ने स्थाने य थाय छे. मृच्छकटिकमां शकार जे भाषा बोले छे ते शुद्ध मागधी छे. मागधीनुं मूल शौरसेनी छे. एटले तेमां शौरसेनी शब्दो तो आवे छे, परन्तु ते उपरांत केटलेक स्थले महाराष्ट्री शब्दो पण आवे छे. अभिज्ञानशकुंतलामां रक्षिपुरुष तथा धीवरनी भाषा मागधी छे. वेणीसंहार तथा उदात्तराघवमांना राक्षसनी भाषा पण मागधी छे. मुद्राराक्षस वगेरेमां पण एनो उपयोग थयो छे.

' पिशाचदेशनियतं पैशाचीद्वितयं भवेत्' मध्ययुगनी चोथी भाषा पैशाची छे. पाण्ड्य आदि देशो पिशाचना नामथी प्रसिद्ध छे. ते आ प्रमाणे—

पैशाची

पाण्ड्यकेकयवाह्लीक-सिंहनेपालकुन्तलाः ।
सुदेष्णचोलगान्धार-हैवकन्नोजनास्तथा ॥
एते पिशाचदेशाः स्यु-स्तद्देश्यस्तद्गुणो भवेत् ॥

आ देशोमां बोलाती भाषानी पैशाची संज्ञा छे. आ भाषामां पण साहित्य रचना थई हती. गुणाढ्यकविनी बृहत्कथा पैशाची भाषामां रचाइ हती. बृहत्कथा आजे लुप्त थइ छे तथापि तेनो सार लई क्षेमेन्द्रकविए बृहत्कथामंजरी रूपे तेनो संस्कृत अनुवाद कर्यो,ते विद्यमान छे.ते पण संक्षिप्त होवाथी सोमदेवभट्टे तेनो बीजीवार अनुवाद करी विस्तारथी कथासरित्सागरनामा ग्रंथनी रचना करी जे हाल मोजुद छे. महाराष्ट्रीमां नकारनो सर्वत्र णकार थइ गयो हतो तेथी विपरीत णकारनो नकार आ भाषामां पुनरुज्जीवित थयो. गुजराती भाषामां ल ने स्थाने ळ वपराय छे ते पैशाचीमांथी आव्यो होय एम जणाय छे.

चूलिका पैशाची

मध्ययुगनी पांचमी भाषा चूलिका पैशाची छे. वर्गना त्रीजा अक्षरने स्थाने प्रथमाक्षर अने चोथा अक्षरने स्थाने द्वितीयाक्षर बनाववामां आ भाषा पैशाचीथी जुदी पडे छे. बीजी बधी बाबतमां पैशाचीने मलती आवे छे.एटलामाटे वररुचि आदि केटलाक व्याकरणकारोए आने पैशाचीमां अन्तर्गत करी तेने जुदी गणत्रीमां नथी लीधी अने तेना खास नियमो जुदा दर्शाव्या नथी. आभाषानुं साहित्य पण हाल उपलब्ध जणातुं नथी.

आभीरादिगिरः काव्येष्वपभ्रंशा इति स्मृताः ।
शास्त्रेषु संस्कृतादन्यदपभ्रंशतयोदितमिति ॥ दण्डी .

मध्ययुगनी छठी, भाषा अपभ्रंश छे. संस्कृत नाटकमां आहिर आदिनी भाषा अपभ्रंश छे. दंडिना मत प्रमाणे संस्कृत शिवायनी बधी भाषाओ अपभ्रंश छे. पण ते व्याजबी नथी. संस्कृतनी माफक बीजी भाषाओमां पण साहित्यरचना थइ छे. व्याकरणो पण थयां छे. खास जुदां २ नामो धारण कर्यां छे. ते बधी भाषाओने अपभ्रंश केम कही शकाय ? अपभ्रंश भाषा ए प्राकृत भाषा नो अवान्तर विभाग छे. एटलुं खरुं के बोलाती भाषामां विकार थवानो वधारे संभव छे. तेथी ते साहित्य शृंखलाथी जुदी पडीने अपभ्रंश नाम धारण करी जुदी भाषा तरीके ओलखाइ होय अने तेथी अर्वाचीनयुगनी अपभ्रंशना अनेक भेद थया होय ते संभवित छे. तथापि मध्यमयुगनी अपभ्रंश भाषा के जेने व्याकरणकारो ए छठी भाषा तरीके नियमबद्ध करेली छे. ते एकज प्रकारनी छे. तेमां साहित्यरचना पण थई छे. मार्कंडेयना व्याकरणमां नागर, व्राचड अने उपनागर एम त्रण भेद अपभ्रंशना जणाव्या छे. ते पण मुख्य त्रण भेद; अवांतरभेदतो जेटला देश तेटला छे. पण आ भेदो अर्वाचीन युगनी अपभ्रंशना होय एम जणाय छे.

अपभ्रंशभाषा

प्राकृत व्याकरणो.

उपर कहेल मध्यम युगनी छ भाषाओ उपर अनेक व्याकरणो थयां छे. तेमां सौथी प्राचीन चंडनुं प्राकृतलक्षण नामनुं व्याकरण छे.

नुं प्राकृत लक्षण

ते खास करीने प्राचीन युगनी सामान्य प्राकृतभाषानुं व्याकरण छे. प्राकृत भाषाना अवान्तर भेदो पड्या नहोता ते वखतनुं ते व्याकरण होवुं जोइए. ते अमिश्रित रह्युं नथी.पाछलना सुधारकोए ते व्याकरणने महाराष्ट्रीप्राकृतनुं व्याकरण बनाववाने केटलोक उमेरो कर्यो छे. डो. होर्नले चंडना मूलसूत्रो अने पाछलथी उमेरायला सूत्रोनुं केटलीक जुनी प्रतो मेलवी, मुकाबलो करी पृथक्करण कर्युं छे. इ० सन् १८८० मां कलकत्तामां छपायेल पुस्तकमां बंनेनुं पृथक्करण दर्शाव्युं छे.

चंडना व्याकरण पछी मध्ययुगनी प्राकृत भाषाओ उपर सौथी पहेलुं वररुचि नुं प्राकृत प्रकाश नामे व्याकरण छे. तेमां वररुचिए सूत्रो रच्यां छे अने भामहे तेना उपर वृत्ति बनावी छे. वररुचिना प्राकृत प्रकाशमां चार भाषाओज आवे छे,उपर कहेल छ भाषाओ पैकी चूलिका पैशाची अने अपभ्रंश ए बे भाषा तेमां नथी गणावी.ते उपरथी एम जणाय छे के तेना समयमां पैशाचीथी चूलिका पैशाची जुदी नहि पडी होय अने अपभ्रंश ने स्वतंत्र भाषा तरीके गणवामां नही आवी होय.

वररुचिनो प्राकृत प्रकाश

त्यार पछी हेमचंद्राचार्यनुं सिद्धहेम व्याकरण उपस्थित थाय छे. तेमां सात अध्यायोमां संस्कृत व्याकरण अने आठमा अध्यायना चार पादोमां प्राकृत भाषानुं व्याकरण छे. हेमचंद्रे उपर कहेल छए भाषाओनो समावेश कर्यो छे. हेमचंद्रनो समय बारमी शताब्दी छे. ते पहेलां छए भाषाओ प्रगट थई चुकी हती

हेमचंद्रनुं सिद्धहेम

एम जणाय छे. हेमचंद्रे सूत्रो अने वृत्ति बन्ने पोतेज बनाव्या छे. जैनोने तो ते माननीय छे पण जैनेतरोए पण तेनो सत्कार कर्यो छे. वररुचिना व्याकरणमांनी प्राकृत भाषा ज्यारे शुद्ध महाराष्ट्री प्राकृत छे, त्यारे हेमचंद्रनी प्राकृत भाषा कइंक जैन आगमनी छाया मिश्रित थवाथी जैन महाराष्ट्री प्राकृत कही शकाय.

त्रिविक्रमनुं प्रा० व्या०

हेमचंद्राचार्य पछी त्रिविक्रमनुं प्राकृत व्याकरण आवे छे. त्रिविक्रम दिगंबर जैन छे. तेणे सूत्रो अने तेनी वृत्ति बन्ने बनाव्या छे. षड्भाषाचंद्रिकाकार लक्ष्मीधर कहे छे के त्रिविक्रमे वृत्तिज बनावी छे, सूत्रो वाल्मिकीनां छे. आना माटे बे मत छे. केटलाक कहे छे के सूत्रो पण त्रिविक्रमनां छे अने केटलांक वाल्मिकीनां कहे छे. प्रो० कमलाशंकर त्रिवेदी कहे छे के आ वाल्मिकी रामायणना कर्ता नही पण ए बीजा छे. आ व्याकरणमां पण पूर्वोक्त छए भाषानो समावेश करवामां आव्यो छे, भाषाओनो क्रम पण हेमचंद्रनी माफक ज छे. त्रिविक्रमे सूत्रोनो अनुक्रम पाणिनीयनी अष्टाध्यायी उपर काशिकावृत्तिनी माफक जालवी राख्यो छे. त्रिविक्रमनो समय बारमी अने पंदरमी शताब्दी वच्चेनो छे, केमके हेमचंद्रना ग्रन्थनो त्रिविक्रमे उल्लेख कर्यो छे. अने त्रिविक्रमना ग्रंथनो कुमारस्वामिए रत्नायणमां उल्लेख कर्यो छे, हेमचंद्रनो समय बारमी सदी अने कुमारस्वामीनो समय सोलमी सदी छे ए बेनी वच्चे त्रिविक्रनो समय छे.

षड्भाषा चंद्रिका

जे सूत्रो पर त्रिविक्रमे वृत्ति करी छे तेज सूत्रो उपर लक्ष्मीधरे वृत्ति करी छे तेनुं नाम छे षड्भाषाचंद्रिका. लक्ष्मीधरे सूत्रोनो अनुक्रम

जालव्यो नथी पण भट्टोजी-दीक्षिते सिद्धांत-कौमुदीमां जेम पाणिनीयना सूत्रोनो क्रम फेरव्यो छे तेम लक्ष्मीधरे पण फेरव्यो छे. आ वृत्ति घणी विस्तृत छे. नामनां रूपो अने धातुनां रूपो हेमचंद्र करतां घणा वधारे आप्यां छे. देशी शब्दोनो पण तेमां समावेश कर्यो छे. लक्ष्मीधरनो समय त्रिविक्रम पछीनो छे, कारणके षड्भाषाचंद्रिकामां लक्ष्मीधरे त्रिविक्रमनो उल्लेख कर्यो छे.

प्राकृत रूपावतार

लक्ष्मीधरनी माफक सिंहराजे उक्त सूत्रो उपर वृत्ति रची छे. तेनुं नाम प्राकृत रूपावतार छे. सूत्रोनो अनुक्रम षड्भाषाचंद्रिकानी माफक छे. षड्भाषाचंद्रिका जेवी विस्तारवाली आ वृत्ति नथी पण संक्षिप्त छे, तथापि तेमां रूपाख्याननी बाबतमां खास न्यूनता रही जती नथी. सिंहराजे जरूरीआत पुरतां सूत्रोनी योजना करी छे. केटलांक सूत्रो छोडी दीधां छे. इ. हल्त्श (E. Hultzsca) आ पुस्तक सन् १९०९मां कलकत्ता-एशियाटीक-सोसायटी तरफथी प्रकाशित कर्युं छे. तेमां दरेक सूत्रनी स्हामे हेमचंद्रना सूत्रनी सरखामणी करी तेना सूत्रोनां अंको पण आप्या छे. विद्यार्थीने माटे आ व्याकरण घणुं सगवडवालुं छे. आ व्याकरणमां युष्मद् अस्मद् वगेरे शब्दोनां रूपो बीजां व्याकरणो करतां घणां वधारे आप्या छे, तेमां केटलेक स्थले रूपोमां कृत्रिमता जणाइ आवे छे.

आ उपरांत अप्पय-दीक्षित रचित प्राकृत मणिदीप, हृषीकेश कृत प्रा० व्या० प्राकृतमंजरी के जे वररुचिना सूत्रो उपर पद्यमयवृत्ति छे. ते मुद्रित छे तथा केटलाएक अमुद्रित छे. प्राकृतमणिदीप अने प्राकृतमंजरी केवल महाराष्ट्री प्रा.

कृत भाषानांज व्याकरण छे. डोक्टर ओफ्रेस्टना केटेलोगस् केटेलोगोरममां षड्भाषाना नामे बीजा त्रण ग्रंथो गणाव्या छे.

१ षड्भाषा चन्द्रिका—भामह-कविकृत.

२ षड्भाषामंजरी.

३ षड्भाषासुवंतादर्श.

प्रोफेसर एस. आर. भंडारकर संस्कृत हस्तलिखित ग्रंथोनी शोधमां नीकल्या ते वखतनी बीजी मुसाफरीना हेवालमां षड्भाषा विचार नामनो ग्रंथ होवानुं जणावे छे अने तेमां संस्कृत सहित बीजी पांच भाषानो विचार छे.

लक्ष्मीधर दुर्गणाचार्यकृत षड्भाषारूपमालिका नामनुं पुस्तक होवानुं जणावे छे.

आ शिवाय शेषकृष्ण रचित प्राकृतचंद्रिका नामे पुस्तक छे तेमां अपभ्रंश शिवाय पांच भाषानो विचार कर्यो छे. छठी अपभ्रंश भाषानुं सूचन कर्युं छे. पण वधारे विचार नथी कर्यो कारण के जुदा जुदा घणा देशोनी ते भाषा छे.

आ बधां व्याकरणो करतां वधारे भाषाओनो विचार मार्कंडेयना प्राकृतसर्वस्वमां छे. तेमां एकंदर सोल भाषाओनो संग्रह छे. ते आ प्रमाणे—

तच्च भाषाविभाषाप-भ्रंशपैशाचभेदतः,
चतुर्विधं तत्र भाषा विभाषाः पञ्चधा पृथक् ।
अपभ्रंशास्त्रयस्तिस्रः पैशाच्यश्चेति षोडश ॥ १ ॥
महाराष्ट्री शौरसेनी प्राच्यावन्ती च मागधी ।
इति पञ्चविधा भाषा युक्ता न पुनरष्टधा ॥ २ ॥
शाकारी चैव चाण्डाली शाबर्याभीरिका तथा ।
टाक्कीति युक्ताः पञ्चैव विभाषा न तु षड्विधाः ॥ ३ ॥

नागरो व्राचडश्चोप- नागरश्चेति ते त्रयः ।
अपभ्रंशाः परे सूक्ष्म-भेदत्वान्न पृथङ्मताः ॥ ४ ॥
कैकेयं शौरसेनं च पाञ्चालमिति च त्रिधा ।
पैशाच्यो नागरा यस्मात्तेनाप्यन्या न लक्षिताः ॥ ५ ॥
इति षोडशधा भाषा मया प्रोक्ता प्रयत्नतः ।

परंतु आ सोळ भाषा त्रीजा अर्वाचीन युगना मिश्रण थी बने छे. प्राकृत पाठमालामां मात्र मध्यमयुगनी भाषा-ओनो विचार करवामां आव्यो छे।

पाठमालानी रचना

प्राकृत पाठमालानी रचना करवामां उपर जणावेल व्याकरणो पैकी नीचेनां व्याकरणोनी सहाय लेवामां आवी छे—

१ चंडनुं प्राकृतलक्षण. २ वररुचिकृत प्राकृतप्रकाश. ३ हेमचंद्रना सिद्धहेमनो आठमो अध्याय. ४ लक्ष्मीधरनी षड्भाषाचन्द्रिका. ५ सिंहराजनुं प्राकृतरूपावतार. खास करी ने हेमचंद्रना प्राकृत व्याकरण नुं वधारे अनुसरण कर्युं छे. जे रूप षड्भाषाचंद्रिका के प्राकृतरूपावतारनुं वधारे शुद्ध लाग्युं ते तेमांथी लीधुं छे. ज्यां २ ठेकाणे क्यां २ व्याकरणो जुदां पडे छे तेनो मुकाबलो दरेक पाठमां करी तफावत तुलनामां दर्शाव्यो छे. सरखामणीमां चंडना प्राकृत लक्षणनो पण उपयोग कर्यो छे. वररुचिना प्राकृत प्रकाशमांथी पाठमालामां कंई लेवामां आव्युं नथी पण हेमचंद्रादि करतां तेमां केटली न्यूनता छे अने तेना करतां हेमचंद्रादिमां केटलो वधारो थयो छे तेनी मात्र सरखामणी करी छे. पाठमालामां भाषाओनो क्रम व्याकरणमां दर्शावेल भाषाओना क्रम प्रमाणेज राखवामां आव्यो छे.

छ भाषामां मुख्य भाषा महाराष्ट्री प्राकृत, ते पण जैनमहाराष्ट्री प्राकृत ने अनुसार रूपो आपवामां आव्यां छे. पाठमालामां प्रथम प्राकृत भाषाना सामान्य नियमो उदाहरण सहित योजी सामान्य नियमावलि आपवामां आवी छे. त्यार पछी २१ पाठोमां प्राकृत नाम अने धातुनां रूपाख्यानोनी सिद्धि दर्शावी छे.

पाठोना क्रमनी योजना

ते पण विद्यार्थिनुं मगज कंटाळी न जाय अने धीमे २ कठण प्रयोगो सरल थता स्हेलाइथी समजी शकाय तेवो उद्देश ध्यानमां राखी एक पछी एक एम च्हडते क्रमे योजवामां आव्या छे. एक पाठ नामनो अने एक पाठ धातुनो एम वाराफरती नाम अने धातुनो विचार करवामां आव्यो छे. जेमके पहेला बोधपाठमां अकारान्त तथा आकारान्त पुलिंग नामो; बोधपाठ ३ जा मां इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त तथा ऊकारान्त पुल्लिगनां नामो, बोधपाठ पांचमामां अकारान्त, इकारान्त तथा उकारान्त नपुंसकलिंगनां नामो; बोधपाठ ७ मा मां आकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त, ऊकारान्त स्त्रीलिंग नामो; बोधपाठ ९ मा मां ऋकारान्त त्रणे लिंगनां नामो;बोधपाठ ११ मा मां अन्नन्त त्रणे लिंगनां नामो; बोधपाठ १३ मामां अकारान्त सर्वनामो; बोधपाठ १५ मामां एतद्, इदम् तथा अदस् सर्वनामो; बोधपाठ १७ मामां संख्यावाचक शब्दो;बोधपाठ १९ मामां युष्मद् तथा अस्मद् सर्वनामोनां रूपो अने बोधपाठ २१ मामां लिंगपरिवर्त्तन अने अव्ययो दर्शाववामां आव्यां छे. बोधपाठ बीजामां अकारान्त धातुओनो वर्तमानकाल;बोध-

पाठ ४ थामां अकारान्त शिवाय स्वरान्त धातुओनो वर्तमानकाल; बोधपाठ ६ ठामां प्रेरकभेद तथा उपसर्गो ;बोधपाठ ८ मामां आज्ञार्थ तथा विध्यर्थ काल; बोधपाठ १० मामां केटलांक कृदन्तो; बोधपाठ १२ मामां भावकर्म;बोधपाठ १४ मामां भूतकाल तथा कर्मणि भूतकृदंत; बोधपाठ १६ मामां भविष्यकाल; बोधपाठ १८ मामां सर्वकालना साधारण प्रत्ययो; बोधपाठ २० मामां तद्धित अने बोधपाठ २२ मामां कारकसमासादि अवशिष्टविधिनो विचार दर्शाववामां आव्यो छे. प्राकृत भाषामां देश्यशब्दोनो पण समावेश थाय छे तेथी केटलाएक बोधपाठोमां देश्यशब्दो अने देश्य क्रियापदो बतावबामां आव्या छे. आ बधा बोधपाठोथी मलेलुं ज्ञान अपूर्ण रही न जाय ए हेतुथी २२ मा पाठमां एक गद्यकथा योजवामां आवी छे. के जेना वांचनथी शीखेला नियमो ताजा थई बरावर उपस्थित रहे. त्यारबाद विशेष नियम सिद्ध प्राकृत नामना विशेष आदेशो आप्या छे. त्यारपछी केटलाएक धातु ने विशेष आदेशो थाय छे. ते दर्शाव्या छे. आंहिसुधीमां प्राकृत भाषाना नियमो समाप्त थाय छे. त्यारपछी परिशिष्ट तरीके बीजी पांच भाषाओना छ पाठो गोठव्या छे. तेनां पहेला पाठमां शौरसेनी भाषाना खास नियमो उदाहरण सहित दर्शाव्या छे. तेमज बोधपाठ २ जामां मागधी भाषा,बोधपाठ ३ जामां पैशाची अने चूलिका पैशाची, बोधपाठ-४-५-६ मां अपभ्रंश भाषाना खास नियमो बताव्या छे. उक्त छ पाठोमां नवीन वाक्यो ने बदले कुमारपाल- चरियमांनी ते ते भाषा ने लगती गाथाओ लई योजवामां आवी छे. ।

एकंदर २८ बोधपाठो छए भाषाना छे. दरेक बोधपाठ

शब्दकोष

मां आवी गयेला शब्दोनो तथा गाथा अने कथा मां आवेला कठिण शब्दोनो समावेश शब्दकोषमां करवामां आव्यो छे. तेनी साथे अव्ययो तथा धातुओनो पण संग्रह करवामां आव्यो छे. कोई २ ठेकाणे आगला बोधपाठमां आवी गयेल शब्दोनुं विद्यार्थिने विस्मरण थवानो संभव होवाथी वाक्यरचनामां मुश्केली थाय अने शब्द शोधवामां कालक्षेप थाय-ते न थवा पामे एटला माटे ते शब्दो छेवटना शब्दकोषमां गोठववामां आव्या छे. आथी विद्यार्थिने जल्दी शब्दार्थनी उपस्थिति थता ते झडपथी वाक्ययोजना करी शके

प्रथम २० पाठमां विद्यार्थिने प्राकृत भाषानो गुजराती

वाक्य रचना

अनुवाद अने गुजराती भाषानो प्राकृत अनुवाद करतां आवडे एटला माटे बंने भाषानां वाक्यो नवां तैयार करी योज्यां छे ते ते बोधपाठमां आवेला नियमने अनुसरीनेज वाक्य रचना करवानी होवाथी संपूर्ण स्वतंत्रताने अभावे साहित्य ग्रंथ जेवी सर्वांगसुंदरता वाक्य रचनामां नहीं आवी शकी होय एटलुंज नही. पण कोई ठेकाणे वाक्योमां कृत्रिमता पण कदाच प्रतीत थशे, पण तेना माटे अन्य उपाय न होवाथी ते चलावी लीधा विना छुटको नथी. पाछलना छ बोधपाठोमां तो हेमचंद्रना कुमारपाल चरित्रमांथी तैयार पद्यो लेवामां आव्या छे अने ते स्वतंत्रपणे रचाएलां छे एटले तेमां उपरनो सवाल उपस्थित थतो ज नथी.

दरेक बोधपाठमां आपवामां आवेलां वाक्यो बनी

प्रा० गु० अनुवाद

शके तेटलां सरल बनाव्यां छे छतां शरुआतना विद्यार्थिने कदाच कठिण लागे के न समजाय तेथी तेनी सरलता माटे द्रेक पाठनां प्राकृत वाक्योनो गुजराती अनुवाद अने गुजराती वाक्योनो प्राकृत अनुवाद करी आपवामां आव्यो छे अने ते पाठमां न योजतां अलायदुं पुस्तकने छेडे राख्युं छे. ते एटलामाटे के विद्यार्थी पोतानी बुद्धिथी बनी शके तेटलो अनुवाद करी ले अने ते आपेला अनुवाद साथे सरखावी ले. जे भाग न समजाय तेज तेमां जोइने नक्की करी ले.आ स्थले विद्यार्थिने एटली सूचना आपवी योग्य धारीए छीए के वाक्योनुं भाषांतर करती वखते एकदम पुस्तकमां आपेल भाषांतर तरफ नजर न दोडावतां पोतानी जाते भाषांतर करीने पछीज आपेला भाषांतर साथे सरखामणी करी शुद्ध अशुद्ध तपासी लेवुं.

उपसंहार

आ पाठमाला आजथी चौद वर्ष पहेलां प्राकृतमार्गोपदेशिका रूपे कच्छ मांडवीमां तैयार करवामां आवी हती दरम्यान पंडित बेचरदास जीवराज तरफथी एक प्राकृत मार्गोपदेशिका छपाई व्हार पडी एटले आ मार्गोपदेशिका एमने एम राखी मुकवामां आवी. त्यारपछी संवत् १९८० नी सालमां बीकानेरना शेठ अगरचंदजी भेरोदानजीने ते कोपी बतावबामां आवतां तेमणे ते पुस्तकने छए भाषानी पाठमाला तरीके योजी आपवानी प्रेरणा करी तेथी उक्त मार्गोपदेशिकाने प्राकृत- पाठमालारूपे फेरवी घणा सुधारा वधारा साथे तैयार करी छे आज काल संस्कृतभाषानी पेटे प्राकृतभाषा युनिवर्सिटीमां दाखल थई छे. पण संस्कृत

करतां तेनुं साहित्य ओछुं होवाथी ते भापाना विद्यार्थिओ पूरो लाभ लई शक्ता नथी अने तेथी जैनधर्मना प्राचीन तत्त्वोना अभ्यासथी तेओ वंचित रहे छे. आ पाठमाला लोक भाषामां एटलामाटे तैयार करी छे के संस्कृत जाणनारा तेमज न जाणनारा पण तेनो लाभ लई शके. अंते पाठकवर्गने एटली भलामण आपवी उचित छे के आ पाठमाला थी पुरातनी भाषाओनो अभ्यास करी आने लगती अर्द्धमागधी भाषामां रचाएल जैन आगमना तत्त्वोनुं दोहन करी पोताना आत्माने अने समाजने तेनो लाभ आपे. सुज्ञेषु किं बहुना?

सं. १९८१ फाल्गुनवदी-१ मुनि रत्नचन्द्र.

तुलना.

सामान्य नियमावलि—

प्राकृतप्रकाशमां स्वरथी पर अनादि असंयुक्त न ना नित्य अने आदि असंयुक्त न ना विकल्प णने बदले सर्वत्र न नो ण कर्यो छे. वररुचि प्रमाणे प्राकृतमां न ने स्थानज नथी. क्, ग्, च्, ज् इत्यादिनो लोप थतां शेष (अवशिष्ट) रहेता अवर्णनो अवर्णथी पर होयतो लघुप्रयत्नवालो य थाय छे ए नियमनो वररुचिना प्राकृतप्रकाशमां अभाव जणाय छे. ए उपरथी सिद्ध थाय छे के जैन महाराष्ट्री प्राकृतमां आवा प्रयोगो रूढ थयेला होवाथी हेमचंद्रे पोताना व्याकरणमां आ नियमो दाखल कर्या हशे. उपरि लोपः कगडतदपषसाम् ॥३।१। ए सूत्रमां ट्, श्, क् (जिह्वामूलीय),तथा प् (उपध्मानीय) गणाव्या नथी. स्वरथी पर अनादि असंयुक्त फ् ना भ् तथा ह् आदेश ने बदले मात्र भ् आदेश कर्यो छे. जेमके– सेभालिआ (शेफालिका), सभरी(शफरी), सभलं (सफलम्), परन्तु सेहालिआ, सहरी, सहलं आप्या नथी. व्यञ्जन पर छतां ङ्, ञ्, ण् तथा न् ना अनुस्वारने बदले व्यंजन पर छतां न् तथा ञ् नो अनुस्वार उपरांत म् कर्यो छे. जेमके— विंझो, विम्झो (विन्ध्यः), वंचणीअं, वम्चणीअं (वञ्चणीयम्), स्प ना फ आदेश उपरांत कचित् सि आदेश थाय छे एम कह्युं छे. जेमके— पाडिसिद्धी (प्रतिस्पर्द्धी). हेमचन्द्र पाडिसिद्धी तथा पडिसिद्धीने प्रतिसिद्धि शब्दथी सिद्ध करे छे. ऋतु आदिमां त नो द कर्यो छे,परन्तु हेमचन्द्रनुं एवुं कहेवुं छे के ते तो शौरसेनी तथा मागधीमां थाय छे,

प्राकृतमां तेम करवुं उचित नथी.प्राकृतप्रकाशमां नीचे आपेला सामान्यनियमो जणाव्या नथीः—

१, २, ३, ४, ५, ९, १३, १५ (ख), २२, २३, २५, २६, २८ (अंतर्गत ञ्= ञु, ह्= घ् (विकल्पे); ३६ अंतर्गत दीर्घथी पर होय तो, अनुस्वारथी पर होय तो;३९अन्तर्गत त्स्=च्, थ्य्= छ्, द्य्=ज्,ध्य्= झ्, ह्व्=भ्,(विकल्पे), ग्म्=म् (विकल्पे); ४०, ४५, ४६.

षड्भाषाचन्द्रिकामां थ्यश्चत्सप्सामनिश्चले ॥ १।४।२३। ए सूत्रनी वृत्तिमां ह्रस्वथी पर होवानुं लक्ष्मीधरे जणाव्युं नथी. नियम३९मामां ङ्मना प् ने बदले श्च नो प् जणाव्यो छे.नियम ३९मामां श्न,ष्ण,स्न, ह्न,ल्ह,क्ष्ण, ना ण्ह् उपरांत त्स्न् नो ण्ह् जणाववानो रही गयो छे एम धारीने लक्ष्मीधरे जणाव्यो छे. परन्तु ज्योत्स्ना शब्दना संयुक्त त्स्न् मांना ऊर्ध्व त् नो नियम ३२ मां थी लोप थाय छे, अने पछी जे स्न् शेष रहे छे, तेनो ण्ह् थाय छे, एटले त्स्न् जणाववानी जरूर नथी, नियम३६मामां अनुस्वार थी पर होय तो पण शेष तथा आदेशना द्वित्व नो निषेध कर्यो छे, परन्तु दीर्घान्न ॥ १।४। ८७। ए सूत्रमां अनुस्वारनो निषेध कर्यो नथी, नियम ४३ मांथी सिद्ध थता तणुवी, लहुवी, गरुवी, बहुवी , पुहुवी तथा मउवी शब्दमांना वीने बदले लक्ष्मीधरे ई कर्यो छे. नीचे आपेला सामान्य नियमो जणाव्या नथी.(जो के त्रिविक्रमना प्राकृत व्याकरणमां आपेला छे). १३ अन्तर्गत निर् ना इ नो नित्य दीर्घ थाय छे; १४ अंतर्गत ऐनो ए अने औ नो ओ थाय छे; ४४ अंतर्गत प्रावृष् शरत् तथा तरणि शब्द प्राकृतमां पुल्लिंगमां वपराय छे.

गच्छिमो, गच्छिमु, गच्छिम, एटलां रूपो आपवामां आव्यां नथी. गच्छित्था ने बदले गच्छित्थ छे. ए पक्षवालां रूपो नथी. प्राकृतप्रकाशमां प्र० व० मां गच्छन्ते, गच्छिरे एटलां रूपो आपवामां आव्यां नथी. षड्भाषाचन्द्रिकामां प्र० व० मां गच्छिरे ने बदले गच्छइरे रूप आप्युं छे. उ० ए० गच्छिमि रूप वधारे छे. प्राकृतरूपावतारमां प्र० व० मां गच्छिरे ने बदले गच्छइरे रूप आप्युं छे.

बोधपाठ ३ जो—

प्राकृतलक्षणमां प्र० व० मां इसउ, इसओ ने बदले इसीउ, इसीओ रूपो आप्यां छे. द्वि० व० मां इसीउ, इसीओ रूपो वधारे आप्यां छे. तृ० व० मां इसीहिं नथी. पं० व० मां इसित्तो, इसीओ, इसीउ रूपो आपवामां आव्यां नथी. सं० व० मां इसउ, इसओ ने बदले इसीउ, इसीओ रूपो आप्यां छे. प्राकृतप्रकाशमां प्र० व० मां इसउ, इसी रूपो नथी अने इसओ ने बदले इसीओ रूप छे. द्वि० व० मां इसी रूप नथी. तृ० व० मां इसीहि इसीहिं रूपो नथी. स० व० मां इसीसुं रूप नथी. पं० ए० व० तथा ष० व० नां रूपो आपवामां आव्या नथी. सिद्धहेममां तृ० व० मां इसीहि, इसीहिं तथा गुरूहि, गुरूहिं रूपो आपवामां आव्यां नथी. अने पं० ए० मां इसित्तो, गुरुत्तो तथा पं० व० इसित्तो, इसीउ, गुरुत्तो रूपो आपवामां आव्यां नथी. प्राकृतरूपावतारमां सं० व० मां इसउ तथा इसओ रूपो नथी. प्राकृतशब्दरूपावलिमां पं० ए० व० मां इसित्तो तथा गुरुत्तो नथी. अने सं० व० मां गुरवो, गुरुणो रूपो नथी.

बोधपाठ ४थो—

प्राकृतप्रकाशमां रूपो आपवामां आव्यां नथी.
नोधपाठ ५ मो—

प्राकृतलक्षणमां प्र० तथा द्वि०ए० मां अच्छि तथा धणुँ रूप वधारे छे. प्राकृतप्रकाशमां प्र० ब० मां नेत्ताणि, नेत्ताइं नेत्ताइँ, अच्छीणि, अच्छीइं, अच्छीइँ, धणूणि, धणूइं, धणूइँ रूपो नथी. परन्तु नेत्ताइ, अच्छीइ, धणूइ रूपो छे. षड्भाषाचन्द्रिकामां प्र०तथा द्वि०ए०मां अच्छि तथा धणु रूप वधारे छे. प्राकृतरूपावतारमां सं० ए०मां नेत्तो रूप वधारे छे. मार्गोपदेशिकामां प्र०ए० मां अच्छि तथा धणु रूप नथी.
नोधपाठ ६ ठो—

प्राकृतलक्षण तथा प्राकृतप्रकाशमां अ तथा आव आदेश नथी कर्या, प्राकृतरूपावतार तथा मार्गोपदेशिकामां पाठावेइ, कारावेइ रूपो नथी.

नोधपाठ ७ मो—

प्राकृतलक्षणमां प० ब० मां मालाइं मालाइ रूपो वधारे छे. प्राकृतप्रकाशमां द्वि० ब० मां माला, बुद्धी; प्र० तथा द्वि० ब० मां वाणीआ, वाणी; तृ० ए० मां मालाअ: तृ०ब० मां मालाहि, मालाहिँ बुद्धीहि, बुद्धीहिँ रूपो नथी. सिद्धहेममां पं० ए० तथा ब० मां मालत्तो, बुद्धित्तो रूपो नथी. षड्भाषाचन्द्रिकामां सं० ए० मां माला रूप वधारे छे. प्राकृतशब्दरूपावलिमां तृ० ए० मां बुद्धिणा रूप वधारे छे. अने बुद्धीअ, बुद्धीइ, बुद्धीआ, बुद्धीए; पं० ए० तथा ब० मां बुद्धित्तो; सं० ए० मां बुद्धि रूपो नथी.
नोधपाठ ८ मो—

प्राकृतप्रकाशमां गच्छहि, गच्छामु. गच्छिमु, गच्छे-

ज्जसु, गच्छेज्जहि, गच्छेज्ज, गच्छ, रूपो नथी. सिद्धहेममां उ० ए० हसमु, हसिमु; गच्छमो, गच्छिमो रूपो नथी. पड्भाषाचन्द्रिकामां उ० ए० तथा व० नां रूपोआप्यां नथी प्राकृतरूपावतारमां सिंहराज पोतानी वृत्तिमां कहे छे के उ० ए० ना मु प्रत्यय पहेलां अकारनो ओकार तथा इकार न करवो, परन्तु उ० व० ना मो प्रत्ययना साहचर्यथी मु पण बहुवचननोज लेवो.

बोधपाठ ९ मो—

प्राकृतप्रकाशमां प्र० ए०मां कत्ता रूप नथी. अने सं० ए० नुं रूप ज आप्युं नथी. सिद्धहेममां सं० ए० मां कत्तारा रूप नथी. पड्भाषाचन्द्रिकामां सं० ए० मां कत्तारो रूप नथी; अने पिअरो पिअर रूपो वधारे छे.प्राकृतरूपावतारमां सं० ए० मां कत्तारा ने बदले कत्ता रूप छे. अने पिआ रूप वधारे छे. प्राकृतशब्दरूपावलिमां सं० ए० मां कत्तारा रूप नथी.

बोधपाठ १० मो—

प्राकृतप्रकाशमां तुआण, तुआंण, इअ प्रत्ययो नथी. सिद्धहेममां इअ प्रत्यय नथी. पड्भाषाचन्द्रिकामां प्रत्ययोज आप्या नथी. प्राकृतरूपावतारमां इअ प्रत्यय नथी.

बोधपाठ ११ मो—

प्राकृतप्रकाशमां सं० ए० मां राअं वधारे छे. सं० व० राइणो, प्र० तथा द्वि० व० मां राइणो; प० व० मां राइणं विगेरे, स० व० मां राईसुं; तृ० ए० मां अप्पणिआ, अप्पणइआ रूपो नथी. सिद्धहेममां सं० ए० मां राअ रूप नथी अने राअं रूप शौरसेनीमां थाय छे एम कह्युं छे. पड्भाषा-

चन्द्रिकामां पं० तथा प० ए० मां रायाणाणो, रायाणो रूपो वधारे छे. प० ए० मां अप्पणो ने बदले अप्पाणो रूप छे. प्राकृतरूपावतारमां प० ए० मां अप्पणो ने बदले अप्पाणो रूप छे. मार्गोपदेशिकामां प० ए० मां राअणो ने बदले राआणो छे.

बोधपाठ १२ मो—

प्राकृतप्रकाशमां व्व आदेश नथी आप्यो.

बोधपाठ १३ मो—

प्राकृतप्रकाशमां तद् शब्दने प्र० ए० मां विभक्ति सहित सो आदेश नित्य कर्या छे, एटले स रूप नथी. षड्भाषाचन्द्रिकामां तद् शब्दने प्र० ए० मां विभक्ति सहित स आदेश नथी कर्यो. प्राकृतरूपावतारमां सव्व शब्दना स० ए० मां सव्वे रूप वधारे छे.

बोधपाठ १४ मो—

प्राकृतप्रकाशमां सीं, हीं प्रत्ययो तथा अहेसि रूप आप्यां नथी. षड्भाषाचन्द्रिकामां सी, ही, हीअ ने बदले सि, हि, हिअ प्रत्ययो छे. प्राकृतरूपावतारमां सीं ने बदले सीअ प्रत्यय छे.

बोधपाठ १५ मो—

प्राकृतप्रकाशमां से, सिं आदेशो मात्र तद् शब्दने ज कर्या छे, एतद् तथा इदं शब्दने कर्या नथी. एतद् शब्दना प्र० ए० मां इणं, इणमो रूपो नथी आप्यां. प्राकृतरूपावतारमां एतद् शब्दना तृ० ए० मां एएण रूप नथी.

बोधपाठ १६ मो—

प्राकृतप्रकाशमां मोच्छ, भोच्छ, छेच्छ, भेच्छ आदेशो

जणाव्या नथी.षड्भाषाचन्द्रिकामां उ० ए० मां स्सं ने बदले हिस्सं प्रत्यय आप्यो छे. प्राकृतरूपावतारमां उ० ए० मां काहं ने बदले काइहं रूप छे.

बोधपाठ १७ मो—

प्राकृतप्रकाशमां त्रिशब्दनो तृ० पछी ती ने बदले ति आदेश कर्यो छे. दोण्णि ने बदले दोणि आदेश कर्यो छे. वे, वेण्णि, दुण्णि, विण्णि आदेशो जणाव्या नथी. प्र० ब० मां चउरो आदेश नथी, कारण के नित्य दीर्घ कर्यो छे. षड्भाषाचन्द्रिकामां वेण्णि ने बदले वेण्णि आदेश कर्यो छे. अने आगलनां रूपोमां पण वे ने बदले वे राख्यो छे. त्रि शब्दनो तृ० पछी ती ने बदले ति आदेश कर्यो छे.प्राकृतरूपावतारमां द्वि शब्दना प्र० ब० मां वे ने बदले बु आदेश कर्यो छे , अने आगलनां रूपोमां पण वे ने बदले बु राख्यो छे.

बोधपाठ १८ मो—

प्राकृतप्रकाश, सिद्धहेम, षड्भाषाचन्द्रिका, प्राकृतरूपावतारमां समान प्रत्ययो होवाथी कांइ नोंधवा जेवुं नथी.

बोधपाठ १९मो—

प्राकृतलक्षणमां एकदम थोडां रूपो छे. अने प्राकृतप्रकाशमां पण थोडां रूपो छे. ए बतावी आपे छे के असलमां थोडां रूपो हतां, परन्तु पाछलथी वधेलां सिद्धहेममां युष्मद् शब्दना प्र० ब० मां तुब्भ, द्वि० ब० मां तुब्भ,तुम्ह, तृ० ब० मां उब्भेहिं रूपो नथी.षड्भाषाचन्द्रिकामां युष्मद् शब्दना तृ० ब० मां हिं ने बदले सर्वत्र हि छे; पं० ए० मां तहिन्तो ने बदले तुहिन्तो आदेश छे; प० ब० मां तुने बदले

त्वा आदेश छे; स० ए० मां तुव, तुम, तुह, तुम्ह, तुब्भ, तुज्झ आदेशो नथी जणाव्या. अस्मद् शब्दना तृ० ब० मां अम्हेहिं, अम्हेहिँ, अम्हाहिं, अम्हाहिँ रूपो वधारे छे; स० ए० मां अम्हे, ममे रूपो वधारे छे, अने अम्हस्सिं, अम्हत्थ. अम्हहिं, ममस्सिं, ममत्थ, ममहिं रूपो नथी. प्राकृतरूपावतारमां युष्मद् शब्दना तृ० व० मां हिं ने बदले सर्वत्र हिं छे; पं० ए० मां तइने बदले तुइ आदेश छे; पं० तथा स० मां टाप् प्रत्यय लगाडीने स्त्रीलिंगनां बधु रूपो कर्या छे; स० ए० मां तुवे इत्यादि रूपो वधारे छे. अस्मद् शब्दना स० ए० मां ममे, अम्हे रूपो वधारे छे.

बोधपाठ २० मो—

प्राकृतप्रकाशमां इमा प्रत्यय नथी; इत्त ने बदले इन्त प्रत्यय छे; मा प्रत्यय वधारे छे; इर, मण प्रत्ययो नथी. परिमाण अर्थमां किं (इदं शब्द जणाव्यो नथी) विगेरे शब्दोने एत्तिअ, एहह वे ज प्रत्ययो लागे छे. वाकीना तद्धित प्रत्ययो जणाव्या नथी. सिद्धहेममां इत्तिल ने बदले एत्तिल प्रत्यय छे; पर तथा राअ शब्दने अनुक्रमे क्क तथा इक्क प्रत्यय लगाड्या छे, ओ ने बदले दो प्रत्यय छे. षड्भाषाचन्द्रिकामां इत्त ने बदले इन्त प्रत्यय छे; अने मा प्रत्यय वधारे छे; ओने बदले दो प्रत्यय छे; सिअं ने बदले सिअ प्रत्यय छे; नवल्लो, एकल्लो, आदेशो नथी. प्राकृतरूपावतारमां मा प्रत्यय वधारे छे. हणुमा, पारिकं, राइकं विगेरे आदेशो नथी; तुम्हेच्चअं, अम्हेच्चअं, आदेशो नथी; सव्वंगिओ पहिओ, अप्पणअं आदेशो नथी; एक्कसि विगेरे आदेशो नथी; भाव अर्थमां इल्ल, उल्ल प्रत्ययो नथी; नवल्लो, इयाल्लो, उपरिल्लो

आदेशो नथी; मीसालिओ आदेश नथी; विज्जुला, पत्तलं, पीअलं, अन्धलो आदेशो नथी.

शोधपाठ २१ मो—

प्राकृतप्रकाशमां पुल्लिंगमां वपराता नकारान्त तथा सकारान्त शब्दोमांथी शिरस् तथा नभस् शब्द साथे दामन् शब्दने वर्ज्यो नथी. पुल्लिंगमां वपराता प्रावृष् तथा शरत् साथे तरणि-शब्दने गणाव्यो नथी. पुल्लिंगमां विकल्पे वपराता अक्षि-पर्याय तथा वचन आदि शब्दोनो पण उल्लेख कर्यो नथी. स्त्रीलिंगमां विकल्पे वपराता इमान्त शब्दोनो उल्लेख कर्यो नथी, अने अञ्जलि आदि शब्दोमांथी पृष्ठ प्रश्न तथा अक्षि ए त्रण शब्दो ज गणाव्या छे. निश्चय, वितर्क, संभावन तथा विस्मयना अर्थमां वपराता हु ने बदले हुं तथा खु ने बदले क्खु अव्ययो जणाव्या छे. सूचना आदि अर्थमां वपराता अव्वोने बदले अव्वो अव्यय जणाव्यो छे. अने संभावनना अर्थमां अइ ने बदले पण संभाषणना अर्थमां अइ तथा वले अव्ययो जणाव्या छे. इव अर्थमां वपराता मिव ने बदले म्मिव अव्यय जणाव्यो छे. संभाषण, रतिकलह तथा आक्षेपना अर्थमां वपराता हरे ने बदले हिरे अव्यय जणाव्यो छे. कुत्साना अर्थमां स्र तथा आमंत्रणना अर्थमां अज्ज अव्ययो विशेष जणाव्या छे. प्राकृतप्रकाशमां नीचेना नियमो जणाव्या नथीः—

१, २, ४, ६, ८,

पड्भाषाचन्द्रिकामां पुल्लिंगमां वपराता प्रावृष्, शरत् तथा तरणि शब्दोनो उल्लेख कर्यो नथी. नपुंसक लिंगमां विकल्पे वपराता गुण आदि शब्दोमां कण्ठ शब्द वधारे.

जणाव्यो छे. नियम २ जामां जणावेला ऊ ने बदले उ आदेश कर्यो छे. षड्भाषाचन्द्रिकामां नीचेनो नियम जणाव्यो नथीः—

११.

प्राकृतरूपावतारमां पुल्लिंगमां वपराता प्रावृष् तथा शरत् साथे तरणि शब्द गणाव्यो नथी. पुल्लिंगमां विकल्पे वपराता अक्षि पर्याय तथा वचन आदि शब्दो नो पण उल्लेख कर्यो नथी. आनन्तर्यना अर्थमां णवरिने बदले णवरिअ जणाव्यो छे. प्राकृतरूपावतारमां नीचेना नियमो जणाव्या नथीः—

२, ६.

आदेशावलि (शब्द).

प्राकृतप्रकाशमां शरत् शब्दना सरअ आदेशने बदले सरद आदेश कर्यो छे. नूपुर शब्दमां ऊ ना इ तथा ए विकल्प आदेशने बदले मात्र ए आदेश नित्य कर्यो छे. लृतः क्लृप्त इलिः ॥१।३३। ए सूत्रमां क्लृप्त शब्द गणाव्यो नथी. शीकर शब्दमां क ना भ तथा ह विकल्प आदेशने बदले मात्र भ आदेश नित्य कर्यो छे. हेमचन्द्रना प्रत्यादौ डः ॥८।१।२०६। ए सूत्रमां गणावेला शब्दोमांथी प्रतिसरवेतसपताकासु डः ॥२।८। ए सूत्रथी मात्र त्रण शब्दोज गणाव्या छे. गर्भिते णः ॥२।१०। ए सूत्रमां अतिमुक्तक शब्द गणाव्यो नथी. दोलादण्डदशनेषु डः ॥२।३५। ए सूत्रमां दष्ट, दग्ध, दण्ड, दर, दाह, दम्भ, दर्भ, कदन तथा दोहद शब्दो गणाव्या नथी. तेमज विकल्प आदेशने बदले नित्य आदेश कर्यो छे. वसतिभरतयोर्हः ॥२।९। ए सूत्रमां वितस्ति,

कीतर तथा मातुलिंग शब्दो गणाव्या नथी. उत्तरीयानीय-योर्ज्जो वा ॥२।१७। ए सूत्रमां तीय तथा कृच्च प्रत्ययो गणाव्या नथी. प्रथमशिथिलनिषधेषु ढः ॥२।२८। ए सूत्रमां मेथि तथा शिथिर शब्दो गणाव्या नथी. परुषपरिघपरिखासु फः ॥२।३६। ए सूत्रमां पारिभद्र शब्द गणाव्यो नथी. लाहले णः ॥२।४०। ए सूत्रमां लाङ्गल तथा लाङ्गूल शब्द गणाव्या नथी. वली ण आदेश विकल्पने बदले नित्य कर्यो छे. षट्-शावकसप्तपर्णानां छः ॥२।४१। ए सूत्रमां शमी तथा सुधा शब्द गणाव्या नथी. गर्दभसंमर्दवितर्दिविच्छर्दिषु र्दस्य ॥३।२६। ए सूत्रमां विच्छर्द, कपर्द, मर्दित शब्दो गणाव्या नथी, अने गर्दभ शब्दमां ड आदेश विकल्पने बदले नित्य कर्यो छे. भिन्दिपाले ण्डः ॥३।४५। ए सूत्रमां कन्दरिका शब्द गणाव्यो नथी. क्मस्य ॥३।४६। ए सूत्रमां ड्स् जोडा-क्षर गणाव्यो नथी. स्नेहे वा ॥३।६४। ए सूत्रमां अग्नि शब्द गणाव्यो नथी. कालायसे यस्य वा ॥४।३। ए सूत्रमां किसलय तथा हृदय शब्द गणाव्या नथी. भाजने जस्य ॥४।४। ए सूत्रमां दनुज तथा राजकुल शब्द गणाव्या नथी. हेमचंद्रना वेमाञ्जल्याद्याः स्त्रियाम् ॥८।१।३५। ए सूत्रमां गणावेला शब्दोमां थी-पृष्ठाक्षिप्रश्नाः स्त्रियां वा ॥४।२०। ए सूत्रथी मात्र त्रण शब्दोज गणाव्या छे. अत् पथिहरिद्रा-पृथिवीषु ॥१।१३। ए सूत्रमां प्रतिश्रुत्, मूषिक तथा बिभी-तक शब्द गणाव्या नथी. ओतोऽद्वा प्रकोष्ठे कस्य वः ॥१।४०। ए सूत्रमां अन्योन्य, आतोद्य, शिरोवेदना, मनोहर तथा सरोरुह शब्द गणाव्या नथी. लोपोऽरण्ये ॥१।४। ए सूत्रमां अलाबु-शब्द गणाव्यो नथी. सदा आदि शब्दोमां

आ नो इ विकल्पे थाय छे, तेमां तदा तथा यदा शब्दो वि-
शेष गणाव्या छे, जे हेमचन्द्रे इत्यादि करी छोडी दीधा छे,
प्राकृतप्रकाशकारे वृश्चिक शब्दने ऋनो इ, श्चनो ञ्छ तथा
इ नो उ एवा आदेश करी विञ्छुअ तरीके सिद्ध कर्यो छे,
ज्यारे हेमचन्द्रे तेने विञ्छुअ तथा विञ्छिअ तरीके सिद्ध
कर्यो छे. प्राकृतप्रकाशकारे मयूरने मोर,दावाग्निने दावग्गि,
तथा दवग्गि, चाटुने चाडु तथा चडु, सूर्यने सूर, ऐरावतने एरावण
आदेश कर्या छे, ते संबंधमां हेमचन्द्र कहे छे के मोर, दा-
वाग्नि तथा दवाग्नि चाटु तथा चटु,सूर,ऐरावण ए शब्दोज संस्कृत
छे, अने ते बीजा नियमोथी सिद्ध थई जाय छे, एने माटे
स्वतंत्र आदेश करवानी जरूर नथी. वररुचिए अंकोलशब्द
ने, हेमचन्द्रे अंकोट शब्दने अने त्रिविक्रमे अंकोट शब्दने
अंकोल्ल आदेश कर्यो छे, परन्तु संस्कृतमां त्रणे शब्दो एक
ज अर्थमां वपराय छे. वररुचिए हरिद्रा शब्दने हलद्दा
आदेश नित्य कर्यो छे, परन्तु हेमचन्द्रे हलद्दा तथा हलिद्दा
एम विकल्पे कर्यो छे. वररुचि ज्यारे दिवस शब्दना आदेश
तरीके दिअहो तथा दिअसो जणावे छे, त्यारे हेमचन्द्र
दिवहो तथा दिवसो जणावे छे. वररुचि आम्र तथा ताम्र
शब्दने अम्ब तथा तम्ब आदेश करे छे. त्यारे हेमचन्द्र
अम्ब तथा तम्ब आदेश करे छे. वररुचि एम कहे छे के
उत्सुक तथा उत्सव शब्दमां त्स् नो छ नथी थतो, त्यारे
हेमचन्द्र कहे छे के त्स् नो छ विकल्पे थाय छे. वररुचि
प्रमाणे ऊसुओ तथा ऊसवो. हेमचन्द्र प्रमाणे उच्छुओ
ऊसुओ तथा उच्छवो, ऊसवो प्राकृतप्रकाशमां सिद्धहेमना
नीचेनां सूत्रो जणाव्या नथीः—

(१) क्षुधो हा ॥८।१।१७।

(२) आयुरप्सरसो वा ॥८।१।२०।

(३) ककुभो हः ॥८।१।२१।

(४) धनुषो वा ॥८।१।२२।

(५) ओत्पद्मे ॥८।१।६१।

(६) इत्तौ वृष्टिवृष्टपृथङ्मृदङ्गनप्तृके ॥८।१।१३७।

(७) अयौ वैत् ।८।१।१६९।

(८) रुदिते दिनाण्णः ।८।१।२०९।

(९) स्वप्ननीव्यो र्वा ॥८।१।२५९।

(१०) क्ष्वे वा ॥८।२।१९।

(११) एतः पर्यन्ते ॥८।२।६५।

(१२) आश्चर्ये ॥८।२।६६।

(१३) अतो रिअ्ररिज्जरीअं ॥८।२।६७।

षड्भाषाचन्द्रिकामां सिद्धहेमनां नीचेनां सूत्रो जणातां नथी (जोके त्रिविक्रमना प्राकृतव्याकरणमां आपेला छे):-

(१) पच्छय्यादौ ॥८।१।५७।

(२) श्यामाके मः ॥८।१।७१।

(३) उदोद्वार्द्रे ॥८।१।८२।

(४) आहृते डिः ॥८।१।१४३।

(५) वा कदले ॥८।१।१६७।

(६) यमुनाचामुण्डाकामुकातिमुक्तके मोऽनुनासिकश्च ॥८।१।१७८।

(७) अंकोठे ल्लः ॥८।१।२००।

(८) गर्भितातिमुक्तके णः ॥८।१।२०८।

(९) यष्ट्यां लः ॥८।१।२४७।

(१०) ध्वजे वा ॥८।२।२७।
(११) इन्धौ झा ॥८।२।२८।
(१२) अनंकोठात्तैलस्य डे ल्लः ॥८।२।१५५।
(१३) त्वादेः सः ॥८।२।१७२।
(१४) प्यादयः ॥८।२।२१८।
(१५) वैतत्तदः ॥८।३।३।

षड्भाषाचन्द्रिकामां सिद्धहेम करतां नीचेनां सूत्रो विशेष आपेलां छेः—

(१) णिम्मार्णं णिम्मिअं ॥१।२।४७।
(२) वा पुआरयाद्याः ॥१।२।११०।
(३) लो जठरवठरनिष्ठुरे ॥१।३।७७।
(४) स्मरकट्ठवोरीसरकारौ ॥१।३।१००।
(५) दर्वीकरनिवहौ दव्विर अगिह वौ ॥१।४।१२०।
(६) गह्विआद्याः ॥१।४।१२१।
(७) वरइत्तगास्तूनाद्यैः ॥२।१।३०।
(८) सोर्लुक् ॥२।२।१।

प्राकृतरूपावतारमां सिद्धहेम करतां थोडां सूत्रो आप्यां छे, परन्तु ए व्याकरणनो मुख्य-विषय रूपावतार होवाथी ग्रन्थकारे सामान्य तथा विशेष नियमो वालां केटलांक सूत्रो इरादा पूर्वक छोडी दीधेलां लागे छे. आ कारणसर ते व्याकरणमां नहि जणावेलां सूत्रोनी यादी अत्रे आपवी योग्य धारी नथी.

आदेशावलि (धातु)—

प्राकृतप्रकाशमां भू धातुना क्तप्रत्यय पर रहेतां हु आदेशने बदले हु आदेश कर्यो छे. प्रपूर्व भू धातुना पहुप्प

आदेश ने बदले पभव आदेश कर्यो छे. दृ धातुना णिअन्त दूम आदेशने बदले सामान्य दूम आदेश कर्यो छे. तृप् धातुना थिप्प आदेशने बदले थिम्प आदेश कर्यो छे. तथा, ध्यै तथा गै धातुना ठा, झा तथा गा आदेशनो बहुवचनमां निषेध कर्यो छे, अने मात्र ठाअ, झाअ तथा गाअ आदेश वपराय छे एम कह्युं छे. ग्रस् धातुना घिस आदेशने बदले विस आदेश कर्यो छे. लिह् धातुना भावकर्ममां लिब्भ आदेशने बदले लिज्झ आदेश कर्यो छे. ग्रह् धातुना भावकर्ममां वेप्प आदेशने बदले गाहिज्ज तथा गहिज्ज आदेश कर्यो छे. मृज् धातुना लुह तथा पुस आदेशने बदले लुभ तथा सुप आदेश कर्या छे. मस्ज् धातुना बुड्ड आदेशने बदले वुट्ट आदेश कर्यो छे. दृश् धातुना निअच्छ आदेशने बदले णिअक्क आदेश कर्यो छे. शक् धातुना चय आदेशने बदले वअ आदेश कर्यो छे. प्राकृतप्रकाशमां सिद्धहेम करतां नीचेना आदेशो विशेष कर्या छे: —

णुद्— णोल्ल; पद्— पाल; घ्रा— पा, पाअ; जल्प्— जम्प; चर्च्— चम्प.

षड्भाषाचन्द्रिकामां गम् तथा दृश् धातुना आदेशोमां पाठान्तर छे. अवपूर्व तृ धातुना ओह आदेशने बदले ओहर तथा ओरसने बदले ओसर आदेश कर्यो छे. उद् पूर्व वा धातुना ओरुम्मा आदेशने बदले ओरुम्म तथा वसुआ आदेशने बदले अवसुअ आदेश कर्यो छे. स्वप् धातुना कमवस आदेशने बदले कमव तथा लिस आदेशने बदले संलिस आदेश कर्यो छे. प्रपूर्व विश् धातुना रिअ आदेशने बदले रिह आदेश कर्यो छे; वळी रिंग आदेश विशेष कर्यो

छे. प्लव् धातुना णिअन्त ओम्वाल आदेशने बदले रोम्वाल आदेश कर्यो छे. नट् धातुना णिअन्त आहोड आदेशने बदले राहोड आदेश कर्यो छे. षड्भाषाचन्द्रिकामां सिद्ध-हेम करतां नीचेना आदेशो विशेष कर्या छे:-

दीप्- डीप्प, वि+ ज्ञप्- उत्तंघ, जुगुप्स्- जप्प तथा दुगुच्छ, स्खल्-सुल्ल.

षड्भाषाचन्द्रिकामां सिद्धहेमनां नीचेनां सूत्रो जणाव्यां नथी(जोके त्रिविक्रमना प्राकृत व्याकरणमां आपेला छे):-

(१) रुके हूः ॥८।४।६४।

(२) राजेरग्घछज्जसहरीररेहाः ॥८।४।१००।

(३) घटेर्गढः ॥८।४।११२।

(४) समो गलः ॥८।४।११३।

(५)छिदेर्दुहावणिच्छल्ल णिज्झोड णिव्वरणिल्लूरलूराः ॥८।४।१२४।

(६) व्यापेरोअग्गः ॥८।४।१४१।

(७) समापेः समाणः ॥८।४।१४२।

प्राकृतरूपावतारमां ज्ञा धातुना णव्व आदेशने बदले णप्प आदेश कर्यो छे, प्लव् धातुना णिअन्त ओम्वाल तथा पव्वाल आदेशने बदले ओव्वाल तथा पव्वाल आदेश कर्या छे. दृश् धातुना दक्खवने बदले दक्खाव आदेश कर्यो छे. विपूर्व स्मृ धातुना वीसर आदेशने बदले विसर आदेशः कर्यो छे; अने विम्हर आदेशजूदो न करतां स्म= म्ह ना आधारे सिद्ध कर्यो छे. त्वर् धातुना जअड आदेशने बदले जअद आदेश कर्यो छे. पृथक् करवाना अर्थमां कृ धातुना णिव्वड आदेशने बदले णिव्वट आदेश कर्यो छे. मागधी

दबायेलाना अर्थमां नम् धातुना णिसुढ आदेशने बदले णिसुड्ड आदेश कर्यो छे. भष् धातुना भक्क आदेशने बदले बुक्क आदेश कर्यो छे. प्रपूर्व भू धातुना पक्षे पभव आदेशने बदले पक्षे पहुव आदेश कर्यो छे.

परिशिष्ट.

बोधपाठ १ लो—

प्राकृतप्रकाशमां अनादि थना विकल्प धने बदले अनादि असंयुक्त थ नो ध नित्य कर्यो छे. क्त्वा प्रत्ययना इय तथा दूण विकल्प आदेशने बदले मात्र इअ आदेश नित्य कर्यो छे. कृ तथा गम् धातुथकी क्त्वा प्रत्ययना अडुअ विकल्प आदेशने बदले अडुअ आदेश नित्य कर्यो छे. भू धातुना हकारना विकल्प भकार आदेशने बदले भू धातुने भो आदेश नित्य कर्यो छे, परन्तु भविष्यकालना प्रत्ययो पर रहेतां भो आदेश नथी कर्यो. एव अव्यय ना य्येव आदेशने बदले जेव्व आदेश कर्यो छे. प्राकृतने बदले शौरसेनीमां नीचेना आदेशो कर्या छेः—

कृ–कर, स्था—चिट्ठ, स्मृ–सुमर, दृश्–पेक्ख, अस्–अच्छ, स्त्री—इत्थी, आश्चर्य—अच्चरिअ, व्यापृत—वावड, गृध्र—गिद्ध, सर्वज्ञ—सव्वण्ण, इङ्गितज्ञ—इंगिअण्ण, इव—विअ.

प्राकृतप्रकाशमां नीचे आपेलुं सिद्धहेम करता विशेष छेः—

(१) ब्रह्मण्य, विज्ञ, यज्ञ तथा कन्या शब्दना ण्य, ज्ञ तथा न्य नो ञ्ञ विकल्पे थाय छे. जेमके—बम्हञ्ञो, विञ्ञो, जञ्ञो, कञ्ञा.

(२) नपुंसकलिंगना प्र० तथा द्वि० व० मां णि प्रत्यय लागे छे, अने पूर्व स्वर नो दीर्घ थाय छे.

(३) दा धातु ने भविष्यकालना उ० ए० मां विभक्ति सहित दइस्स आदेश थाय छे.

(४) अस् धातुने भविष्यकालना उ० ए० मां विभक्ति सहित सं आदेश थाय छे.

(५) अस्मद् शब्दने प्र० व० मां वअं तथा अम्हे आदेश थाय छे.

(६) सर्वनामना स० ए० ना प्रत्यय तरीके स्सिा आदेश थाय छे. जेमके सव्वस्सिा (सर्वस्मिन्), इदरस्सिा (इतरस्मिन्)

(७) धातु थकी भाव, कर्ता तथा कर्ममां परस्मैपदना प्रत्ययो लागे छे. जेमके—सासाअसि (श्वासायसे), वन्दामि (वन्दे), कामिअदि (काम्यते)।

(८) धातुना रूपमां उपान्त्य स्वरनो एकार थाय छे, जेमके—करेदि

(९) आज्ञार्थना नि नो मि थाय छे, जेमके—करवामि (करवाणि) गच्छामि (गच्छानि).

परिशिष्ट बोधपाठ १लो—

प्राकृतप्रकाशमां नीचेनी कलमो जणावी नथीः—

(१) र्य ने स्थाने विकल्पे य्य थाय छे. (३)

(२) मध्यम पुरुषना ह प्रत्यय तथा इह शब्दना हकार नो विकल्पे धकार थाय छे. (९)

(३) अकारान्त धातुने आत्मनेपदनो दे प्रत्यय लागे छे. (८)

(४) भविष्यकालना (प्राकृतना) हिने स्थाने स्सि थाय छे (१०)

(५) अंत्य मकारथी पर णाकार आगम विकल्पे थाय छे, इकारके एकार पर होय तो. (१४)

(६) नकारान्त शब्दथी संबोधनना एकवचननो लोप अने नकारनो अनुस्वार विकल्पे थाय छे. (५)

(७) भवत् अने तेना जेवा भगवत् आदि शब्दना अंत्य व्यंजननो प्र०ए०मां अनुस्वार थाय छे, अने एकवचन ना प्रत्ययनो लोप थाय छे. (६)

(८) इन् प्रत्ययांत शब्दोना नकारनो सं०ए०मां विकल्पे आकार थाय छे. (७)

षड्भाषाचन्द्रिकामां अम्महे ने बदले अम्हे नथ य्येव ने बदले एव्व आदेश कर्या छे. नियम १४ मो विकल्प ने बदले नित्य कर्यो छे.

प्राकृतरूपावतारमां तस्मात् ना ता आदेश उपरांत तो आदेश कर्यो छे. एवना य्येव आदेशने बदले य्येव्व आदेश कर्या छे. त्त्वा प्रत्ययनां डूण आदेशने बदले डूण आदेश कर्या छे. कृ तथा गम् धातु थकी त्त्वा प्रत्ययना अडुअ आदेशने बदले अडुअ आदेश कर्या छे. प्राकृतरूपावतारमां प्राकृतने बदले शौरसेनीमां नीचेना आदेशो कर्या छे:—

गम्– गच्छ, इष्– इच्छ, यम्–जच्छ, आस्–अच्छ. प्राकृतरूपावतारमां हीमाणहे अव्यय शौरसेनीमां वपराता होवानुं जणाव्युं नथी.

बोधपाठ २ जो—

प्राकृतप्रकाशमां असंयुक्त स ना श् उपरांत ष नो श् कर्यो छे. अनादिक्षना जिह्वामूलीय ᳵ कने बदले क्ख थाय छे. अकारान्त शब्दोने प्र० ए० मां ए प्रत्यय उपरांत इ तथा ० (लुक्) प्रत्ययो लगाड्या छे. प०ए० मां स्स प्रत्ययने बदले ह्श प्रत्यय लगाड्यो छे. अस्मद् शब्दना प्र० ए० तथा ब० मां हगे ने बदले मात्र प्र० ए० मां ज हके, हगे, अह्के आदेशो कर्या छे.

प्राकृतप्रकाशमां नीचे आपेलुं सिद्धहेम करतां विशेष छे:—

(१) हृदय शब्दने हडक्क आदेश थाय छे.
(२) र्य तथा र्ज नो य्य थाय छे.
(३) क्त प्रत्ययान्त शब्दोने प्र०ए० मां इ, ए,० (लुक्) तथा उ प्रत्यय लागे छे.
(४) संबोधनमां अ दीर्घ थाय छे, जेमके-- पुलिशा आगच्छ, माणुशा आगच्छ.
(५) कृ, मृ तथा गम् धातुथकी क्त प्रत्ययने स्थाने ड प्रत्यय लागे छे. जेमके—कडे, मडे, गडे.
(६) त्वा प्रत्ययने स्थाने दाणि आदेश थाय छे.
(७) शृगालने शिआल तथा शिआलक आदेश थाय छे.

प्राकृतप्रकाशमां बोधपाठ २ जो —

प्राकृतप्रकाशमां नीचेना नियमो जणाव्या नथी:—
(१) रेफनो ल थाय छे. (१)
(२) ग्रीष्म शब्द सिवाय संयुक्त ष् नो स् थाय छे(२)
(३) ष्ट तथा ष्ठ नो स्ट थाय छे. (३)

(४) स्थ तथा र्थ नो स्त थाय छे. (४)

(५) य्यनो य्य थाय छे. (५)

(६) न्य, ण्य, ज्ञ तथा ञ्ज नो ञ्ञ थाय छे. (६)

(७) अनादि लाक्षणिक तथा अलाक्षणिक छ नो श्च थाय छे. (७)

(८) अकारान्त शब्दना प० ब० मां आहं प्रत्यय लागे छे. (१०)

(९) व्रज धातुना जकारनो ञ्ज थाय छे. (१२)

(१०) प्रेक्ष् अने आचक्ष्‌ना क्षनो स्क थाय छे. (१३)

षड्भाषाचन्द्रिकामां पुल्लिंग शब्दोना प० ए० मां स्स प्रत्ययने बदले इश प्रत्यय लगाड्यो छे. ट्ट तथा ष्ठ ना स्ट ने बदले स्थ कर्यो छे. तिष्ठना चिष्ठ आदेशने बदले चिट्ट आदेश कर्यो छे. संयुक्त स तथा ष अनादि होय तो ज स थाय छे एम कह्युं छे.

प्राकृतरूपावतारमां पुल्लिंग शब्दोना प० ए० मां स्स प्रत्ययने बदले इश प्रत्यय कर्यो छे. प० ब० मां आहँ प्रत्यय नित्यने बदले विकल्पे कर्यो छे. तिष्ठ ना चिष्ठने बदले चिष्ट आदेश कर्यो छे. प्राकृतने बदले मागधीमां भ्रुकुटि तथा पुरुष शब्दना रेफना उकारनो इकार कर्यो छे. जेमके— भिउडी, पुरिसो.

बोधपाठ ३ जो—

प्राकृतप्रकाशमां चूलिकापैशाचीना नियम ने पैशाचीना नियम तरीके गण्या छे, ए उपरथी सिद्ध थाय छे के वररुचिना समयमां पैशाची तथा चूलिकापैशाची वच्चे भेद गणातो नहि होय. स्नना सिन आदेशने बदले सन आदेश कर्यो छे.

र्थना रिय आदेशने बदले रिअ आदेश कर्यो छे. ज्ञना ञ्ञ आदेश ने बदले ञ्ज आदेश कर्यो छे. सामान्य न्यना ञ्ञ आदेशने बदले मात्र कन्या शब्दना न्यनो ञ्ज आदेश कर्यो छे. राजन् शब्दना राज्ञ इत्यादि रूपोमां ज्ञना चिञ विकल्प आदेशने बदले तृ० ए०, पं० ए०, ष० ए० तथा स० ए० ना प्रत्ययो पर रहेतां राचि आदेश विकल्पे कर्यो छे.जेमके—राचिना,रञ्जा;राचिनो,रञ्ञो,राचिनि,रञ्जि.त्व प्रत्ययना तून आदेशने स्थाने तूनं आदेश कर्यो छे. जेमके— दातूनं, कातूनं. हृदय शब्दना हितपक आदेशने बदले हित अक आदेश कर्यो छे.प्राकृतप्रकाशमां नीचे आपेलुं सिद्ध-हेम करतां विशेष छे:—

(१) र्यनो च्च थायछे. जेमके— कच्चं(कार्यम्).

(२) इवने पिव आदेश थाय छे.जेमके—कमलं पिव.

प्राकृतप्रकाशमां नीचे आपेला नियमो जणाया नथी:—

प्राकृतप्रकाशमां —वीजपाठ १ जो

(१) ण्य नो ञ्ज थाय छे. (७)

(२) स्त्री ने स्थाने त्थून तथा त्थून आदेश थाय छे.(१५)

(३) दकारनो तकार थाय छे,अने तकारनो तकारज रहे छे. (२)

(४) लकारनो लकार अने श् तथा ष् नो स थाय छे(३)

(५) दु नो विकल्पे तु आदेश थाय छे. (४)

(६) भावकर्ममां थना क्य प्रत्ययने इय्य आदेश थाय छे. (१४)(क)

(७) कृ धातुने क्य प्रत्यय सहित कीर आदेश थाय छे. (१४)(ख)

तृ० य० मां जिणे; स० य० मां जिणासु, जिणासु रूपो वधारे छे. सं० य० मां जिणा, जिणा रूपो नथी. इकारान्त पुल्लिंग शब्दना प्र० य० मां इसिदो, इसीदो; प० य० मां इसि, इसी रुपो वधारे छे. स० व० नो हुं प्रत्यय स०ए० मां आप्यो छे. सं० य० मां इसि , इसी रूपो नथी. वर्त्म ना विच आदेश ने यदले विच्चु आदेश कर्यो छे. विपण्ण ना वुन्न आदेश ने यदले उन्न आदेश कर्यो छे. परस्पर ना अवरोप्पर आदेशने यदले अवरोवर आदेश कर्यो छे. सर्वादि शब्दो ना प० ए० मां हां प्रत्ययने यदले हुं.प्रत्यय आप्यो छे. स्त्रीलिंग नामना स० ए० मां हि प्रत्ययने यदले हिं प्रत्यय आप्यो छे. किम् शब्दना प० ए० मां किहे ने यदले किह् आदेश कर्यो छे. तद् शब्द ना प्र० तथा द्वि० ए० मां त्रं ने यदले त्रुं आदेश कर्यो छे. यद् शब्दना प्र० तथा द्वि०ए०मां ध्रुं ने यदले ध्रुं आदेश कर्यो छे. युष्मद् शब्द ना प्र० तथा द्वि० य० मां तुम्हइं ने यदले तुम्हइ आदेश कर्यो छे. युष्मद् शब्द ना द्वि० तृ०, तथा स० ए० मां पइं ने यदले एइं आदेश कर्यो छे. अस्मद् शब्द ना तृ० य० मां अम्हेहिं ने यदले अम्हेहि आदेश कर्यो छे. अस्मद् शब्द ना पं० तथा प०ए० मां मज्झु ने यदले मज्झ आदेश कर्यो छे. यत्र तथा तत्र शब्दने अनुक्रमे जइ तथा तइ आदेश वधारे कर्या छे. क्त्वा प्रत्ययना इवि आदेशने यदले ए आदेश कर्यो छे. क्त्वा तथा तुम् प्रत्ययना एवि तथा एविणु आदेशने यदले एपि तथा एपिणु आदेश कर्या छे. तादर्थ्यमां रेसि तथा रेसिं ने यदले तेसि तथा तेसिं आदेश कर्या छे. विनाना विणु आदेशने यदले विण आदेश कर्या छे. अपदम् ना

अवसें तथा अवमने बदले अवासें तथा अवास आदेश कर्या छे. एकशः ना एक्कसिने बदले एगसि आदेश कर्यो छे. इदानीम् ना एम्वहिं ने बदले एव्वहि आदेश कर्यो छे. एवमूना एम्वने बदले एम आदेश कर्यो छे. एवमेवना एम्वइ ने बदले एमइ आदेश कर्यो छे. प्रत्युतना पचलिउ ने बदले पच्छलिउ आदेश कर्यो छे. नहिना नाहिं ने बदले नाहि आदेश कर्यो छे. प्रायशः ना पगिम्व तथा प्राइम्व ने बदले अनुक्रमे पगिम तथा प्राइम आदेश कर्या छे. कुतः कहन्तिहुने बदले कहुतिहु आदेश कर्यो छे. चेष्टानुकरणमां घुग्घ ने बदले घिग्घि आदेश कर्यो छे. तद्धितमां त्तण उपरांत प्पण आदेश कर्यो नथी. तव्य प्रत्ययना इएव्वउं, एव्वउं तथा एवा ने बदले एव्वइ, एप्पइ तथा एव्व आदेश कर्या छे. वर्तमान कालना उ० ए० मां उं ने बदले उ प्रत्यय कर्यो छे. भूधातुना हुच ने बदले बहुचक्र आदेश कर्यो छे. व्रज् धातुना वुञ ने बदले वञ आदेश कर्यो छे. ग्रह् धातुना गृण्ह् ने बदले गण्ह् आदेश कर्यो छे. षड्भाषचन्द्रिकामां सिद्धहेमना नीचे आपेला सूत्रो जणाव्या नथी (जोके त्रिविक्रमना प्राकृत व्याकरणमां ते आपेला छे):—

सुपा अम्हासु ॥८।४।३८१।

आपद्विपत्संपदां द इः ॥८।४।४००।

कादिस्थैदोतोरुच्चारलाघवम् ॥८।४।४१०।

शीघ्रादीनां वहिल्लादयः ॥८।४।४२२।

योगजाश्चैषाम् ॥८।४।४३०।

स्त्रियां तदन्ताड्डीः ॥८।४।४३१।

आन्तान्ताड्डाः ॥८।४।४३२।

अस्येदे ॥८।४।४३३।
लिंगमतंत्रम् ॥८।४।४४५।
शौरसेनीवत् ॥८।४।४४६।
व्यत्ययश्च ॥८।४।४४७।
शेषं संस्कृतवत् सिद्धम् ॥८।४।४४८।

प्राकृतरूपावतारमां नामने स्वार्थमां अ, इड, डुल्ल, इडअ, डुल्लअ, डुल्लइड उपरांत अडड, अडुल्ल, इडडुल्ल, अडडुल्ल, अडुल्लडड, डडअडुल्ल, डुल्लअडड, डडडुल्लअ, डुल्लडडअ, आदेशो कर्या छे. अन्यथानो अनु तथा सर्व नो साह आदेश विकल्पे ने बदले नित्य कर्या छे. स्त्रीलिंग नामना पं० तथा ष० ब० मां हु ने बदले हुं आदेश कर्यो छे. स्वार्थमां स्त्रीलिंग शब्दोने डी तथा डा आदेश उभय कर्या छे। स्त्रीलिंग नामना स० ए० मां हि ने बदले अ, आ, इ तथा ए आदेश कर्या छे. तद् शब्दना प्र० तथा द्वि० ए० मां भ्रं ने बदले भ्रुं आदेश कर्यो छे. युष्मद् शब्दना द्वि०, तृ० तथा स० ए० मां पइं ने बदले पइं आदेश कर्यो छे. युष्मद् शब्दना पं० तथा ष० ए० मां तुज्झने बदले तुज्झु आदेश कर्यो छे. दृश धातुना प्रस्स आदेश ने बदले पस्स आदेश कर्यो छे.

पण्डित बहेचरदास जीवराज दोशी ना अपभ्रंश व्याकरणमां नपुंसक लिंगवाला अच्छि शब्दना प्र० ए० मां अच्छी रूप नथी. धणु शब्दना प्र० ए०मां धणू रूप नथी. मालइअ शब्दना प्र० तथा द्वि० ब० मां मालइआ तथा मालइअ रूपो वधारे छे. बुद्धि शब्दना प्र० तथा द्वि० ब० मां बुद्धि तथा बुद्धी रूपो वधारे छे. ईकारान्त उकारान्त

तथा ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोमां पण तेज प्रमाणे रूपो वधारे छे. तद् शब्दना प्र० तथा द्वि० ए० मां त्वं आदेश वधारे छे. यद्, तद् तथा किम् शब्दने स्त्रीलिंगमां ष० ए० मां अनुक्रमे जहे तहे तथा कहे आदेश विकल्पे कर्या छे. भविष्यकालमां प्राकृतना हिने बदले स उपरांत शौरसेनी नो भिन्न आदेश वधारे आप्यो छे.

श्री वीतरागाय नमः।

प्राकृत-पाठमाला.

मंगलाचरणम्।

(आर्या)

णविऊण गिरिसमधीरं गुणगंभीरं जिणं महावीरं।
वोच्छ भवियहियट्ठं सरलं पाययपाढमालं ॥१॥

प्राकृतवर्णमाला.

स्वर.

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ.

व्यंजन.

क्, ख्, ग्, घ्; च्, छ्, ज्, झ्; ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्; त्, थ्, द्, ध्, न्; प्, फ्, ब्, भ्, म्; य्, र्, ल्, व्, स्, ह्.

अनुस्वार (ं), सानुनासिक (ँ).

नोंध—ङ् ञ् स्वतंत्र आवता नथी, परन्तु अनुस्वारनो परसवर्ण थतां संयुक्त ङ् तथा ञ् आवे छे.

प्राकृत नियमावलि

संधि—

हे० १–५ १ प्राकृतमां एक पदना बे स्वरोनी संधि थती नथी. जेमके–मुद्धाइ, मइइ. परन्तु जूदा जूदा पदना बे स्वरोनी संधि विकल्पे थाय छे. जेमके–विसम आयवो विसमायवो, वास इसी वासेसी. दहि ईसरो दहीसरो, साउ उअयं साऊअयं ।

हे० १–६ २ इवर्ण तथा उवर्णनी विजातीय स्वर साथे संधि थती नथी. जेमके–देहि अहिअं, मइ अहिअं

हे० १–७ ३ एकार तथा ओकारनी कोई पण स्वर साथे संधि थती नथी. जेमके–देवीए आमणं. पंचालाओ आगओ ।

हे० १–८ ४ उद्वृत्त स्वरनी प्रायः कोई पण स्वर साथे संधि थती नथी. जेमके–पईवो. निसाअरो,

---

१ क्वचित् एक पदमां पण संधि विकल्पे थाय छे. जेमके–बिइओ बीओ. काहिइ काही ।

२ इवर्णना इ, ई तथा उवर्णना उ, ऊ सजातीय अने बाकीना स्वर विजातीय गणाय छे ।

३ लुप्त थयेला क्, ग्, च् इत्यादि व्यंजनो जे अवशिष्ट स्वर ते उद्वृत्त स्वर कहेवाय छे ।

४ क्वचित् विकल्पे थाय छे. जेमके–कुम्भआरो, कुम्भारो. सुउरिसो सुरिसो । क्वचित् नित्य थाय छे. जेमके–सालाहणो, [illegible]

रयणीअरो ।

हे० १–९ ५ तिबादि[1] स्वरनी कोई पण स्वर साथे संधि थती नथी. जेमके–होइ इह ।

स्वर विकार—

हे--१--१० १--४०

६ प्राकृतमां जूदा जूदा पदना बे स्वरने योगे प्रायः एक स्वर नो लोप थाय छे. जेमके—

त्रिदशेशः	तिअसीसो	अम्हे एत्थ	अम्हेत्थ
निःश्वासोच्छ्वासौ	निसासूसासा	जइ इमा	जइमा
		जइ अहं	जइहं

हे० १–४

७ समासमां प्रायः हृस्व स्वरनो दीर्घ तथा दीर्घ स्वरनो हृस्व[3] थाय छे. जेमके--

अन्तर्वेदिः	अंतावेई	नितम्बशिलास्खलितवीचिमालस्य निअंबसिलखलिअवीइमालस्स
सप्तविंशतिः	सत्तावीसा	

१ धातुथी पर इ, सि. मि विगेरे वर्त्तमानकालादिना प्रत्ययो तिबादि कहेवाय छे ।

२ क्वचित् नथी थतो. जेमके–जुवइ अणो (युवतिजनः) क्वचित् विकल्पे थाय छे. जेमके–भुआयन्तं भुअयन्तं (भुजायंत्रम्) पईहरं पइहरं (पतिगृहम्) वेलूवणं वेलुवणं (वेणुवनम्)

३ क्वचित् विकल्पे थाय छे. जेमके–जउँणायडं जउँणयडं (यमुनातटम्) णईसोत्तं णइसोत्तं (नदीस्रोतः) । गोरिहरं गोरिहरं (गौरीगृहम्) वहूमुहं वहुमुहं (वधूमुखम्)

हे० १--६८.

८ घञ् नैमित्तक वृद्धिथी थयेला आकारनो प्रायः विकल्पे अ थाय छे. जेमके--

प्रवाहः	पवहो पवाहो	प्रकारःप्रचारो वा	पयरो पयारो
प्रहारः	पहरो पहारो	प्रस्तावः	पत्थवो पत्थावो

हे० १--४३

९ श् ष् तथा स् नी साथे पहेला या पछी जोडायेला य् र् व् श् ष् तथा स् नो लोप थया पछी बाकी रहेला श्, ष् तथा स् नी पहेलानो स्वर दीर्घ थाय छे. जेमके—

आवश्यकं	आवासयं	मनश्शिला	मणासिला
विश्राम्यति	वीसमइ	शिष्यः	सीसो
अश्वः	आसो	वर्षः	वासो
विश्वसिति	वीससइ[१]	कस्यचित्	कासइ
दुश्शासनः	दूसासणो	निस्सहः	नीसहो

हे. १–८४.

१० जोडाक्षरनी पूर्वे दीर्घस्वरनो ह्रस्व थाय छे. जेमके—

आम्रम्	अंबं	गुरूल्लापाः	गुरुल्लावा
ताम्रम्	तंबं	चूर्णः	चुण्णो
विरहाग्निः	विरहग्गी	नरेन्द्रः ए+इ	नरिन्दो
आस्यम्	अस्सं	म्लेच्छः ^ ^	मिलिच्छो
मुनीन्द्रः	मुणिन्दो	अधरोष्ठः	अहरुट्ठं
तीर्थम्	तित्थं	नीलोत्पलं	नीलुप्पलं

१ क्वचित् नथी थतो, जेमके—राओ (रागः)

२ ष् तथा श् संस्कृतनी अपेक्षाए समजवा.

हे. १-८५.

११ जोडाक्षरनी पूर्वे आदि इकारनो प्राय: विकल्पे एकार थाय छे. जेमके—

पिण्डम्	पेण्डं	पिण्डं	विष्णुः	वेण्हू	विण्हू
धम्मिल्लम्	धम्मेल्लं	धम्मिल्लं	पिष्टम्	पेट्टं	पिट्टं
सिन्दूरम्	सेन्दूरं	सिन्दूरं	बिल्वं	बेल्लं	बिल्लं

हे. १-११६.

१२ जोडाक्षरनी पूर्वे आदि उकारनो ओकार थाय छे, जेमके—

तुण्डम्	तोण्डं	मुस्ता	मोत्था
मुण्डम्	मोण्डं	मुद्गरः	मोग्गरो
पुष्करम्	पोक्खरं	पुद्गलम्	पोग्गलं
कुट्टिमम्	कोट्टिमं	कुण्ठः	कोण्ठो
पुस्तकः	पोत्थओ	कुन्तः	कोन्तो
लुब्धकः	लोद्धओ	व्युत्क्रान्तम्	वोक्कन्तं

हे. १-१३. १-९३. १-११५.

१३ निर् तथा दुर् उपसर्गना रेफनो [illegible] लोप थाय छे अने लोप थाय छे त्यारे निर् ना इ नो विल्प, तथा दुर् ना उ नो विकल्पे दीर्घ थाय छे. जेमके—निस्सहं नीसहं [निस्सहम्] दुस्सहो दूसहो दुसहो [दुस्सहः].

हे. १-१२६. १-१४८. १-१५९.

१४ आदि ऋ नो अ, ऐ नो ए अने औ नो ओ थाय छे, जेमके—

[illegible] क्वचित् नथी थतो जेमके—चिन्ता

हे० १--६८.

८ घञ् नैमित्तिक वृद्धिथी थयेला आकारनो प्राय: विकल्पे अ थाय छे. जेमके--

प्रवाह:	पवहो पवाहो	प्रचार:	पयारो वा पयारो पयारो
प्रहार:	पहरो पहारो	प्रस्ताव:	पत्थवो पत्थावो

हे० १--४३

९ श् ष् तथा स् नी साथे पहेला या पछी जोडायेला य् र् व् श् ष् तथा स् नो लोप थया पछी बाकी रहेला श्, षं तथा स् नी पहेलानो स्वर दीर्घ थाय छे. जेमके—

आवश्यकं	आवासयं	मनश्शिला	मणासिला
विश्राम्यति	वीसमइ	शिष्य:	सीसो
अश्व:	आसो	वर्ष:	वासो
विश्वसिति	वीससइ	कस्यचित्	कासइ
दुश्शासन:	दूसासणो	निस्सह:	नीसहो

हे० १--८४.

१० जोडाक्षरनो पूर्व दीर्घस्वरनो ह्रस्व थाय छे. जेमके—

आम्रम्	अंबं	गुरूल्लापा:	गुरुल्लावा
ताम्रम्	तंबं	चूर्ण:	चुण्णो
विरहाग्नि:	विरहग्गी	नरेन्द्र: ए+इ	नरिन्दो

अन्तरात्मा	**अंतरप्पा**	**दुरुत्तरम्**	**दुरुत्तरं**
निरन्तरम्	**निरंतरं**	**दुरवगाहम्**	**दुरवगाहं**
निरवशेषम्	**निरवसेसं**		

हे० १-१७७.

२४ स्वर थकी पर अनादि तथा असंयुक्त क् ग् च् ज् त् द् प् य् व् नो प्रायः लोप थाय छे. जेमके—

१ क्वचित् लोप नथी थतो. जेमके—

सुकुसुमम्	सुकुसुमं	सुतारम्	सुतारं
प्रयागजलम्	पयागजलं	विदुरः	विदुरो
सुगतः	सुगओ	सपापम्	सपावं
अगरुः	अगरु	समवायः	समवाओ
सचापम्	सचावं	देवः	देवो
विजनम्	विजणं	दानवः	दाणवो

क्वचित् आदिमां पण लोप थाय छे. जेमके—

स पुनः	स उण	चिह्नम्	इन्धं
स च	सो अ		

समासमां उत्तरपदनी आदिमां रहेला क् ग् च् इत्यादि नो विकल्पे लोप थाय छे. जेमके—

सुखकरः	सुहकरो	सुहयरो	बहुतरः	बहुतरो बहुअरो
जलचरः	जलचरो	जलयरो	सुखदः	सुहदो सुहओ

क्वचित् च् नो ज् थाय छे. जेमके— पिसाजी (पिशाची)

क्वचित् क् नो ग् थाय छे. जेमके—

	एगत्तं	श्रावकः	सावगो
	एगो	आकारः	आगारो
	अमुगो	आकर्षः	आगरिसो

हे॰ १-१५.

२० (विद्युत् सिवायना) स्त्रीलिंग शब्दोना अन्त्य व्यंजननो आ थाय छे. जेमके—

सरित्	सरिआ	सम्पद्	संपआ
प्रतिपद्	पाडिवआ	विद्युत्	विज्जू

हे॰ १-१५.

२१ स्त्रीलिंग शब्दोना अन्त्य र् नो रा थाय छे. जेमके—

गिर्	गिरा	पुर्	पुरा
धुर्	धुरा		

हे॰ १-१६.

२२ संस्कृतना अकारथी पर असहित विसर्गनो प्राकृतमां ओ थाय छे. जेमके—

सर्वतः	सव्वओ	पुनः	पुणो
पुरतः	पुरओ	ततः	तओ
अग्रतः	अग्गओ	कुतः	कुदो
मार्गतः	मग्गओ		

हे॰ १-१२, १-१४.

२३ अन्त् उद् अने स्वर छे पर जेने एवा अन्तर्, निर् अने दुर् एटलाना अन्त्य व्यंजननो लोप न थतो. जेमके—

अद्धिनम	[illegible]	उद्गतम	उग्गयं
अद्धा	[illegible]	उन्नतम्	उन्नयं

१ क्वचित् था [illegible]

२ क्वचित् लोप [illegible] जेमके—[illegible]

अन्तरात्मा	अंतरप्पा	दुरुत्तरम्	दुरुत्तरं
निरन्तरम्	निरन्तरं	दुरवगाहम्	दुरवगाहं
निरवशेषम्	निरवसेसं		

हे० १-१७७.

२४ स्वर थकी पर [illegible] क् ग् च् ज् त् द् प् य् व् नो प्रायः [illegible] —

---

१ क्वचित् लोप नथी थतो. जेमके—

सुकुसुमम्	सुकुसुमं	सुतारम्	सुतारं
प्रयागजलम्	पयागजलं	विदुरः	विदुरो
सुगतः	सुगओ	सपापम्	सपावं
अगरुः	अगरू	समवायः	समवाओ
सचापम्	सचावं	देवः	देवो
विजनम्	विजणं	दानवः	दाणवो

क्वचित् आदिमां पण लोप थाय छे. जेमके—

स पुनः	स उण	चिह्नम्	इन्धं
स च	सो अ		

समासमां उत्तरपदनी आदिमां रहेला क् ग् च् इत्यादि नो विकल्पे लोप थाय छे. जेमके—

सुखकरः सहकरो सह[illegible]

फ्=भ् तथा ह् (प्रायः)

सफलम् सभलं सहलं	शफरी सभरी सहरी
शेफालिका सेभालिआ सेहालिआ	गुफति गुभइ गुहइ

व्=व्

शबलः सवलो

श् तथा ष्=स्

शब्दः	सद्दो	षण्ढः	सण्ढो
कुशः	कुसो	निकषः	निहसो
शुद्धम्	सुद्धं	शेषः	सेसो

ह्=घ् (विकल्पे[2])

सिंहः सिंघो सीहो | संहारः संघारो संहारो

हे० १-२२९.

२९ असंयुक्त आदि न् नो ण् विकल्पे थाय छे. जेमके—

नरः	णरो	नरो	नदी	णई	नई
नयति	णेइ	नेइ			

---

१ क्वचित् मात्र भ् थाय छे. जेमके—

रेफः रेभो | शिफा सिभा

क्वचित् मात्र ह् थाय छे. जेमके—

मुक्ताफलम् मुत्ताहलं

२ क्वचित् अनुस्वारथी पर न होय तो पण थाय छे. जेमके—

दाहः दाघो

४ द्वित्व

ड्=ल् (प्रायः)

वडवामुखम्	वलयामुहं	तडागम्	तलायं
गरुडः	गरुलो	क्रीडति	कीलइ

न्=ण्

कनकम्	कणयं	वचनम्	वयणं
मदनः	मयणो	नयनम्	नयणं

प्=व् (प्रायः)

उपसर्गः	उवसग्गो	कपिलम्	कविलं
प्रदीपः	पईवो	कपालम्	कवालं
काश्यपः	कासवो	महिपालः	महिवालो
उपमा	उवमा		

---

१ क्वचित् विकल्पे थाय छे. जेमके— | क्वचित् नथी थतो जेः

वडिशम्	बलिसं	बडिसं	निबिडम्	णिबिडं
दाडिमम्	दालिमं	दाडिमं	गौडः	गउडो
गुडः	गुलो	गुडो	पीडितम्	पीडिअं
नाडी	णाली	णाडी	नीडम्	णीडं
नडम्	णलं	णडं	उडुः	उडू
आपीडः	आमेलो	आवेडो	तडित्	तडि

२ क्वचित् नथी थतो. जेमके—

कपिः	कइ	रिपुः	रिउ

कल्पतरुः	कप्पतरू	रक्तः	रग्गो
मूर्खः	मुक्खो	कृत्तिः	क्निी
दष्टः	डक्को	रुक्मी	रुप्पी
यक्षः	जक्खो		

हे० २-९२.

दीर्घ थी पर होय तो?

क्षिप्तः	छूढो	लास्यम्	लासं
निःश्वासः	नीसासो	आस्यम्	आसं
स्पर्शः	फासो	प्रेष्यः	पेसो
पार्श्वम्	पासं	अवमाल्यम्	ओमालं
शीर्षम्	सीसं	आज्ञा	आणा
ईश्वरः	ईसरो	आज्ञप्तिः	आणत्ती
द्वेष्यः	वेसो	आज्ञपनम्	आणवणं

अनुस्वार थी पर होय तो?

त्र्यस्रम्	तंसं	विन्ध्यः	विंझो
सन्ध्या	संझा	कांस्यालः	कंसालो

हे० २-९३.

रेफ तथा हकार होय तो ?

सौन्दर्यम्	सुन्देरं	विह्वलः	विह्लो
ब्रह्मचर्यम्	बम्हचेरं	कार्षापणः	कहावणो
पर्यन्तः	पेरन्तो		

हे० २-९०.

३७ वर्गना बीजा के चोथा अक्षरने द्वित्वनो प्रसंग आवे छे, त्यारे बीजानी पूर्वे वर्गनो पहेलो अक्षर. अने चोथानी

हे० २-७९.

३४ कोईपण जोडाक्षरमां ल् ब् व् तथा र् पहेला के पछी आवता होय तो तेओनो लोप थाय छे. जेमके-

उल्का	उक्का	श्लक्ष्णम्	सण्हं
वल्कलम्	वक्कलं	विक्लवः	विक्कवो
शब्दः	सद्दो	चक्रम्	चक्कं
अब्दः	अद्दो	वर्गः	वग्गो
लुब्धकः	लोद्धओ	ग्रहः	गहो
पक्वम्	पक्कं पिक्कं	रात्रिः	रत्ती
ध्वस्तः	धत्थो		

नोंध—उपला उदाहरणोमां ३६ मा नियमथी द्वित्व थयुं छे.

हे० २-८३.

३५ ज्ञ मांना ञ् नो विकल्पे लोप थाय छे. जेमके—

ज्ञानम्	जाणं	णाणं	मनोज्ञम्	मणोज्ञं	मणोण्णं
सर्वज्ञः	सव्वज्ञो	सव्वण्णू	अभिज्ञः	अहिज्ञो	अहिण्णू
आत्मज्ञः	अप्पज्ञो	अप्पण्णू	प्रज्ञा	पज्ञा	पण्णा
दैवज्ञः	दइवज्ञो	दइवण्णू	आज्ञा	अज्ञा	आणा
इङ्गितज्ञः	इंगिअज्ञो	इंगिअण्णू	संज्ञा	संजा	सण्णा

हे० २-८९.

३६ पदनी आदिमां न होय अने दीर्घ के अनुस्वारथी पर न होय एवा रेफ तथा हकार सिवायना शेष(अवशिष्ट) तथा आदेश व्यंजननुं द्वित्व थाय छे. जेमके—

१ कविना मते भले हैलेहे-निच्चलो (निश्चल)

२ कर्णिकार मते भ. कु. हिलेहे - कणिओ (कृपाः कृष्णोधा)

कल्पतरुः	कप्पतरू	रक्तः	रग्गो
मूर्खः	मुक्खो	कृत्तिः	क्रिची
दष्टः	डक्को	रुक्मी	रुप्पी
यक्षः	जक्खो		

हे- २-९२.

दीर्घ थी पर होय तो?

क्षिप्तः	छूढो	लास्यम्	लासं
निःश्वासः	नीसासो	आस्यम्	आसं
स्पर्शः	फासो	प्रेष्यः	पेसो
पार्श्वम्	पासं	अवमाल्यम्	ओमालं
शीर्षम्	सीसं	आज्ञा	आणा
ईश्वरः	ईसरो	आज्ञप्तिः	आणत्ती
द्वेष्यः	वेसो	आज्ञपनम्	आणवणं

अनुस्वार थी पर होय तो?

त्र्यस्रम्	तंसं	विन्ध्यः	विंझो
सन्ध्या	संझा	कांस्यालः	कंसालो

हे० २-९३.

रेफ तथा हकार होय तो ?

सौन्दर्यम्	सुन्देरं	विह्वलः	विह्लो
ब्रह्मचर्यम्	बम्हचेरं	कार्षापणः	कहावणो
पर्यन्तः	पेरन्तो		

हे० २-९०.

... ३७ वर्गना बीजा के चोथा अक्षरने द्वित्वनो प्रसंग आवे छे, त्यारे बीजानी पूर्वे वर्गनो पहेलो अक्षर. अने चोथानी

पूर्वे बीजो अक्षर आवे छे. जेमके—

व्याख्यानम्	वक्खाणं	यक्षः	जक्खो
व्याघ्रः	वग्घो	अक्षि	अच्छी
मूर्च्छा	मुच्छा	मध्यम्	मज्झं
निर्झरः	निज्झरो	पृष्टिः	पट्ठी
कष्टम्	कट्ठं	वृद्धः	वुड्ढो
तीर्थम	तित्थं	हस्तः	हत्थो
निर्धनः	निद्धणो	आश्लिष्टः	आलिद्धो
गुल्फम	गुप्फं	पुष्पम्	पुप्फं
निर्भरः	निब्भरो	विह्वलः	भिब्भलो

हे० २.९७.

३८ समासमां शेष तथा आदेश व्यंजननुं द्वित्व विकल्पे थाय छे. जेमके—

नदीग्रामः	नइग्गामो	नईगामो
कुसुमप्रकरः	कुसुमप्पयरो	कुसुमपयरो
देवस्तुतिः	देवत्थुई	देवथुई
हरस्कन्दौ	हरक्खन्दा	हरखन्दा
आलानस्तम्भः	आलाणक्खंभो	आलाणखंभो

हे० २.१३, २.१५, २.२१, २.२४, २.२६, २.३०, २.३४, २.४२, २.४५, २.५२, २.५३, २.५७, २.६१, २.६२, २.७४,

---

१ क्वचित् शेष तथा आदेश व्यंजन सिवायनुं पण द्वित्व विकल्पे थाय छे. जेमके—

सपिपासः	सप्पिवासो	सपिवासो	अदर्शनम्	अद्दंसणं	अदंसणं
बद्धफलः	बद्धप्फलो	बद्धफलो	प्रतिकूलम्	पडिक्कूलं	पडिकूलं
प्रमुक्तम्	पम्मुक्कं	पमुक्कं	त्रैलोक्यम्	तेल्लोक्कं	तेलोक्कं

२.७९, २.७६.

३९ नीचे आपेला जोडाक्षरांने नीचे बताव्या प्रमाणे आदेशो थाय छे.

क्ष्=ख्

क्षयः — खओ
लक्षणम् — लक्खणं

स्क् तथा ष्क्=ख्

पुष्करम् — पोक्खरं
निष्कम् — निक्खं
स्कन्धः — खंधो
अवस्कन्दः — अवक्खन्दो

त्य्= च्

सत्यम् — सच्चं
प्रत्ययः — पच्चओ

त्व्= च्

ज्ञात्वा — णच्चा
श्रुत्वा — सोच्चा

थ्व्= छ्

पृथ्वी — पिच्छी

द्व्=ज्

विद्वत् — विज्जं

ध्व्= झ्

बुद्ध्वा — बुज्झा

ह्रस्व थकी पर थ्य्,श्च्,त्स् तथा

प्स्= छ्

पथ्यम् — पच्छं
मिथ्या — मिच्छा
पश्चिमम् — पच्छिमं
पश्चात् — पच्छा
उत्साहः — उच्छाहो
चिकित्सति — चिइच्छइ
जुगुप्सति — जुगुच्छइ
अप्सरा — अच्छरा

द्य्,य्य् तथा र्य्= ज्

वैद्यः — वेज्जो
द्युतिः — जुई
जय्यः — जज्जो
शय्या — सेज्जा
कार्यम् — कज्जं
मर्यादा — मज्जाआ

ध्य् तथा ह्य्= झ्

बध्यते — वज्झए
ध्यानम् — झाणं

---

१ क्वचित् क्ष् नो छ् तथा झ् विशेष थाय छे. जेमके— क्षीणं [illegible] छीणं झीणं

पूर्वे त्रीजो अक्षर आवे छे. जेमके—

व्याख्यानम्	वक्खाणं	यक्षः	जक्खो
व्याघ्रः	वग्घो	अक्षि	अच्छी
मूर्च्छा	मुच्छा	मध्यम्	मज्झं
निर्झरः	निज्झरो	पृष्टिः	पट्ठी
कष्टम्	कट्ठं	वृद्धः	वुड्ढो
तीर्थम्	तित्थं	हस्तः	हत्थो
निर्धनः	निद्धणो	आश्लिष्टः	आलिद्धो
गुल्फम्	गुप्फं	पुष्पम्	पुप्फं
निर्भरः	निब्भरो	विह्वलः	भिब्भलो

हे० २-९७.

३८ समासमां शेष तथा आदेश व्यंजननुं द्वित्व विकल्पे थाय छे. जेमके—

नदीग्रामः	नइग्गामो	नईगामो
कुसुमप्रकरः	कुसुमप्पयरो	कुसुमपयरो
देवस्तुतिः	देवत्थुई	देवथुई
हरस्कन्दौ	हरक्खन्दा	हरखन्दा
आलानस्तम्भः	आलाणक्खंभो	आलाणखंभो

हे० २-१३, २-१५, २-२१, २-२४, २-२६, २-३०, २-३४, २-४२, २-४५, २-५२, २-५३, २-५७, २-६१, २-६२, २-७४,

---

१ क्वचित् शेष तथा आदेश व्यंजन सिवायने पण द्वित्व विकल्पे थाय छे. जेमके—

सपिपासः	सप्पिवासो	सपिवासो	अदर्शनम्	अद्दंसणं	अदंसणं
बद्धफलः	बद्धप्फलो	बद्धफलो	प्रतिकूलम्	पडिक्कूलं	पडिकूलं
प्रमुक्तम्	पम्मुक्कं	पमुक्कं	त्रैलोक्यम्	तेल्लोक्कं	तेलोक्कं

२-७५, २-७६.

३९ नीचे आपेला जोडाक्षरोने नीचे बताव्या प्रमाणे आदेशो थाय छे.

क्ष्=ख्

क्षयः	खओ
लक्षणम्	लक्खणं

स्क् तथा ष्क्=ख्

पुष्करम्	पोक्खरं
निष्कम्	निक्खं
स्कन्धः	खंधो
अवस्कन्दः	अवक्खन्दो

त्य्= च्

सत्यम्	सच्चं
प्रत्ययः	पच्चओ

त्व्= च्

ज्ञात्वा	णच्चा
श्रुत्वा	सोच्चा

थ्व्= छ्

पृथ्वी	पिच्छी

द्व्=ज्

विद्वत्	विज्जं

ध्व्= झ्

बुद्ध्वा	बुज्झा

ह्रस्व थकी पर थ्य्,श्च्,त्स् तथा प्स्= छ्

पथ्यम्	पच्छं
मिथ्या	मिच्छा
पश्चिमम्	पच्छिमं
पश्चात्	पच्छा
उत्साहः	उच्छाहो
चिकित्सति	चिइच्छइ
जुगुप्सति	जुगुच्छइ
अप्सरा	अच्छरा

द्य्,य्य् तथा र्य्= ज्

वैद्यः	वेज्जो
द्युतिः	जुई
जय्यः	जज्जो
शय्या	सेज्जा
कार्यम्	कज्जं
मर्यादा	मज्जाआ

ध्य् तथा ह्य्= झ्

वध्यते	वज्झए
ध्यानम्	झाणं

१ क्वचित् क्ष् नो छ् तथा झ् विशेष थाय छे. जेमके— क्षीणं छीणं झीणं

सना करनार, श्रावक
२१ णियम (नियम)-कायदो, मर्यादा
२२ समण (श्रमण)-साधु
२३ गुण (गुण)-गुण.
२४ णर (नर)-माणस.

बोधपाठ २ जो.

(धातुविभक्ति.)

वर्तमानकालना प्रत्ययो.

पुरुष.	एकवचन.	बहुवचन.
प्रथम	इ (ए)	न्ति, न्ते, इरे.
मध्यम	सि (से)	इ, इत्था.
उत्तम	मि	मो, मु, म.

१. संस्कृतना व्यंजनांत धातुओ प्राकृतमां अकारान्त थने छे.
२. अकारान्त धातुओ पछी प्रथम तथा मध्यम पुरुषोना एकवचनना प्रत्ययो इ तथा सि ना अनुक्रमे ए तथा से थाय छे.

सूचना—

१. परस्मैपद तथा आत्मनेपदना खास जुदा प्रत्ययो नथी. जोके अकारान्त धातुओना ए तथा से प्रत्ययोने अने न्ते, इरे, इत्था विगेरेने आत्मनेपदना प्रत्ययो तरीके गणीए तो गणी शकाय. पण शिष्ट प्रयोगोमां घूा ' खास नियम राखवामां नथी आव्यो, किन्तु परस्मैपदी धातुओने पण अं० प्रत्ययो लागेल जोवामां आवे छे, तेथी आ प्रत्ययो परस्मैपद तथा ~ उभयने साधारण छे.

तृ० ... नुं कोई गणकार्य विशिष्ट थतुं नथी, तेथी गणविभाग दर्शा-
पं०

... तथा इत्था, ए अने प्रत्ययो कात्यायनप्रणीत प्राकृत-
प०

[illegible]

भविष्यकाल, आज्ञार्थ, विध्यर्थ, तथा
[illegible] त्तना प्रत्ययोनी पूर्वना अकारनो विकल्पे एकार
[illegible]

[illegible] तम पुरुषना म प्रत्ययनी पूर्वना अकारनो विकल्पे
[illegible]कार थाय छे.

२. उत्तम पुरुषना [illegible], मु तथा म प्रत्ययोनी पूर्वना आकारना
विकल्पे आकार तथा इकार थाय छे.

धातुओ—

गच्छ (गम्) जवुं, गमन करवुं.	वय (वद्) बोलवुं, कहेवुं
	वस (वस्) वसवुं, रहेवुं
पड (पत्) पडवुं. [illegible]	लह (लभ्) पामवुं, मेलववुं.
वुज्झ (बुध्) जाणवुं, समजवुं.	पढ (पठ्) भणवुं, पाठकरवो.
रक्ख (रक्ष्) रक्षण करवुं पालवुं, संभाल करवी.	वड्ढ (वृध्) वधवुं.
	अइच्छ—दे० जवुं, गम[illegible]नो.

वाक्यो.

१ पिआ पुत्तं पीईए रमावेइ । २ पिउणा सह पुत्तो कीडइ ।३णत्थि ईसरो लोअस्स कत्तारो। ४जीवो कम्माणं कत्ता अत्थि । ५ भाअराणं बलेणं णिवो जुज्झइ । ६ माआए उच्छंगे बालो चिट्ठइ । ७ माआओ पुत्तम्मि मिव जामाय-म्मि वि पीइं धरन्ति । ८ देवरो भाउजायाए सह किलेसं कुणइ । ९. अलाहि माअराए सह किलेसेणं । १० एवं पुण केणो कुणसि । ११ अज्जुणा चेअ पिउस्स गिहे गच्छइ । १२ एत्ताहे चिअ णणंदा आगच्छइ । १३ मोरउल्ला खेअं मा कुणसु । १४ माअराओ गिहत्तो बाहिं गच्छन्ति । १५ मेघावईए हिर जयंती णणंदा । १६ उदायणो चेडगस्स ण-त्तुओ जयन्तीए किल भत्तिज्जओ अत्थि । १७ जयंती सह-स्साणीयस्स धूया, सयाणीयस्स भगिणी, उदायणस्स पिउ-च्छा अत्थि । १८ मियावई जयन्तीए भाउज्जा हवइ । १९. अण्णीए सह णाहं किलेसं कुणामि ।

—————

न्ति । ८ अह महिला सव्वम्मि कज्जम्मि सुणिउणा अत्थि। ९. अह जणो सया चेअ परमत्थस्स कज्जाणि कुणइ । १० अह फलं भत्तहरिणा पिंगलाए हत्थम्मि दिण्णं । ११ इमिआ गणिआ जुवाणाणं धणं हरइ । १२ अमु अमू कोसिआस्स रण्णो साहज्जं करेइ । १३ इमस्सि जुद्धे कोणिओ णरिन्दो जयइ । १४ इह भवे कओ धम्मो परभवम्मि सुहं देइ । १५ इमो बालो से जणस्स लहू भाया हवइ । १६ एत्तो जणाओ तुमं ण सुहं लहीअ । १७ ईअम्मि ठाणे बहवो राआणो रज्जं कुणीअ । १८ अमुस्सि गामम्मि कइ सच्चवाइणो हवन्ति ? । १९. एत्ताहे अहिअं किं णाम दुहं हवइ? । २० एएण पसंगेण णेण इणं कहिअं । २१ इमस्सि मग्गे बहवो कंटआ हवन्ति । २२ अमुणा दिट्ठो एअं पुरिसं णिरिक्खइ । २३ अयं पत्तट्ठोवि परज्झो अत्थारिओ किं चिंतेइ ? ।

बोधपाठ १६ मो.

(धातु विभक्ति–चालु)

भविष्यकालना प्रत्ययो.

एकवचन.	बहुवचन.
हिइ, हिए.	हिन्ति, हिन्ते, हिरे.
हिसि, हिसे.	हित्था, हिह.
हिमि, स्सामि, हामि, स्सं.	हिमो, स्सामो, हामो, हिमु, स्सामु, हामु, हिम, स्साम, हाम, हिस्सा, हित्था.

१. भविष्यकालना प्रत्ययोनी पूर्वे धातुना अन्त्य अकारनो इकार अने एकार थाय छे.

उदाहरण– पढ (पठ्) धातुनां रूपो.

	एकवचन.	बहुवचन.
प्र०	पढिहिइ-ए.	पढिहिन्ति-इ०
म०	पढिहिसि-से.	पढिहित्था-इ०
उ०	पढिहिमि, पढिस्सामि, पढिहामि, पढिस्सं,	पढिहिमो-मु-म-, पढिस्सामो-मु-म. पढिहामो-मु-म. पढिहिस्सा, पढिहित्था.

एकार पक्षे— पढेहिइ इत्यादि.

कर्मणि— पढीअहिइ इ०

प्रेरणा— पढावेहिइ इ०

हो (भू) धातुनां

म० होहिसि-से. होहित्था, होहिह.

उ० { होहिमि, होहिमो-मु-म.
होस्सामि, होस्सामो-मु-म.
होहामि, होहामो-मु-म.
होस्सं, होहिस्सा, होहित्था.

भावे— होइज्जहिइ इत्यादि.

प्रेरणा— होआवेहिइ इ०

२. नीचे बतावेला आदेशो मात्र भविष्यकालमां ज थाय छे. तेम थाय छे त्यारे भविष्यकालना प्रत्ययोमांनो 'हि' विकल्पे लोपाय छे, अने उत्तम पुरुषना एकवचन तरीके एक अनुस्वार वधारे थाय छे.

आदेश रूप धातुओ

सोच्छ (श्रु) सांभलवुं.	रोच्छ (रुद्) रोवुं, रडवुं.
वेच्छ (विद्) जाणवुं.	दच्छ (दृश्) जोवुं, देखवुं.
मोच्छ (मुच्) मुकवुँ, छोडवुं.	वोच्छ (वच्) बोलवुं, कहेवुं.
भोच्छ (भुज्) खावुं, भोगववुं.	भेच्छ (भिद्) भेदवुं.
छेच्छ (छिद्) छेदवुं.	

उदाहरण— सोच्छिइ, सोच्छिहिइ (श्रोष्यति)इत्यादि.

उत्तमपुरुष—सोच्छं,सोच्छिमि,सोच्छिहिमि,सोच्छिस्सामि सोच्छिहामि, सोच्छिस्सं (श्रोष्यामीत्यर्थः)

३. कृ अने दा धातु थकी उत्तम पुरुषना एकवचन तरीके एक हं प्रत्यय वधारे थाय छे.

४. [illegible] भूतकालना प्रत्ययो ने योगे कृ धातुने का

काहिमो, कास्सामो इत्यादि. एवं दाहिइ, दा दाहिमि, दास्सामि, इत्यादि.

शब्दो.

महापुरिस (महापुरुष) पु० महात्मा पुरुष..

संग (सङ्ग) पु० सोबत, सहवास संगीत

गहण (गहन) न० कठिन, व्याकरं.

सुपत्त (सुपात्र) न० सत्पात्र

उचिअ (उचित) वि० योग्य, लायक.

सोरट्ठ (सौराष्ट्र) सोरठ देश.

अत्तवयण (आप्तवचन) न० प्रामाणिक वचन-

अज्झत्थ (अध्यात्म) न० आत्मतत्त्व संबंधी.

इट्ठ (इष्ट) वि० इच्छित, प्रिय.

अकज्ज (अकार्य) न० नकर्तव्य

णासिआ (नासिका) स्त्री० नाक.

जीहा (जिह्वा) स्त्री० जीभ.

कण्ण (कर्ण) पु० कान.

कयन्न (कदन्न) न० खराब अन्न.

दव्व (द्रव्य) न० द्रव्य.

मंस (मांस) न० मांस.

मइरा (मदिरा) स्त्री० दारु.

तप्परिणाम (तत्परिणाम) पु० तेनुं परिणाम.

(मात्र) वि०

(भयं

पटेल.

मच्चु (मृत्यु) पु० मृत्यु, मोत.

उदअ (उदय) पु० प्रादुर्भाव, चडती.

जम (यम) पु० परमाधामी, जम.

उज्जम पु० (दे०) उद्यम.

अड्ढिल त्रि० (दे०) धनवान्.

पुच्छ (पृच्छ्) धा० पुछवुं, प्रश्न करवो.

चल (चल्) धा० चालवुं.

अव्ययो.

तहवि (तथापि) तो पण.

अईव (अतीव) अत्यन्त, घणुंज.

णिच्च (नित्य) हमेश, सदा.

एत्थ (अत्र) अहिं.

वाक्यो.

१ अयं जणो महापुरिसाणं संगेण महापुरिसो होहिइ। २ इमे साहूणं सगासे गहणाणि सत्थाणि पढिहिन्ति। ३ तुमं एत्थ ठाउण किं काहिसि। ४ ते सुपत्तम्मि उचिअमसं दाहिन्ति। ५ अहं गुरुणो दंसणं काउं सोरट्ठं गच्छिमि। ६ वयं हियअसुद्धिं काऊण अत्तवयणाणि सोच्छिहिमो। ७ अहं णिचं अज्झत्थसत्थाणि सोच्छं। ८ तुम्भे अग्गे गच्छइ पुरिसं दच्छिहित्था। ९ जया सेट्ठिणो पुच्छिहिन्ते, अकाऊण कज्जं तुमं किं वोच्छिसि ?। १० अकज्जस्स ...मे पावस्स उदअम्मि तुमं अईव रोच्छिहिसि तहवि ...वि मोच्छिइ। ११ तया तुमं पावस्स फलं वेच्छिहिसि जमा तेहत्थे, पाए, णासिअं, जीहं, कण्णो, छेच्छिहिन्ति। जइ कअं मंसं महरं वा कया वि भोच्छिहिसि तया

तप्परिणामो भयंकरो होहिइ । १३ तुमं चेणीइपहे चलिहिसि तया तव अहं विउलं धणं दाहं । १४ अहम्मं कुणिहिसि चे विरूवं फलं लहिहिसि । १५ जाव धम्मं काहिसि करावेहिसि ताव सुहं समाहिं लहिहिसि । १६ एएसिं पहावेण सअलो किलेसो उवसमिहिइ । १७ इमे सव्वत्थ गामम्मि संघम्मि वा किलेसमुवसमावेहिन्ति । १८ अणेण एसो वच्छो ण भेच्छीअहिइ । १९ एस पट्टइल्लो उज्झसेण अहिह्लो होहिइ.

१तमे धर्मनुं कार्य क्यारे करशो? २ जेने तमे मारो छो, ते तमने मारशे त्यारे तमे रोशो नहीं ? ३ मृत्यु आवशे तो तमने छोडशे नहीं. ४ पैसो के कुटुंब कंईपण साथे आवशे नहि. ५ जो धर्म कर्यो हशे तो तेज साथे आवशे. ६ कोई पण जंतुना प्राण लुंटशो नहीं. ७ कोईने छेदशो, भेदशो तो तमे छेदाशो, भेदाशो. ८ अमे पैसो मेलवी गरीबोने देशुं. ९ तमे पण सुपात्रमां आपशो ? १० अमे हमेश एमनी साथे चालशुं. ११ तेओ परमार्थना कार्यमां घणी मदद अपावशे. १२ कोईनुं पण चोरेलुं द्रव्य खरीदशो नहीं. १३ जेवुं करशो तेवुं पामशो. १४ साधुओ बोध आपशे अने श्रावको धर्मना कार्य करशे. १५ पाप करशो तो तेना उदय थये विपरीत परिणाम जोशो. १६ पैसो मलेतो त्याइ खुशी थशो नहीं पण बीजाने खवरावशो. १७ [illegible] शास्त्र सांभलशो तो आत्मानी शुद्धि थशे.

बोधपाठ १७ मो.

(नाम विभक्ति--चालु.)

* संख्यावाचकशब्दोनां रूपो.

१. संख्यावाचक शब्दो थकी त्रणे लिंगमां षष्ठीना बहुवचन तरीके ण्ह अने ण्हं प्रत्ययो आवे छे. बाकीना पूर्ववत्.

२. प्रथमा तथा द्वितीयाना बहुवचनना प्रत्ययो सहित द्विशब्दने दुवे, दोण्णि, वेण्णि, दो अने वे;॥ त्रिशब्दने तिण्णि॥ चतुर् शब्दने चत्तारि, चउरो अने चत्तारो आदेश त्रणे लिंगमां थाय छे.

३. तृतीयादि विभक्तिओनी पूर्वे त्रिशब्दने ती, अने द्विशब्दने दो तथा वे आदेश त्रणे लिंगमां थाय छे.

४. तृतीया, पंचमी, अने सप्तमीना प्रत्ययो लागतां चउ शब्दनो उकार विकल्पे दीर्घ थाय छे.

उदाहरण—*द्विशब्दनां रूपो

प्र०— दुवे,× दोण्णि, वेण्णि, दो, वे.
द्वि०— ,, ,, ,, ,, ,,
तृ०— दोहिं, वेहिं इत्यादि
पं०— दोहिन्तो, वेहिन्तो इ०
ष०— दोण्ह, दोण्हं, वेण्ह इत्यादि
स०— दोसु, वेसु इ०

---

* संख्यावाचक द्वि आदि शब्दो हमेश बहुवचनान्तज रहे छे-

× नियमावलिनी दशमी कलमथी ह्रस्व थाय छे त्यारे दुण्णि, विण्णि, पण रूपो थाय छे.

णिरवराह (निरपराध) वि० अपराध वगरनो.
सकंकण (सकंकण) वि० कंकण सहित.
सव्वघाइ (सर्वघातिन्) वि० सर्वनो घात करनार.
अज्झप्प (अध्यात्म) न० अध्यात्म, आत्मतत्त्वसंबंधी.
महव्वय (महाव्रत) न० साधुना पंचमहाव्रत.
जीवणिकाय (जीवनिकाय) पु० जीवसमुदाय.
विविह (विविध) वि० नाना प्रकार.
कारागिह (कारागृह) न० केदखानुं.
कम्माआण (कर्मादान) न० श्रावकने वर्जनीय आचार.
समप्पणीय (समर्पनीय) सोंपवा लायक.
अंगुलि (अंगुलि) स्त्री० आंगळी.
विणा (विना) अ० वगर.
करडा स्त्री० (दे०) मसरो.
विरह (विरह) पु० वियोग.

पक्खल (पक्ष्मन्) पु० पांप.
रम्म (रम्य) वि० रमणीक.
दुहिआ (दुःखिता) स्त्री० दु[illegible]
पहु (प्रभु) पु० समर्थ.
पत्त (पात्र) न० पातरु, ना[illegible] डानुं ठाम
गइ (गति) स्त्री० नरक आदि गति.
किरिआ (क्रिया) स्त्री० अनु[illegible]ष्ठान.
जोणि (योनि) स्त्री० उत्पत्ति स्थान.
बीभच्छ (बीभत्स) वि० निन्द्य.
रूवग (रूपक) न० रूपीआ.
विभाअ (विभाग) पु० जुदा भाग.
कमलावई वि० नां० कमलावती आ नामनी एक सती.
मज्झ (मध्य) अ० मांही.
पंखुडिआ स्त्री० (दे०) पांखडी

धातुओ

दंड (दंड्) दंडवुं.	मारि (मृ+णि) मारवुं
खम (क्षम्) खमवुं, सहनता राखवी.	भम (भ्रम्) भमवुं, फरवुं
सम्+तूस (सं+तुष्) संतोष पामवुं.	सोह (शुभ्) शोभवुं.
मण (मन्) मानवुं, कबूल करवुं.	वट्ट (वृत्) वर्तवुं, रहेवुं.

वाक्यो—

१ उभ्य दुवे वम्हणा एत्थ चिट्ठन्ति। २दोहिं पक्खेहिं पक्खी उड्डेइ। ३ पुरिसस्स दोण्णि हत्था वेण्णि पाआ एगं मुहमत्थि। ४ अस्स दो णेत्ताणि वे कण्णा रम्मा अत्थि। ५ इमो णिवो थावराइं णिरवराइं वा दुवे दंडेइ। ६ चंडालो कमलावईए दोण्णि हत्थे सकंकणे छिन्दीअ। ७ वेहिं हत्थेहिं विणा त्ता अईव दुहिआ होसी। ८रामलक्खमणाणं दोण्हं भाअरा- णमईव पीई होही। ९ स चिरं चऊसु गईसु जिणहं जोणी- सु भमीअ। १० देसहिं सएहिं सहस्सेसुम्मि जाव१ अम्मो त अप्पणो चेअ बीभच्छं कज्जं काऊण-मीअहिइ पडीअ। १२ पंच पुरिसा जं वयन्ति तं सचं। १३ अ...इं मिणमकज्ज कज्जं। १४ दोसु मज्झे एगो एगस्स विरहं खा... ण पइ। १५ साहुणं सगासे तिण्णि पत्ताणि वट्टन्ते। १६सा एसो खु तिण्णि मोअए मुहे णिक्खिवइ। १७ ... पुरिसेहिं ... मो वणम्मि मारिओ। १८चत्तारो गईओ ... कसाआ चत्तारि सव्वघाइकम्माणि अत्थि। १९ जा किरिआ चउरो ... ई साहेइ सा ण अज्झप्पकिरिआ। २० जो चत्तारो कसाए

शब्दो.

सोह (स्नेह) पु० प्रेम, प्रीति.
दया (दया) स्त्री० दया, अनुकंपा.
लज्जा(लज्जा) स्त्री० लाज, शरम.
ईसा (ईर्ष्या) स्त्री० अदेखाई.
समिद्धि (समृद्धि) स्त्री० वैभव, ऋद्धि.
कुलीण (कुलीन) वि० खानदान.
कुरूव (कुरूप) वि० बदरूपुं.
अलंकार (अलंकार) पु० घरेणां, दागीना.
विज्जा (विद्या) स्त्री० ज्ञान, भणतर.
सोहा (शोभा) स्त्री० शोभा, सुंदरता.
रसाल (रसाल) वि० रसयुक्त, रस वालुं.
रस (रस) पु० स्वाद. (२) स्वाद युक्त प्रवाही पदार्थ.
पवण (पवन) पु० पवन. (२) ते नामनो एक राजा.
हणुमन्त (हनुमत्) पु० हनुमान, पवन राजानो पुत्र.
घास (ग्रास) पु० कोळीओ.
गामिल्ल (ग्राम्य) वि० गामडीओ.
पुरिल्ल (पुरी) वि० शहेरी.
अप्पुल्ल (आत्मिक) वि० आत्मिक, आत्मसंबंधी.
आणंद (आनंद) पु० आनंद.
भत्त (भक्त) पु० सेवक, भक्त.
सिरि (श्री) स्त्री० लक्ष्मी, धन. (२) शोभा, कांति.
वित्त (वित्त) न० पैसो, लक्ष्मी.
गव्व (गर्व) पु० मद, अभिमान.
आइच्च (आदित्य) पु० सूर्य.
किरण (किरण) पु० किरण.
मिउ (मृदु) वि० कोमल.
वल्लह (वल्लभ) वि० प्रिय, वहालुं.
उ (तु) अ० तो.
पिंजर (पिंजर) न० पांजरुं.
गयणअ (गगन) न० आकाश.
दिणअ (दिन) न० दिवस.
रत्तिआ (रात्रि) स्त्री० रात्रि.
पल्लव (पल्लव) पु० कोमल पत्र.

माता अने बहेननी पेठे माने छे. ११ अमे गामडीआनी साथे वसीए छीए. १२ ज्यां कोई मना न करे त्यां अमे वसीए छीए. १३ गुरुभक्तिवान् माणस आत्मिक आनन्द मेलवे छे.

बोधपाठ २१ मो.

१. द्वि शब्द तथा नि उपसर्गना इनो प्रायः उ थाय छे. * जेमके—

द्विविधः दुविहो। निमज्जति णुमज्जइ।
निमग्नः णुमन्नो।

उप उपसर्गनो विकल्पे ऊ तथा ओ थाय छे. जेमके—

उपहसितम् ऊहसिअं, ओहसिअं, उ। अं
उपाध्यायः ऊज्झाओ, ओज्झाओ स्वर विक-
उपवासः ऊआसो, ओआसो

अव तथा अप उपसर्गनो अने विकल्पार्थक उत अव्ययनो प्रायः विकल्पे ओ थाय छे × जेमके

* क्वचित् विकल्पे थाय छे. जेमके—

द्विगुणः दुउणो, बिउणो। द्वितीयः दुइओ बिइओ.

क्वचिन् नथी थतो. जेमके— द्विओ (द्विजः)

× क्वचित् नथी थतो. जेमके—

अवगतं अवगयं। अपशब्दः अवसद्दो। उतरविः उअरवी.

सअहुत्तं तस्स कहिअं तह, वि मएणड्ता स जणा ह
मणइ । १० अहो इमस्स अअस्स जव भक्खणेण पीणिण
११ अस्स दीणस्स गोवच्छस्स उ किलामइ वि ण वि
हं । १२ एगत्तो धम्मिणो धम्मोवएसं कुणन्ति, अह
अहम्मिणो अहम्मं कुणन्ति, एत्थ को जं लिहइ । १३ जी
वाणिआ वसन्ति तहि तस्स गिहमत्थि । १४ अम्ह भमिरो याव
अम्हकेरं वयणं ण मणइ । १५ स णामिट्ठो
कहाए किं जाणइ? । १६ आपुट्ठो आणंदो जाव ण जा
जइ, नाव अन्नेसु विसयसुहेसु जणा रंजन्ति । १७ पि
अम्मि ठिओ पक्खी गयणअम्मि उड्डेउमिच्छइ । १
दिणअम्मि भुंजन्ति, रत्तिआए कयावि ण
पभाअम्मि आइच्चकिरणे हि तम्मो पहुविट्ठा
२० स हत्थुल्लेहिं मुहुल्लमाच्छाएऊण भयाओ कंपइ ।
अहो अस्स हिययस्स केरिसं मिउत्तत्तं अणेण स
हाहीअ । २२ धणवंताणं गेहेसु पंडिआ वि किंकरव्व
२३ पावस्स पहणे जाणंवि इमो अवज्जं न कुणइ

माहप्प (माहात्म्य) पु० न० माहात्म्य.

लुम्बी ( ) स्त्री० द्राक्ष विगेरे फलनी लुम.

संरम्भ (संरम्भ) पु० आटोप सूर्यना किरणोनो विस्तार.

दोवारिअ (दौवारिक) पु० द्वारपाल.

कयली (कदली) स्त्री० केल.

पहिअ (पथिक) त्रि० मुसाफर.

भसल ( ) पु० भमरो.

मिहुण (मिथुन) न० संयोग.

कंचणार (काञ्चनार) पु० कोविदार नामनुं झाड़

लच्छी (लक्ष्मी) स्त्री० लक्ष्मी.

मालारी (मालाकारी) स्त्री० मालण.

लवली (लवली) स्त्री० लता-विशेष.

केअई (केतकी) स्त्री० केतकी.

चीरी (चीरि) स्त्री० तमरं.

उच्चिणिरी (उच्चेत्री) स्त्री० वीणनारी.

धीवर (धीवर) पु० माछी.

बब्बर (बर्बर) त्रि० जंगली, मूर्ख.

मिलाण (म्लान) त्रि० कर-माइ गएल.

दरवलिअ ( ) त्रि० भोगवाएल.

पुलइअ (पुलकित) त्रि० रोमांचित थएल.

विलया (वनिता) स्त्री० स्त्री.

पयट्ट (प्रवृत्त) त्रि० प्रवृत्त थ-एल.

दक्खरस (द्राक्षारस) पु० द्राक्षनो रस.

पसविर (प्रसवशील) त्रि० उत्पादक.

उम्मीलण (उन्मीलन) त्रि० व्यक्त करनार.

लय (लय) पु० साम्यावस्था.

चुलुक्क (चौलुक्य) पु० चौ-लुक्य वंश.

जाइ (जाति) स्त्री० जाइना फूल.

विहि (विधि) पु० ब्रह्मा.

गिम्हसिरी (ग्रीष्मश्री) स्त्री० उन्हालानी ऋतुनी शोभा.

जिम्— जिम्म ।
लग्— लग्ग ।
मग्— मग्ग ।
कुप्— कुप्प ।
नश्— नस्स ।
अट्— अट्ट ।
लुट्— लोट्ट ।
तुट्— तुट्ट ।
नट्— नट्ट ।

स्फुट्— फुट्ट, फुट्ट ।
चल्— चल्ल, पक्षे चल ।
प्र+मिल्— पमिल्ल, पक्षे पमील ।
नि+मिल्— निमिल्ल, पक्षे निमील ।
सम्+मिल्— संमिल्ल, पक्षे संमील ।
उद्+मिल्— उम्मिल्ल, पक्षे उम्मील ।

शब्दो.

जस (यशस्) पु० यश, कीर्ति.
जम्म (जन्मन्) पु० जन्म, उत्पत्ति स्थान.
पाउस (प्रावृष्) पु० चोमासुं.
सरअ (शरत्) पु० शरद ऋतु.
तरणि (तरणि) पु० सूर्य.
महिम (महिमन्) पु० स्त्री० गौरव.
अंजलि (अञ्जलि) पु० स्त्री० हथेली.
निहि (निधि) पु० स्त्री० भंडार.
नयण (नयन) पु० न० आंख.
वयण (वचन) पु० न० वचन.

गुण (गुण) पु० न० गुण.
देव (देव) पु० न० देव.
अच्छि (अक्षि) पु० स्त्री० न० आंख.
दाम (दामन्) न० माला.
सिर (शिरस्) न० माथुं.
नह (नभस्) न० आकाश.
सेय (श्रेयस्) न० श्रेय, सारुं.
वय (वयस्) न० उमर.
सुमण (सुमनस्) न० पुष्प.
सम्म (शर्मन्) न० सुख.
चम्म (चर्मन्) न० चामडी.
निकिट्ठ (निकृष्ट) वि० अधम.

माहप्प (माहात्म्य) पु० न० माहात्म्य.

लुम्बी ( ) स्त्री० द्राक्ष विगेरे फलनी लुम.

संरम्भ (संरम्भ) पु० आटोप सूर्यना किरणोनो विस्तार.

दोवारिअ (दौवारिक) पु० द्वारपाल.

कयली (कदली) स्त्री० केल.

पहिअ (पथिक) त्रि० मुसाफर.

भसल ( ) पु० भमरो.

मिहुण (मिथुन) न० संयोग.

कंचणार (काञ्चनार) पु० कोविदार नामनुं झाड

लच्छी (लक्ष्मी) स्त्री० लक्ष्मी.

मालारी (मालाकारी) स्त्री० मालण.

लवली (लवली) स्त्री० लता-विशेष.

केअई (केतकी) स्त्री० केतकी.

चीरी (चीरि) स्त्री० तमरुं.

उच्चिणिरी (उच्चेत्री) स्त्री० वीणनारी.

धीवर (धीवर) पु० माछी.

बब्बर (बर्बर) त्रि० जंगली, मूर्ख.

मिलाण (म्लान) त्रि० करमाइ गएल.

दरवलिअ ( ) त्रि० भोगवाएल.

पुलइअ (पुलकित) त्रि० रोमाचित थएल.

विलया (वनिता) स्त्री० स्त्री.

पयट्ट (प्रवृत्त) त्रि० प्रवृत्त थएल.

दक्खरस (द्राक्षारस) पु० द्राक्षनो रस.

पसविर (प्रसवशील) त्रि० उत्पादक.

उम्मीलण (उन्मीलन) त्रि० व्यक्त करनार.

लय (लय) पु० साम्यावस्था.

चुलुक्क (चौलुक्य) पु० चौलुक्य वंश.

जाइ (जाति) स्त्री० जाइना फूल.

विहि (विधि) पु० ब्रह्मा.

गिम्हसिरी (ग्रीष्म) स्त्री० उन्हालानी ऋतुनी शोभा.

गाथाओ.

लंबंतलुम्बि रंभारम्भियतोरणनिरुद्धसंरंभो । केला
सरएवि पाउसम्मिव न जत्थ दीसइ फुडो तरणी ॥ १ ॥
जत्थ चुलुक्कनिवाणं परिमलजम्मो जसो कुसुमदामं ।
नहम् इव सव्वगओ दिसरमणीण सिराइँ सुरहेइ ॥ २ ॥
सव्ववयाणं मज्झिमवयंव सुमणाण जाइसुमणं व ।
सम्माण मुत्तिसम्मंव पुहइनयराण जं सेयं ॥३॥
चम्मं जाण न अच्छी गाणं अच्छीइँ ताणवि मुणीण ।
विअसन्ति जत्थ नयणा किं पुण अन्नाण नयणाइं ? ॥ ४ ॥
गुरुणो वयणा वयणाइँ ताव महप्पम् अवि य माहप्पो ।
ताव गुणाइंपि गुणा जाव न जरिसं बुहे निअइ ॥ ५ ॥
हरिहरविहिणो देवा जत्थन्नाइँवि वसन्ति देवाइं ।
एयाए महिमाए हरिओ महिमा सुरपुरीए ॥ ६ ॥
जत्थक्खलिणा कणयं रयणाइँवि अक्खलीइ देइ जणो ।
कणयनिही अक्खीणो रयणनिही अक्खया तहवि ॥ ७ ॥

कु० च० प्रथमे सर्गे २१-२७.

× × × × ×

तं निवपुच्छिअदोवारिएण भणिअं ति आम गिम्हसिरी अ० ५
उगहेह सीअलाणवि कयलिवणे पेच्छ पुणरुत्तं ॥ ८ ॥
"हन्द विदेसो ! जीवइ हन्दि पिआ? हन्दि किं पिआ मुक्का?।
हन्दि मरणं जम्मो गिम्हो हन्दि" लवन्ति इअ पहिआ ॥९॥
"हन्द महु हन्दि परिमलम् इमं"व्व भणिरेहि भसलमिहुणेहि
उअ सहइ कक्षणारो मउडो इव गिम्ह लच्छीए ॥ १० ॥
...णणिं मिव धूमंपिव नत्तिविअ सोअरं विव सहिंव ।

धातुओ.

वि+अस (वि+कस्) विकास पामवुं. विकसित होना

आदेश निअ (दृश्) जोवुं. देखना

सुरह (सुरभ) ... संगधीत होना ...

अव्ययो.

तं— वाक्योपन्यासना अर्थमां. वाक्य के उपन्यास में

पुणरुत्तं— फरीथीना अर्थमां. फिर से

हन्दि— विषाद, विकल्प, पश्चात्ताप, निश्चय, तथा सत्यना अर्थमां.

हन्द— ले ए अर्थमां. लेना

पचना थले— निर्धारण तथा निश्चयना अर्थमां.

णवरि— आनन्तर्यना अर्थमां. बाद में

वेव्वे— भय, वारण तथा विषादना अर्थमां. रोकना दुःख

वेव्व— आमंत्रणमां.

मामि
हला } सखीना आमंत्रणमां.
हले

दे— संमुखीकरण तथा सखीना ... देख

ऊ— गर्हा, ... निंदा

थू— तिरस्कार ...

हरे— आक्षेप, ... रतिकलह ...

अव्वो— सूचना, ... पश्चात्ताप ...

अइ— संभावनाना ...

वणे— निश्चय, विकल्प, अनुकंपाना ...

मणे— विमर्श ...

अहह— आश्चर्य ...

ह ...

गाथाओ.

लंबंतलुम्मि रंभारम्भियतोरणनिरुद्धसंरंभो ।
सरएवि पाउसम्मिव न जत्थ दीसइ फुडो तरणी ॥ १ ॥
जत्थ चुलुक्कनिवाणं परिमलजम्मो जसो कुसुमदामं ।
नहम् इव सव्वगओ दिसरमणीण सिराइँ सुरहेइ ॥ २ ॥
सव्ववयाणं मज्झिमवयंव सुमणाण जाइसुमणं व ।
सम्माण मुत्तिसम्मंव् पुहइनयराण जं सेयं ॥३॥
चम्मं जाण न अच्छी णाणं अच्छीइँ ताणवि मुणीण ।
विअसन्ति जत्थ नयणा किं पुण अन्नाण नयणाइं ? ॥ ४ ॥
गुरुणो वयणा वयणाइँ ताव महप्पम् अविय माहप्पो ।
ताव गुणाइंपि गुणा जाव न जरिसं वुहे निअइ ॥ ५ ॥
हरिहरविहिणो देवा जत्थन्नाइँवि वसन्ति देवाइं ।
एयाए महिमाए हरिओ महिमा सुरपुरीए ॥ ६ ॥
जत्थसलिणा कणयं रयणाइँवि अखलीइ देइ जणो ।
कणयनिहि अक्खीणो रयणनिही अक्खया तहवि ॥ ७ ॥

कु० च० प्रथमे सर्गे २१–२७.

× × × × ×

तं निवपुच्छिअदोवारिएण भणिअं ति आम गिम्हसिरी
उगहेइ सीअलाणवि कयलिवणे पेच्छ पुणरुत्तं ॥ ८ ॥
"हन्द विदेसो ! जीवइ हन्दि पिआ? हन्दि किं पिआ मुक्का?।
हन्दि मरणं जम्मो गिम्हो हन्दि" लवन्ति इअ पहिआ ॥९॥
"हन्द महु हन्दि परिमलम् इमं" व्व भणिरेहि भसलमिहुणेहि
उअ सहइ कअणारो मउडो इव गिम्ह लच्छीए ॥ १० ॥
पणि मिव धूअंपिव नत्तिविअ सोअरं विव सहिंव ।

मालारीओ सिणेहा नवकञ्चणाकेअइम् उवेन्ति ॥ ११ ॥
जेण अहुल्ला लवली बोलीणा णाइ वसन्तउवलच्छी।
फुल्लं च धूलिकम्बं तेण फुडा चेअ गिम्हसिरी ॥ १२ ॥
फुल्लच सुगन्धचिअ लघाग नोमालिआ घले रम्मा।
जा किर मल्ली जा हर जवा घले ते मवणवाणा ॥ १३ ॥
सुत्ते जणम्मि जोहिर सदो चौरीण सुव्वए णवरि।
णाअइ किल तस्स मिसा णवरि वसन्तस्स गिम्हसिरी ॥१४॥
पहिआ अलाहि गन्तुं अणदइआण कुसलाइँ इह णाइं।
माइँ इह एथ हद्धी इअव्व चौरीहि उल्लविअं ॥ १५ ॥
समुद्दोट्ठि अम्मि भमरे वेव्वेत्ति भणेइ मल्लि उच्चिणिरी।
वारणावेअभएहि भणिउं वेव्वे वयंसेत्ति ॥ १६ ॥
वेव्व सहि चिट्ठसु हला निसीद मामि रम जासि कत्थ हरे।
दे पसिअ किमसि रुट्ठा ? हुं गिण्हसु कणयभायणयं ॥१७॥
हूं तुह पिओ न आओ ? हुं किं तेणज्ज ? सो हु अण्ण रओ।
तुमयं खु माणइत्ता तस्स हु जुग्गा सि सा खु न तं ॥१८॥
सहि थव्वरो खु अह धीवरो हु एसो खु तुज्झ ऊ रमणो।
ऊ इअ हसेइ लोओ इमम्मि ऊ किं मए भणिअं ॥ १९ ॥
ऊ अच्छरा मह सहा थू रे निध्रिट्ठ कलहसील घरं।
दासो सि इमाइ हरे सदो सि ओ ओ किमसि दिट्ठो ॥२०॥
अव्वो नओ तुह पिओ अव्वो तम्मेसि कीस ? किं एसो।
अव्वो अपामत्तो ? अव्वो तुम्हेरिसो माणो ! ॥ २१ ॥
अव्वो पिअम्म समओ ! अव्वो सो एइ रूसणो अव्वो।
अव्वो फट्टं ! अव्वो किं एसो सहि मए घरिओ ॥ २२ ॥
अह एसि रहघराओ घणे मिलाणा सि दइअ दरवलिआ।
मुणिमो घणे न मुणिमो तं न घणे कहइ नजम् अहं ॥२३॥

दासो वणो न मुचइ मणो पिओ तुज्झ मुचइ स अम्मो ।
पत्तो खु अप्पणोच्चिअ तए सयं चेअ निउणाए ! ॥ २४ ॥
पाडिक्कं दइआओ ताणा वयंसीओ पाडिएक्कं च ।
पत्तेअं मित्ताइं उ अ एसो पइ भासन्तो ॥ २५ ॥
देक्ख तुहेसो दइओ कहम् इहरा पुलइआ सि दट्ठुम् इमं ।
भणिमो न वयम् इअरहा मुणिअम् इमं एक्कसरिअंति ॥२६॥
मा तम्म मोरउल्ला दरविअसिअ-बन्धुजीवकुसुमोट्ठि ।
अणुसोचसि धुत्तम् इमं सरलसहावे किणो रमणं ॥२७॥
थारविलयाइ एआ गिम्हसुहं माणिउं पयट्टा जे ।
इअ जंवि तंपि लविराओ पिअन्ति र पिक्कदक्खरसं ॥२८॥

— कु० च० चतुर्थ सर्ग १--२१.

× × × × ×

अणाउम्मिल्लिअनाणोम्मीलणआ हरिसपसविरा लोए ।
सुअजलम् ओज्झाया पवरिसन्तु वित्थरिअगुणभरिआ ॥२९॥
जो रूसइ नो तूसइ जेऊण मणं लयम्मि जो नेन्तो ।
मोत्तुं भवं विणीअं तं साहुजणं नमंसामि ॥ ३० ॥
उप्पाइअसद्दहणो असद्दहाणेवि देइ जो वोहिं ।
संसारनासिरो हं तं साहुं चिय विहेमि गुरुं ॥ ३१ ॥

—कु० च० सप्तमे सर्ग ६५—६७.

बोधपाठ २२ मो.

अवशिष्टविधि.

१. कारक, समास, तद्धित, इच्छादर्शक वगेरे प्रक्रिया अने अवशिष्ट कृदन्त–विधि सर्व संस्कृतवत् थाय छे. अर्थात् नाम. कर्म वगेरेमां प्रथमा- द्वितीयादि विभक्तिओ जेम संस्कृतमां आवे छे तेवीज रीते प्राकृतमां पण आवे छे. समास पण कर्मधारय– तत्पुरुष वगेरे योगना मुजब संस्कृतनी पेठे [illegible] प्राकृतमां थाय छे. तद्धित तथा कृदन्तना [illegible] माथुरः [illegible] बनाव्या छे, ते सिवायना तद्धित कृद[illegible] मूढः कावचिकम् [illegible] सिद्धरूपोनेज ई नियमावलिना नियमो लग[illegible] रूपो सधाय छे.

स्तीति फला

तुन्दमस्यास्तीति तुन्दिलः — तुन्दिलो [illegible]।
तपो विद्यतेऽस्य तपस्वी — सो साहू तवस्सी, कहिआ
ईषदऽपरिसमाप्तः पटुः पटु-देश्यः — अयं बालो पटुदेसो
मृत्तिकाया विकारो मृत्तिकामयो घटः — मट्टिआमयो घडो।
द्वारि नियुक्तो दौवारिकः — अंतरं रिणइ दोवारिओ पुरिसो
न्यायमधीते वेद वा नैयायिकः — नेयाइओ पंडिओ।
लज्जा संजाताऽस्य लज्जितः — पावेण लज्जिओ पच्छा तवा
अतिशयेन लघु लघीयान्- लघिष्ठः — लहिट्ठो लघीओ वा।

* [illegible] विकल्पे थाय छे।

पुत्रमिच्छति पुत्रीयति -- पुत्तीयइ देवदत्तो ।
सुखमनति गति कलहायते --कलहायइ ।
चरति श्येनायते ---सेणायइ कागो ।
वा संख्यापूरकः | बिईओ तईओ वा ।
तीयस्तृतीयः
जिनं श्रितो जिनश्रितः — सअसो सहस्ससो वा संसारे
धनेन क्रीतं धनक्रीतम् । भ
दानाय धनं दानधनम् । हिया —
—सुओ ओयणं पि तए
पापाद् भयं पापभयम् । ने —स गामं जि गस्स
नत्ता
न्त—
राज्ञः पुरुषो राजपुरुषः —कुलालो घडस्स क — कार
रओ वा ।
ददातीति दाता-दायकः—दाआ, दाआ वा इमो जणो ।
तपति ज्वलति वा तपनः —तवणो जलणो वा अग्गी ।
ज्वलनः
करोतीति कुंभकारः —कुंभआरो-कुंभारो वा ।
कषतीति सा सर्वंकषा —सव्वंकसमे नई ।
सहायः सहायः सम्पद्य- तथाकरणं सहायीकरणम् —सहाईकरणं ।
पचनं पाकः —पयणं, पाओ ।
पाकेन निर्वृत्तं पक्त्रिमं फलम् —पत्तिमं फलं ।
पच्यतेऽनेनेति पचनः —पयणो अग्गी ।
पच्यतेऽस्यामिति पचनी —पयणी थाली ।

अङ्गारः	इंगालो अंगारो
ललाटम्	णिडालं णडालं
मध्यमः	मज्झिमो
ककुभः	कहुमो
सप्तपर्णः	छत्तिवण्णो छत्तवण्णो

अ= आइ

न पुनः	न उणाइ, न उण
पुनः	पुणाइ

अ=ई

हरः	हीरो हरो

अ=उ

ध्वनिः	झुणी
विष्वक	वीसुं
चन्द्रम्	चुन्दं चन्दं
खण्डितः	खुडिओ खण्डिओ.
गवयः	गउओ गउआ.
प्रथमम्	पुढुमं, पुढमं, पढुमं, पढमं.
अभिज्ञः	अहिण्णू
सर्वज्ञः	सव्वण्णू
कृतज्ञः	कयण्णू
आगमज्ञः	आगमण्णू

अ=ए

शय्या	सेज्जा
सौन्दर्यम्	सुन्देरं
कन्दुकम्	गेन्दुअं

नाराचः	नराओ	नाराओ
बलाका	बलया	बलाया
कुमारः	कुमरो	कुमारो
खादिरम्	खइरं	खाइरं
परिस्थापितः	परिठविओ	परिठाविओ
संस्थापितः	संठविओ	संठाविओ
महाराष्ट्रम्	मरहट्ठं	
मांसम्	मंसं	
पांसुः	पंसू	
पांसनः	पंसणो	
कांस्यम्	कंसं	
कांसिकः	कंसिओ	
वांशिकः	वंसिओ	
पांडवः	पंडवो	
सांसिद्धिकः	संसिद्धिओ	
सांयात्रिकः	संजत्तिओ	
श्यामाकः	सामओ	
आचार्यः	आयरिओ,	

आ=इ

सदा	सइ	सआ
निशाचरः	निसिअरो	निसाअरो
कूर्पासः	कुप्पिसो	कुप्पासो
आचार्यः	आइरिओ	

आ=ई

स्त्यानम्	ठीणं, थीणं, थिण्णं

खल्वाटः   खल्लीडो

आ=उ

सास्ना   सुण्हा
स्तावकः   थुवओ
आर्द्रम्   उल्लं, अल्लं

आ=ऊ

आसारः   ऊसारो आसारो
आर्या (श्वश्रूः)   अज्जू

आ=ए

ग्राह्यम्   गेज्झं
द्वारम्   देरं, दुआरं, दारं, वारं
पारापतः   पारेवओ पारावओ

आ=ओ

आर्द्रम्   ओल्लं, अल्लं.
आली (पंक्तिः)   ओली.

इ=ए

किंशुकम्   केसुअं किंसुअं
मिरा   मेरा

इ=अ

पन्थाः   पहो
पृथिवी   पुहई, पुढवी.
प्रतिश्रुत्   पडंसुआ
मूषिकः   मूसओ
हरिद्रा   हलद्दी, हलद्दा
बिभीतकः   बहेडओ

शिथिलम्	सढिलं,	सिढिलं
इङ्गुदम्	अंगुअं	इंगुअं
तित्तिरिः	तित्तिरो	

इ=ई

जिह्वा	जीहा
सिंहः	सीहो
त्रिंशत्	तीसा
विंशतिः	वीसा

इ=उ

प्रवासिकः	पावासुओ	
इक्षुः	उच्छू	
युधिष्ठिरः	जहुट्ठिलो.	जहिट्ठिलो
द्विधाक्रियते	दुहाकिज्जइ	
द्विधाकृतम्	दुहाइअं	

इ=ओ

द्विधाक्रियते	दोहाकिज्जइ	
द्विधाकृतम्	दोहाइअं	
निर्झरः	ओज्झरो	निज्झरो.

ई=अ

हरीतकी	हरडई

ई=आ

कश्मीराः	कम्हारा

ई=इ

पानीयम्	पाणिअं
अलीकम्	अलिअं

जीवति	जिअइ
जीवतु	जिअउ
व्रीडितम्	विलिअं
करीषः	करिसो
शिरीषः	सिरिसो
द्वितीयम्	दुइअं
तृतीयम्	तइअं
गभीरम्	गहिरं
उपनीतम्	उवणिअं
आनीतम्	आणिअं
प्रदीपितम्	पलिविअं
अवसीदन्तम्	ओसिअन्तं
प्रसीद	पसिअ
गृहीतम्	गहिअं
वल्मीकः	वम्मिअं
तदानीम्	तयाणिं

ई=उ

जीर्णम्	जुण्णं

ई=ऊ

हीनः	हूणो,	हीणो
विहीनः	विहूणो,	विहीणो
तीर्थम्	तूहं	तित्थं

ई=ए

पीयूषम्	पेऊसं
आपीडः	आमेलो

शिथिलम्	सढिलं, सिढिलं
इङ्गुदम्	अंगुअं इंगुअं
तित्तिरिः	तित्तिरो

इ=ई

जिह्वा	जीहा
सिंहः	सीहो
त्रिंशत्	तीसा
विंशतिः	वीसा

इ=उ

प्रवासिकः	पावासुओ
इक्षुः	उच्छू
युधिष्ठिरः	जहुट्ठिलो, जहिट्ठिलो
द्विधाक्रियते	दुहाकिज्जइ
द्विधाकृतम्	दुहाइअं

इ=ओ

द्विधाक्रियते	दोहाकिज्जइ
द्विधाकृतम्	दोहाइअं
निर्झरः	ओज्झरो निज्झरो.

ई=अ

हरीतकी	हरडई

ई=आ

कश्मीराः	कम्हारा

ई=इ

पानीयम्	पाणिअं
अलीकम्	अलिअं

जीवति	जिअइ
जीवतु	जिअउ
व्रीडितम्	विलिअं
करीषः	करिसो
शिरीषः	सिरिसो
द्वितीयम्	दुइअं
तृतीयम्	तइअं
गभीरम्	गहिरं
उपनीतम्	उवणिअं
आनीतम्	आणिअं
प्रदीपितम्	पलिविअं
अवसीदन्तम्	ओसिअन्तं
प्रसीद	पसिअ
गृहीतम्	गहिअं
वल्मीकः	वम्मिओ
तदानीम्	तयाणिं

ई=इ

जीर्णम्	जुण्णं

ई=ऊ

हीनः	हूणो,	हीणो
विहीनः	विहूणो,	विहीणो
तीर्थम्	तूहं	तित्थं

ई=ए

पीयूषम्	पेऊसं
आपीडः	आमेलो

बिभीतकः — बहेडओ
कीदृशः — केरिसो
ईदृशः — एरिसो
नीडम् — नेडं, नीडं
पीठम् — पेढं, पीढं

उ=अ

मुकुलम् — मउलं
मुकुरम् — मउरं
मुकुटम् — मउडं
अगुरु — अगरुं
गुर्वी — गरुई
युधिष्ठिरः — जहिट्ठिलो जहुट्ठिलो
सौकुमार्यम् — सोअमल्लं
गुडूची — गलोई
उपरि — अवरिं उवरि
गुरुकः — गरुओ गुरुओ

उ=आ

बाहुः(स्त्री०) — बाहा

उ=इ

भ्रुकुटिः — भिउडी
पुरुषः — पुरिसो
पौरुषम् — पउरिसं

उ=ई

क्षुतम् — छीअं

उ=ऊ

सुभगः	सूहवो सुहओ
मुसलम्	मूसलं मुसलं
उत्सुकः	ऊसुओ
उत्सवः	ऊसओ
उत्सिक्तः	ऊसित्तो
उत्सरति	ऊसरइ
उच्छुकः	ऊसुओ
उच्छ्वसिति	ऊससइ

उ=ओ

कुतूहलम्	कोऊहलं, कुऊहलं, कोउहल्लं.

ऊ=अ

सूक्ष्मम्	सण्हं, सुण्हं
दुकूलम्	दुअल्लं, दुऊलं

ऊ=इ

नूपुरम्	निउरं, नूउरं

ऊ=ई

उद्व्यूढम्	उव्वीढं, उव्वूढं

ऊ=उ

भ्रूः	भुमया
हनूमान्	हणुमन्तो
कण्डूयति	कण्डुअइ
वातूलः	वाउलो
मधूकम्	महुअं महूअं

१ उद्गताः शुका यस्मात्स उच्छुकः

सृष्टिः	सिट्ठी
गृष्टिः	गिण्ठी
पृथ्वी	पिच्छी
भृगुः	भिऊ
भृङ्गः	भिंगो
भृङ्गारः	भिंगारो
शृङ्गारः	सिंगारो
शृगालः	सिआलो
घृणा	घिणा
घुसृणम्	घुसिणं
वृद्धकविः	विद्धकई
समृद्धिः	समिद्धी
ऋद्धिः	इद्धी,रिद्धी
गृद्धिः	गिद्धी
कृशः	किसो
कृशानुः	किसाणू
कृसरा	किसरा
कृच्छ्रम्	किच्छं
तृप्तम्	तिप्पं
कृषितः	किसिओ
नृपः	निवो
कृत्या	किच्चा
कृतिः	किई
धृतिः	धिई
कृपः	किवो

कृपणः	किविणो	
कृपाणः	किवाणं	
वृश्चिकः	विञ्चुओ	
वृत्तम्	वित्तं	
वृत्तिः	वित्ती	
हृतम्	हिअं	
व्याहृतम्	वाहित्तं	
बृंहितः	विंहिओ	
वृषी	विसी	
ऋषिः	इसी,	रिसी
वितृष्णः	विइण्हो	
स्पृहा	छिहा	
सकृत्	सइ	
उत्कृष्टम्	उक्किट्ठं	
नृशंसः	निसंसो	
पृष्टम्	पिट्ठी	पट्ठी
मसृणम्	मसिणं	मसणं
मृगाङ्कः	मिअंको	मयंको
मृत्युः	मिच्चू	मच्चू
शृङ्गम्	सिंगं	संगं
धृष्टः	धिट्ठो	धट्ठो
मातृगृहम्	माइहरं	
घृष्टः	घिट्ठो	
वृष्टिः	विट्ठी	
वृषभः	विसहो	

मृदङ्गः	मिइंगो
नप्तृकः	नत्तिओ
बृहस्पतिः	बिहप्फई
	बहप्फई
वृन्तम्	विण्टं

ऋ=उ

ऋतुः	उऊ, रिऊ
परामृष्टः	परामुट्ठो
स्पृष्टः	पुट्ठो
प्रवृष्टः	पउट्ठो
पृथिवी	पुहई
प्रवृत्तिः	पउत्ती
प्रावृट्	पाउसो
प्रावृतः	पाउओ
भृतिः	भुई
प्रभृति	पहुडि
प्राभृतम्	पाहुडं
परभृतः	परहुओ
निभृतम्	निहुअं
निवृतम्	निउअं
विवृतम्	विउअं
संवृतम्	संवुअं
वृत्तान्तः	वुत्तंतो
निर्वृतम्	निव्वुअं
निर्वृतिः	निव्वुई ..

कृपणः	किविणो	
कृपाणः	किवाणं	
वृश्चिकः	विञ्चुओ	
वृत्तम्	वित्तं	
वृत्तिः	वित्ती	
हृतम्	हिअं	
व्याहृतम्	वाहित्तं	
बृंहितः	विंहिओ	
वृषी	विसी	
ऋषिः	इसी,	रिसी
घितृष्णः	घिइण्हो	
स्पृहा	छिहा	
सकृत्	सइ	
उत्कृष्टम्	उक्किट्ठं	
नृशंसः	निसंसो	
पृष्ठम्	पिट्ठी	पट्ठी
मसृणम्	मसिणं	मसणं
मृगाङ्कः	मिअंको	मयंको
मृत्युः	मिच्चू	मच्चू
शृङ्गम्	सिंगं	संगं
धृष्टः	घिट्ठो	धट्ठो
मातृगृहम्	माइहरं	
सृष्टः	सिट्ठो	
सृष्टिः	सिट्ठी	
पृषदः	पिसं	

मृदङ्गः	मिइंगो
नप्तृकः	नत्तिओ
बृहस्पतिः	बिहप्फई
	बहप्फई
वृन्तम्	विण्टं

ऋ=उ

ऋतुः	उऊ, रिऊ
परामृष्टः	परामुट्ठो
स्पृष्टः	पुट्ठो
प्रवृष्टः	पउट्ठो
पृथिवी	पुहई
प्रवृत्तिः	पउत्ती
प्रावृट्	पाउसो
प्रावृतः	पाउओ
भृतिः	भुई
प्रभृति	पहुडि
प्राभृतम्	पाहुडं
परभृतः	परहुओ
निभृतम्	निहुअं
निवृतम्	निउअं
विवृतम्	विउअं
संवृतम्	संवुअं
वृत्तान्तः	वुत्तंतो
निर्वृतम्	निव्वुअं
निर्वृतिः	निव्वुई

वृन्दम्	वुन्दं	
वृन्दावनः	वुन्दावणो	
वृद्धः	वुड्ढो	
वृद्धिः	वुड्ढी	
ऋषभः	उसहो,	रिसहो
मृणालम्	मुणालं	
ऋजुः	उज्जू,	रिज्जू
जामातृकः	जामाउओ	
मातृकः	माउओ	
मातृका	माउआ	
भ्रातृकः	भाउओ	
पितृकः	पिउओ	
पृथ्वी	पुहुवी	
निवृत्तम्	निवुत्तं,	निअत्तं
वृन्दारका	वुन्दारगा	वन्दारया
वृषभः	उसहो,	वसहो
मातृमण्डलम्	माउमंडलं	
मातृगृहम्	माउहरं,	माइहरं
पितृगृहम्	पिउहरं	
मातृस्वसा	माउसिआ	
पितृस्वसा	पिउसिआ	
पितृवनम्	पिउवणं	
पितृवर्गः	पिउवई	
मृषा	मुसा	
मृषावादः	मुसावाओ	

वृष्टः	वुट्ठो
वृष्टिः	वुट्ठी
पृथक्	पुहं
मृदङ्गः	मुइंगो
नप्तृकः	नत्तुओ
बृहस्पतिः	बुहप्फई, बहप्फई

ऋ=ऊ

मृषा	मूसा
मृषावादः	मूसावाओ

ऋ=ए

वृन्तम्	वेण्टं

ऋ=ओ

वृन्तम्	वोण्टं
मृषा	मोसा
मृषावादः	मोसावाओ

ऋ=दि

आदृतः	आदिओ

ऋ=अरि

दृप्तः	दरिओ

ऋ=रि

ऋणम्	रिणं, अणं
ऋजुः	रिज्जू, उज्जू
ऋषभः	रिसहो, उसहो
ऋषिः	रिसी, इसी
ऋतुः	रिऊ, उऊ

सदृशः सरिसो
सदृक्षः सरिच्छो
एतादृशः एआरिसो
भवादृशः भवारिसो
यादृशः जारिसो
तादृशः तारिसो
कीदृशः केरिसो
ईदृशः एरिसो
अन्यादृशः अन्नारिसो
अस्मादृशः अम्हारिसो
युष्मादृशः तुम्हारिसो
सदृग्वर्णः सरियण्णो

ए=इ

वेदना विअणा वेअणा
चपेटा चविडा चवेडा
देवरः दिअरो देयरो
केसरम् किसरं केसरं

ए=ऊ

स्तेनः थूणो. थेणो

ऐ=इ

सैन्धवम् सिन्धवं
शनैश्चरः णिच्छरो
सैन्यम् सिन्नं, सेन्नं

ऐ=अइ

सैन्यम् सइन्नं

दैत्यः	दइच्चो	
दैन्यम्	दइन्नो	
ऐश्वर्यम्	अइसरिअं	
भैरवः	भइरवो	
वैजवनः	वइजवणो	
दैवतम्	दइवअं	
वैतालीयम्	वइआलीअं	
वैदेशः	वइएसो	
वैदेहः	वइएहो	
वैदर्भः	वइदब्भो	
वैश्वानरः	वइस्साणरो	
कैतवम्	कइअवं	
वैशाखः	वइसाहो	
वैशालः	वइसालो	
स्वैरम्	सइरं	
चैत्यम्	चइत्तं,	चेइअं
वैरम्	वइरं,	वेरं
कैलाशः	कइलासो,	केलासो
कैरवम्	कइरवं,	केरवं
वैश्रवणः	वइसवणो,	वेसवणो
वैशम्पायनः	वइसंपायणो,	वेसंपायणो
वैतालिकः	वइआलिओ,	वेआलिओ
वैशिकम्	वइसिअं	वेसिअं
चैत्रः	चइत्तो,	चेत्तो

देयम्   दइयं,   देयं

ऐ=अअ

उच्चैः   उच्चअं

नीचैः   नीचअं

ए=ई

धैर्यम्   धीरं

ओ=अ

अन्योन्यम्   अन्नन्नं,   अन्नुन्नं

प्रकोष्ठः   पवट्ठो,   पउट्ठो

आतोद्यम्   आवज्जं,   आउज्जं

शिरोवेदना   सिरविअणा,   सिरोविअणा

मनोहरम्   मणहरं,   मणोहरं

सरोरुहम्   सररुहं,   सरोरुहं

ओ=ऊ

सोच्छ्वासः   सूसासो

ओ=अउ

गो   गउओ,   गउआ

ओ=आअ

गो   गाओ।

औ=आ

गौरवम्   गारवं,

औ=उ

सौन्दर्यम्   सुन्देरं,   सुन्दरिअं

मौञ्जायनः   मुंजायणो

शौण्डः   सुण्डो

शौद्धोदनिः	सुद्धोअणी
दौवारिकः	दुवारिओ
सौगन्ध्यम्	सुगन्धत्तणं
पौलोमी	पुलोमी
सौवर्णिकः	सुवण्णिओ
कौक्षेयकम्	कुच्छेअयं

औ=ओ

कौक्षेयकम्	कोच्छेअयं

औ=अउ

कौक्षेयकम्	कउच्छेअयं
पौरः	पउरो
पौरजनः	पउरजणो
कौरवः	कउरवो
कौशलम्	कउसलं
पौरुषम्	पउरिसं
सौधम्	सउहं
गौडः	गउडो
मौलिः	मउली
मौनम्	मउणं
सौराः	सउरा
कौलाः	कउला
गौरवम्	गउरवं

औ=आवा

नौ	नावा

क्=ख्

कुब्जः	खुज्जो
कर्परम्	खप्परं
कीलकः	खीलओ

क्=ग्

मरकतम्	मरगयं
मदकलः	मयगलो
कन्दुकम्	गेन्दुअं

क्=च

किरातः	चिलाओ

क=भ

शीकरः	सीभरो

क्=म

चन्द्रिका	चन्दिमा

क=ह्

शीकरः	सीहरो
निकषः	निहसो
स्फटिकः	फलिहो
चिकुरः	चिहुरो

ग्=क

शृङ्खलम्	संकलं

ग्=म्

पुन्नागानि	पुन्नामाइं
भागिनी	भामिणी

ग्=ल

छागः	छालो
छागी	छाली

च्=ल्ल् (वि०)

पिशाचः	पिसल्लो, पिसाहो.

च्=स् (वि०)

खचितः	खसिओ, खइओ

ज्=झ् (वि०)

जटिलः	झडिलो, जडिलो.

ट्=ढ

सटा	सढा
शकटः	सयढो
कैटभः	केढवो

ट्=ल

स्फटिकः	फलिहो

ट्=ल् (वि०)

चपेटा	चवेला, चवेडा
पाटयति	फालेइ, फाडेइ

दु=ह

ककुदम	कउहं

ष=ह

निषधः	निसहो
औषधम	ओसहं. ओसढं.

न्=ण्ह (वि०)

नापितः	ण्हाविओ. नाविओ

न्=ल (वि०)

निम्बः	लिम्बो. निम्बो.

प=फ

पाटयति	फालेइ, फाडेइ
परुषः	फरुसो
परिघः	फलिहो
परिखा	फलिहा
पनसः	फणसो
पारिभद्रः	फालिहद्दो

प=च

प्रभूतम्	बहुत्तं

प=म् (वि०)

नीपः	नीमो, नीवो
आपीडः	आमेलो, आवेडो

प्=र्

पापर्द्धिः	पारद्धी.

ब्=भ्

बिसिनी	भिसिणी

ब्=म् तथा य

कबन्धः	कमन्धो, कयन्धो.

व्=म्

शबरः	समरो

भ्=व्

कैटभः	केढवो

म्=ढ्

विषमः	विसढो, विसमो

म्=व्

मन्मथः	वम्महो
अभिमन्युः	अहिवन्नू, अहिमन्नू.

म्=स्

भ्रमरः	भसलो, भमरो.

य्=त्

युष्मादृशः	तुम्हारिसो.
युष्मदीयः	तुम्हकेरो.

य्=ल

यष्टिः	लट्ठी

य्=ज्ज (वि०)

उत्तरीयम्	उत्तरिज्जं, उत्तरीअं.

य्=ह्

छाया	छाहा
सच्छायम्	सच्छाहं, सच्छायं

य=ध्याह् तथा य्

कतिपयम्	कइयाहं, कइअवं.

र्=ड

किरिः	किडी
भेरः	भेडो

र्=डा (वि०)

पर्यागम्	पडायागं, पल्लाणं

र्=ण्

करवीरः	कणवीरो

र्=ल्

हरिद्रा	हलिद्दा
दरिद्राति	दलिद्दाइ
दरिद्रः	दलिद्दो
दारिद्र्यम्	दालिद्दं
हरिद्रः	हलिद्दो

मुखरः	मुहलो
चरणः (पादः)	चलणो
वरुणः	वलुणो
करुणः	कलुणो
सत्कारः	सक्कालो
रुग्णः	लुक्को
अपद्वारम्	अवद्दालं
जठरम्	जढलं
बठरः	बढलो
निष्ठुरः	निट्ठुलो
युधिष्ठिरः	जहुट्ठिलो
शिथिरः	सिढिलो
अङ्गारः	इंगालो
सुकुमारः	सोमालो
किरातः	चिलाओ
परिखा	फलिहा
परिघः	फलिहो
पारिभद्रः	फालिहद्दो
कातरः	काहलो

ल्=र्

स्थूलम्	थोरं

ल्=ण् (वि०)

लाहलः	णाहलो, लाहलो.
लाङ्गलम्	णङ्गलं, लंगलं.

लाङ्गूलम् — णंगूलं, लंगूलं.
ललाटम — णिडालं, णडालं.

व=म् (वि०)

स्वप्नः — सिमिणो, सिविणो.
नीवी — णीमी, णीवी.

श=छ् (वि०)

शमी — छमी
शावः — छावो
शिरा — छिरा, सिरा.

श=ह्

दशमुखः — दहमुहो, दसमुहो.
दशरथः — दहरहो, दसरहो.

ष=ण्ह (वि०)

स्नुषा — सुण्हा, सुसा

ष=छ्

षष्ठः — छट्ठो
षष्ठिः — छट्ठी
षट्पदः — छप्पओ
षण्मुखः — छंमुहो

ष=ह्

पाषाणः — पाहाणो पासाणो.

स=ह्

दिवसः — दिवहो, दिवसो.

स्=छ्

क्षुधा	छुहा
सप्तपर्णः	छत्तिवण्णो

जोडाक्षरोने नीचे प्रमाणे आदेश थायछे:—

क् (वि०)

शक्तः	सक्को, सत्तो.
मुक्तः	मुक्को, मुत्तो.
दष्टः	डक्को, दट्ठो.
रुग्णः	लुक्को, लुग्गो.
मृदुत्वम्	माउक्कं, मउत्तणं.

ख्

शुष्कम्	सुक्खं, सुक्कं.
स्कन्दः	खन्दो, कन्दो.
क्ष्वेटकः	खेडओ
क्ष्वोटकः	खोडओ
स्फोटकः	खोडओ
स्फेटकः	खेडओ
स्फेटिकः	खेडिओ
स्थाणुः	खाणू
स्तम्भः	खम्भो, थम्भो.

ग्

रक्तः	रग्गो, रत्तो

ङ्

शुल्कम्	सुंगं, सुक्कं.

त्त्

कृत्तिः	किची
पत्वरम्	चचरं
प्रत्यूषः	पच्चूहो, पच्चूसो

क्ष्

अक्षि	अच्छि
इक्षुः	उच्छू
लक्ष्मीः	लच्छी
कक्षः	कच्छो
क्षुतम्	छीअं
क्षीरम्	छीरं
सदृक्षः	सरिच्छो
वृक्षः	वच्छो
मक्षिका	मच्छिआ
क्षेत्रम्	छेत्तं
क्षुधा	छुहा
दक्षः	दक्खो
कुक्षिः	कुक्खी
पक्षः	पक्खं
क्षुण्णः	छुण्णो
कक्षा	कच्छा
क्षारः	छारो
कौक्षेयकम्	कुच्छेअयं
क्षुरः	छुरो

उक्षा	उच्छा
क्षतम्	छयं
सादृश्यम्	सारिच्छं
स्थगितम्	छइअं
क्षमा (पृथिवी)	छमा
ऋक्षम्	रिच्छं, रिक्खं.
क्षणः (उत्सवः)	छणो
सामर्थ्यम्	सामच्छं, सामत्थं
उत्सुकः	उच्छुओ, ऊसुओ.
उत्सवः	उच्छवो, ऊसवो.
स्पृहा	छिहा

ज् (वि०)

अभिमन्युः	अहिमज्जू अहिमन्नू

झ्

ध्वजः	झओ, धओ.

श्च्

वृश्चिकः	विञ्चुओ

ञ् (वि०)

अभिमन्युः	अहिमञ्जू अहिमन्नू

ट्

वृत्तः	वट्टो
प्रवृत्तः	पयट्टो

मृत्तिका — मट्टिआ
पत्तनम् — पट्टणं
कदर्थितः — कवट्टिओ
पर्यस्तः — पल्लट्टो

ठ

अस्थि — अट्ठी
विसंस्थुलम् — विसंठुलं.
स्त्यानम् — ठीणं, थीणं.
चतुर्थः — चउट्ठो
अर्थः — अट्ठो
स्तम्भः — ठम्भो, थम्भो.
स्तम्बः — ठम्बो

ड

गर्तः — गड्डो
गर्ता — गड्डा
सम्मर्दः — सम्मड्डो
वितर्दी — विअड्डी
विच्छर्दः — विच्छड्डो
छर्दी — छड्डी
कपर्दः — कवड्डो
मर्दितः — मड्डिओ
सम्मर्दितः — सम्मड्डिओ
गर्दभः — गड्डहो, गद्दहो.

ढ

स्तब्धः — ठड्ढो

दग्धः	दड्ढो
विदग्धः	विअड्ढो
वृद्धिः	वुड्ढी
वृद्धः	वुड्ढो
श्रद्धा	सड्ढा, सद्धा.
मूर्धा	मुड्ढा, मुद्धा.
अर्धम्	अड्ढं, अद्धं.

ण्

पंचाशत्	पण्णासा.
पंचदश	पण्णरह.
दत्तम्	दिण्णं.

ण्ट्

वृन्तम्	वेण्टं
तालवृन्तम्	तालवेण्टं

ण्ड्

कन्दरिका	कण्डलिआ
भिन्दिपालः	भिण्डिवालो

त्

समस्तः	समत्तो.
स्तम्बः	तम्बो.

थ्

स्तम्भः	थम्भो, ठम्भो.
स्तवः	थवो, तवो.

पर्यस्तः — पल्लत्थो, पल्लट्टो.
उत्साहः — उत्थारो, उच्छाहो.

ष्

आश्लिष्टः — आलिद्धो

न्त् (वि०)

मन्युः — मन्तू, मन्नू.

ह्न् (वि०)

चिह्नम् — चिन्धं, इन्धं, चिण्हं.

प

भस्म — भप्पो, भस्सो.
आत्मा — अप्पा, अप्पाणो.

फ्

भीष्मः — भिप्फो.
श्लेष्मः — सेप्फो, सिलिम्हो.

भ्

विह्वलः — भिब्भलो, विब्भलो, विहलो.

ऊर्ध्वम् — उब्भं, उद्धं.

म्ब

ताम्रम् — तम्बं
आम्रम् — अम्बं

म्भ

कश्मीराः — कम्भारा, कम्हारा.

र्

ब्रह्मचर्यम्	बम्हचेरं, बम्हचरिअं.
तूर्यम्	तूरं
सौन्दर्यम्	सुन्देरं
शौण्डीर्यम्	सोण्डीरं
धैर्यम्	धीरं, धिज्जं.
पर्यन्तः	पेरन्तो, पज्जन्तो.
आश्चर्यम्	अच्छेरं, अच्छरिअं.

ल्

आश्लिष्टः	आलिद्धो.
कूष्माण्डी	कोहली, कोहण्डी.

ल्ह्

पर्यस्तम्	पल्लट्टं, पल्लत्थं.
पर्याणम्	पल्लाणं.
सौकुमार्यम्	सोअमल्लं

स्

बृहस्पतिः	बहस्सई, बहप्फई, भयस्सई, भयप्फई.
वनस्पतिः	वणस्सई, वणप्फई.

ह्

बाष्पः	बाहो
कार्षापणः	काहावणो.
दुःखम्	दुहं, दुक्खं.

दक्षिणः	दाहिणो, दक्खिणो.
तीर्थम्	तूहं, तित्थं,
कूष्माण्डी	कोहण्डी, कोहली.

नीचेना अक्षरो लोपाय छे:—

ब (वि)

अलाबुः	लाऊ, अलाऊ
अलाबु	लाउं, अलाउं.
अरण्यम्	रण्णं, अरण्णं

ण्

तीक्ष्णम्	तिक्खं, तिण्हं

त्र्

रात्रिः	राई, रत्ती.

म्

यमुना	जउँणा
चामुण्डा	चाउँण्डा
कामुकः	काउँओ
अतिमुक्तकम्	अणिउँतयं,
	अइमुन्तयं,
	अइमुत्तयं.

संमुखम्	समुहं, संमुहं.
किंशुकम्	केसुअं, किंसुअं.
सिंहः	सीहो, सिंघो.

अंत्य व्यंजनना नीचे प्रमाणे आदेश थाय छे:—

अ

शरद्	सरओ।
भिषक्	भिसओ।

स

दिक्	दिसा।
प्रावृट्	पाउसो।
दीर्घायुः	दीहाउसो, दीहाऊ.
अप्सराः	अच्छरसा, अच्छरा

ह

ककुभ्	कउहा
धनुः	धणुहं, धणू.
क्षुध्	छुहा

पदनी आदिमां रहेला व्यंजनो पण आगमना स्वर सहित नीचे प्रमाणे आदेश थाय छे:—

कर्णिकारः*	कण्णेरो, कण्णिआरो

ऐ

अयि	ऐ, अइ.

ओ

पूतरः	पोरो
बदरम्	बोरं
नवमालिका	नोमालिआ
नवफलिका	नोहलिआ
पूगफलम्	पोप्फलं
मयूखः	मोहो, मऊहो.
लवणम्	लोणं
चतुर्गुणाः	चोग्गुणो, चउग्गुणो.
चतुर्थः	चोत्थो, चउत्थो.
चतुर्दश	चोद्दह, चउद्दह.
चतुर्वार.	चोव्वारो, चउव्वारो.
सुकुमारः	सोमालो, सुकुमालो.
कुतूहलम्	कोहलं, कोउहल्लं.
उदूखलः	ओहलो, उऊहलो.
उलूखलम्	ओक्खलं, उलूहलं.

उम

निषण्णः	णुमण्णो, णिसण्णो.

अंगु तथा आउ

प्रावरणम्	पंगुरणं, पाउरणं, पावरणं.

* इनो सरवर व्यंजन सहित ए थाय छे.

मलिनम्—	मइलं, पक्षे- मलिणं
उभयम्—	अवहं
शुक्तिः—	सिप्पी, पक्षे- सुत्ती.
छुप्तः—	छिक्को, पक्षे- छुत्तो.
आरब्धः—	आढत्तो, पक्षे-आरद्धो.
पदातिः—	पाइक्को, पक्षे- पयाई.
दंष्ट्रा—	दाढा.
बहिस्—	बाहिं, बाहिरं.
अधम—	हेटं
मातृष्वसा—	माउसिआ, माउच्छा.
पितृष्वसा—	पिउसिआ, पिउच्छा.
तिर्यक्—	तिरिच्छि.
गृहम्—	घरो.

नीचे आपेला शब्दोने अनुस्वार आगम थाय छे:—

वक्रम्	वंकं
त्र्यस्रम्	तंसं
अश्रु	अंसू
श्मश्रु	मंसू
पुच्छम्	पुंछं
गुच्छम्	गुंछं
मूर्धा	मुंढा
पर्शुः	पंसू
बुध्नम्	बुंधं
कर्कोटः	कंकोडो
कुड्मलम्	कुंपलं

मलिनम्—	मइलं, पक्षे- मलिणं
उभयम्—	अवहं
शुक्तिः—	सिप्पी, पक्षे- सुत्ती.
छुप्तः—	छिक्को, पक्षे- छुत्तो.
आरब्धः—	आढत्तो, पक्षे-आरद्धो.
पदातिः—	पाइक्को, पक्षे- पयाई.
दंष्ट्रा—	दाढा.
बहिस्—	बाहिं, बाहिरं.
अधम—	हेट्टं
मातृष्वसा—	माउसिआ, माउच्छा.
पितृष्वसा—	पिउसिआ, पिउच्छा.
तिर्यक्—	तिरिच्छि.
गृहम्—	घरो.

नीचे आपेला शब्दोने अनुस्वार आगम थाय छेः—

वक्रम्	वंकं
त्र्यस्रम्	तंसं
अश्रु	अंसू
श्मश्रु	मंसू
पुच्छम्	पुंछं
गुच्छम्	गुंछं
मूर्धा	मुंढा
पर्शुः	पंसू
बुध्नम्	बुंधं
कर्कोटः	कंकोडो
कुड्मलम्	कुंपलं

कर्णिकारः	कणिआरो, कण्णिआरो.
तैलम्	तेल्लं
मंडूकः	मंडूको
विचकिलम्	वेइल्लं
ऋजुः	उज्जू
व्रीडा	विड्डा
प्रभृतम्	बहुत्तं
स्रोतः	सोत्तं
प्रेम	पेम्मं
यौवनम्	जुव्वणं
सेवा	सेव्वा, सेवा.
नीडम्	नेड्डं, नीडं.
नखाः	नक्खा, नहा.
निहितः	निहित्तो, निहिओ.
व्याहृतः	वाहित्तो, वाहिओ.
मृदुकम्	माउक्कं, माउअं.
एकः	एक्को, एओ.
कुतूहलम्	कोउहल्लं, कोउहलं.
व्याकुलः	वाउल्लो, वाउलो.
स्थूलः	थुल्लो, थोरो.
हृतम्	हुत्तं, हृअं.
दैवम्	दइव्वं, दइवं.
तूष्णीकः	तुण्हिक्को, तुण्हिओ.
मूकः	मुक्को, मुओ.
स्थाणुः	खण्णू, खाणू.

त्रिपंचाशत्	तेवण्णा
त्रिचत्वारिंशत	तेआलीसा
व्युत्सर्गः	विउसग्गो
व्युत्सर्जनम्	वोसिरणं
वहिर्मैथुनं वा	वहिद्धा
कार्यम्	णामुक्कसिअं
क्वचित्	कत्थइ
उद्वहति	मुव्वहइ
अपस्मारः	वम्हलो
उत्पलं	कन्दुट्टं
धिक् धिक्	छि छि, द्धि द्धि
धिगस्तु	धिरत्थु
प्रतिस्पर्द्धी	पडिसिद्धा, पाडिसिद्धी
स्थासकः	चच्चिक्कं
निलयः	निहेलणं
मघवान्	मघोणो
साक्षी	सक्खिणो
जन्म	जम्मणं
महान्	महन्तो
भवान्	भवन्तो
आशीः	आसीसा
बृहत्तरम्	वड्डयरं
हिमोरः	भिमोरो
क्षुल्लकः	खुड्डओ

पा—	पिज्ज, डल्ल, पट्ट, घोट्ट. पक्षे- पिअ.
स्था—	ठा, थक्क, चिट्ठ, निरप्प.
उद्+स्था—	उट्ठ, उक्कुकुर.
स्ना—	अब्भुत्त, पक्षे-ण्हा.
श्रद्+धा—	सद्दह.
उद्+ध्मा—	उद्धुमा.
उद्+वा—	ओरूम्मा, वसुआ. पक्षे-उव्वा.
नि+द्रा—	ओहीर, उंघ. पक्षे-निद्दा.
आ+घ्रा—	आइग्घ. पक्षे-अग्घा.
निर्+मा—	निम्माण, निम्मव.
प्र+स्था+णि—	पट्ठव, पेण्डव. पक्षे-पट्ठाव.
वि+ज्ञा+णि—	वोक्क, अवुक्क.पक्षे-विण्णव.
ग्ना+णि—	जव. पक्षे. जाव.
क्षि—	णिज्झर. पक्षे-झिज्ज.
क्री—	किण.
वि+क्री—	विक्के, विक्किण.
भी—	भा, बीह
आ+ली—	अल्ली.
नि+ली—	णिलीअ, णिलुक्क, णिरिग्घ, लुक्क,लिक्क ल्हिक्क, पक्षे-निलिज्ज.
वि+ली—	विरा. पक्षे-विलिज्ज.
रु —	रुंज, रुण्ट. पक्षे-रव.
श्रु—	हण. पक्षे-सुण.
धु—	धुव. पक्षे-धुण.
भू—	हो, हुव, हव. पक्षे-भव.

गायन:	गायणो
षंढ:	षंढो
ककुदम्	ककुधं
अकाण्डम्	अत्थक्कं
लज्जावती	लज्जालुइणी
कुतूहलं	कुड्डं
चूत:	मायन्दो
विष्णु:	भट्टिओ
श्मशानम्	करसी
असुरा:	अगया
खेलं	खेड्डं
पौष्पं रज:	तिगिच्छि
दिनम्	अल्लं
समर्थ:	पक्कलो
पंडक:	नेलच्छो
कर्पास:	पलहो
बली	उज्जल्लो
ताम्बूलम्	झसुरं
पुंश्चली	छिछई
शाखा	साहुली. इत्यादि

—

धातुना आदेशो.

संस्कृत धातुओना प्राकृत आदेशो नीचे प्रमाणे थाय छे:-

(स्वरान्त धातुओ.)

ज्ञा— . जाण, मुण. पदे· था.

पा—	पिज्ज, डल्ल, पट्ट, घोट्ट. पक्षे- पिम्म.
स्था—	ठा, थक्क, चिट्ठ, निरप्प.
उद्+स्था—	उट्ठ, उक्कुक्कुर.
स्ना—	अब्भुत्त, पक्षे-ण्हा.
श्रद्+धा—	सद्दह.
उद्+ध्मा—	उद्धुमा.
उद्+वा—	ओरुम्मा, वसुआ. पक्षे-उव्वा.
नि+द्रा—	ओहीर, उंघ. पक्षे-निद्दा.
आ+घ्रा—	आइग्घ. पक्षे-अग्घा.
निर्+मा—	निम्माण, निम्मव.
प्र+स्था+णि—	पट्ठव, पेण्डव. पक्षे-पट्ठाव.
वि+ज्ञा+णि—	वोक्क, अवुक्क.पक्षे-विण्णव.
या+णि—	जव. पक्षे. जाव.
क्षि—	णिज्झर. पक्षे-झिज्ज.
क्री—	किण.
वि+क्री—	विक्के, विक्किण.
भी—	भा, बीह
आ+ली—	अल्ली.
नि+ली—	णिलीअ, णिलुक्क, णिरिग्घ, लुक्क,लिक्क ल्हिक्क, पक्षे-निलिज्ज.
वि+ली—	विरा. पक्षे-विलिज्ज.
रु —	रुंज, रुण्ट. पक्षे-रव.
श्रु—	हण. पक्षे-सुण.
धू—	धुव. पक्षे-धुण.
भू—	हो, हुव, हव. पक्षे-भव.

२४

भू— हु (वि उपसर्ग वर्जीने)
,,— णिव्वड. (पृथक् तथा स्पष्टीकरण अर्थमां)
प्र+भू— पहुप्प (प्रभुत्व अर्थमां)
दू+णि— दूम.
सं+भू+णि— आसंघ, पक्षे- संभाव.
कृ— कुण, पक्षे- कर.
,,— णिआर. (एक आंखे जोवाना अर्थमां)
,,— णिट्ठुह. (निष्टंभ अर्थमां)
,,— संदाण. (अवष्टंभन अर्थमां)
,,— वावम्फ (श्रम अर्थमां)
,,— णिव्वोल (क्रोधथी मुख मगाडवा अर्थमां)
,,— पयल्ल. (शिथिलता तथा लटकवाना अर्थमां)
,,— णीलुंछ. (पडवुं तथा कुदीजवुं अर्थमां)
,,— कम्म. (क्षौर कर्मना अर्थमां)
,,— गुलल (खुशामद करवाना अर्थमां)
स्मृ— झर, झूर, भर, भल, लढ, विम्हर, सुमर, पयर, पम्हुह, पक्षे-सर.
वि+स्मृ— पम्हुस, विम्हर, वीसर.
व्या+हृ— कोक्क, पोक्क, पक्षे-वाहर.
प्र+सृ— पयल्ल, उवेल्ल, पक्षे-पसर.
,, ,,— महमह. (गंध फेलाववाना अर्थमां)
निर्+सृ— णीहर, नील, धाड, वरहाड, पक्षे-नीसर.
जागृ— जग्ग, पक्षे-जागर.
व्या+पृ— आअड्ड, पक्षे-वावर.

सम्+वृ— साहर, साहट्ट, पक्षे-संवर.
आ+दृ— सन्नाम. पक्षे-आदर.
प्र+हृ— सार. पक्षे-पहर.
अव+तृ— ओह, ओरस, पक्षे-ओअर.
नि+वृ+णि— णिहोड. पक्षे-निवार.
ध्यै— झा
गै— गा
सम्+स्त्यै— संखा
म्लै— वा, पव्वाय, पक्षे- मिला,

व्यंजनान्त धातुओ

शक्— चय, तर, तीर, पार. पक्षे-सक्क.
फक्— थक्क.
श्लाघ्— सलह.
खच्— वेअड, पक्षे-खच
पच्— सोल्ल, पउल. (पउल्ल) पक्षे-पय
मुंच्— छड्ड, अवहेड, मेल्ल, उस्सिक्क, रेअव
णिल्लुंछ, धंसाड. पक्षे मुअ
,, — णिव्वल. (दुःख ने छोड़वाना अर्थमां)
वंच्— वेहव, वेलव, जूरव, उमच्छ, पक्षे-- वंच.
रच्— उग्गह, अवह, विडविड्ड (ड) पक्षे – रय.
समा+रच्— उवहत्थ, सारव, समार, केलाय.
पक्षे-समारय
सिच्— सिंच. सिम्प. पक्षे--सेअ.
वि+रिच्+णि– ओलुंड उल्लुंड, पल्हत्थ. पक्षे--
विरेअ.

प्रच्छ्— पुच्छ.
गर्ज— बुक्क. पक्षे--गज्ज.
,,— ढिक्क. (बळदनी गर्जनाना अर्थमां)
राज्— अग्घ, छज्ज, सह. रीर. रेह.पक्षे-राय.
मस्ज्— आउड्ड, णिउड्ड, बुड्ड, खुप्प.पक्षे-मज्ज.
पुंज्— आरोल, वमाल. पक्षे-पुंज
लस्ज्— जीह. पक्षे-लज्ज.
निज्— ओसुक्क.
मृज्— उग्घुस, लुंछ पुंछ, पुंस, फुस, पुस, लुह, हुल, रोसाण. पक्षे-मज्ज.
भंज्— वेमय, मुसुमूर, मूर, सूर, सूड, विर, पविरंज, करंज, नीरंज. पक्षे-भंज.
व्रज्— वच्च
अनु-व्रज— पडिअग्ग, पक्षे- अणुवच्च
सृज्— निर.
अर्ज्— विढव. पक्षे-- अज्ज.
युज्— जुंज, जुज्ज, जुप्प.
भुज्— भुंज, जिम्म, जेम, कम्म अण्ह समाण. चमढ, चड्ड.
उप+विज्— उव्विय.
उप+भुज्— कम्मव. पक्षे--उवहुंज
बीज्— वीज्ज. पक्षे--वीज.

रंज्+णि— राव. पक्षे–रंज.
वेष्ट्— वेढ.
सम्+वेष्ट्— संवेल्ल
उद्+वेष्ट्— उव्वेल्ल. पक्षे–उव्वेढ.
घट्— गढ. पक्षे–घड.
सम्+घट्— संगल. पक्षे–संघड.
स्फुट्— मुर. (हास्य करण होय तो)
घट्+णि— परिवाड. पक्षे–घड.
उद्+घट्+णि—उग्ग. पक्षे–उग्घाड
वेष्ट्+णि— परिआल. पक्षे–वेढ.
मंड्— चिंच, चिंचअ, चिंचिल्ल, रीड,
टिविडिक्क. पक्षे–मंड.
तुड्— तोड, तुट्ट, खुट्ट, खुड, उक्खुड,
उल्लुक्क, णिलुक्क, लुक्क, उल्लूर. पक्षे–
तुड.
तड्+णि— आहोड, विहोड. पक्षे–ताड.
घूर्ण्— घुल, घोल, घुम्म, पहल्ल.
वि+वृत्— ढंस. पक्षे–विवट्ट.
पत्+णि— णिहोड. पक्षे– पाड
क्वथ्— अट्ट. पक्षे–कढ
ग्रन्थ्— गण्ठ.
मन्थ्— घुसल, विरोल. पक्षे–मंथ.
कथ्— वज्जर, पज्जर, उप्पाल, पिसुण,
संघ, बोल्ल, चव, जम्प, सीस
साह. पक्षे–कह

कथ्— गिच्चर (दुःख कहेवाना अर्थमां)
रोमन्थ्+णि — ओगाल, वग्गोल-पक्षे- रोमन्थ
मद्— मग.
ह्राद्— अवअच्छ.
खाद्— खा. (एकवचनमां)
नि+सद्— णुमज्ज.
छिद्— दुहाव, णिच्छल,णिज्झोड,णिव्वर
णिल्लूर,लूर.पक्षे- छिन्द.
आ+छिद्— ओअन्द,उद्दाल,पक्षे -अच्छिन्द.
मृद्— मल.मढ,परिहट्ट,खड्ड,चड्ड,मड्ड,
पन्नाड.
स्पन्द् चुलुचुल, पक्षे- फन्द,
निर्+पद्— निव्वल,पक्षे--निप्पज्ज
विसं+वद्— विअट्ट,विलोट्ट,फंस.पक्षे-विसंवय.
शद्— झड,पक्खोड.
सद — मट.
सम्+पद् - संपज्ज.
आ+क्रन्द्— णीहर.पक्षे--अक्कन्द.
खिद्— जूर,विसूर,पक्षे--खिज्ज.
विद्— विज्ज.
ह्राद्+णि— अवअच्छ.
छद्+णि — णुम,नूम,सन्नुम,ढक्क,ओम्बाल,
पव्वाल,पक्षे--छाय.
कम्प— उच्छंस,कम्भ,मउम,पक्षे--कम्प.
नि+पिध— हक्क,पक्षे--निसेह.

क्रुध्—	जूर,पक्षे--कुज्झ.
गृध्—	गिज्झ.
सिध्—	सिज्झ.
जन्—	जा,जम्म.
तन्—	तड,तड्ड,तड्डव,विरल्ल,पक्षे--तण.
तृप्—	थिप्प.
उप+सृप्	अल्लिअ,पक्षे- उवसप्प.
सम्+तप्	झंख,पक्षे--संतप्प.
वि+आप्	ओअग्ग,पक्षे--वाव.
सम्+आप्	समाण,पक्षे--समाव.
क्षिप—	गलत्थ,अड्डक्ख,सोल्ल,पेल्ल, णोल्ल,छुह,हुल,परी,घत्त,पक्षे-खिव.
उद्+क्षिप्—	गुलगुंछ,उत्थंघ,अल्लत्थ, उब्भुत्त, उस्सिक्क,हक्खुव,पक्षे- उक्खिव.
आ+क्षिप्	णीरव,पक्षे--अक्खिव
स्वप्—	कमवस,लिस, लोट्ट,पक्षे- सुअ.
वेप्—	आयम्ब,आयज्झ,पक्षे--वेव.
वि+लप्	झंख,वडवड,पक्षे- विलव
लिप्—	लिम्प.
गुप्—	विर,णड,पक्षे--गुप्प.
कृप्+णि—	अवहाव.
प्र+दीप्—	तेअव, सन्दुम,सन्धुक्क,अब्भुत्त. पक्षे-पलीव.
कम्प्+णि—	विच्छोल,पक्षे--कम्प.

अर्प्+णि— अल्लिव, चच्चुप्प, पणाम. पक्षे-अप्प.

लुभ्— संभाव. पक्षे- लुब्भ.

क्षुभ्-- खउर, पड्डुह. पक्षे- खुब्भ.

आ+रभ्-- आरंभ, आढव. पक्षे- आरभ.

उपा+लभ्-- झंखु,पच्चार,वेलव.पक्षे उवालम्भ.

जृम्भ्-- जम्भा.

नम्- णिसुढ, पक्षे - णव (यहां अ का ओ दसवां होता है)

गम्-- जच्छ.

वि+श्रम् – णिव्वा.पक्षे-वीसम

आ+क्रम्-- ओहाव.उत्थार.छुन्द.पक्षे- अक्कम.

भ्रम्— टिरिटिल्ल, ढुण्ढुल्ल, ढण्ढल्ल, चक्कम्म,भम्मड, भमड, भमाड. तलअंट,झंट, झंप,भुम, गुम, फुम.फुस,ढुम,ढुस,परी,पर.पक्षे-भम

गम्-- अई.अइच्छ, अणुवज्ज, अवज्जस. उक्कुस, अक्कुस, पच्चड्ड,पच्छन्द. णिम्मह, णी,णीण,णीलुक्क.पदअ. रम्भ, परिअल्ल. वोल, परिअल, णिरिणास,णिवह.अवसेह, अवहर. पक्षे- गच्छ.

आ+गम्-- अहिपच्चुअ,पक्षे-आगच्छ.

सम्+गम्— अब्भिड. पक्षे- संगच्छ.

अभ्या+गम्-- उम्मत्थ. पक्षे- अब्भागच्छ.

प्रत्या+गम्— पलोट्ट. पक्षे–पच्चागच्छ.
शम्— पडिसा, परिसाम.पक्षे–सम.
रम्— संखुड्ड, खेड्ड, उब्भाव,किलिकिंच,
कोट्टुम,मोट्टाय,णीसर,वेल्ल.पक्षे–
रम.
कम्+णि— णिहुव. पक्षे–काम.
भ्रम्+णि— तालिअंट. तमाड. पक्षे–भाम,
भमाड, भमावे.
उद्+नम्+णि—उत्थंघ, उल्लाल, गुलुगुंछ, उप्पेल.
पक्षे–उन्नाव.
पूर्— अग्घाड, अग्घव, (उग्घव) उद्धुम,
अंगुम, अहिरेम. पक्षे–पूर.
क्षर्— खिर, झर, पज्झर, पच्चड, णिच्चल,
णिट्टुअ.
त्वर— तुवर, जअड.
,,— तूर.(त्यादि तथा शतृ प्रत्यय आगल
होय तो)
,,— तुर.(त्यादिभिन्न प्रत्यय आगल होय तो)
मिश्र्+णि— वीसाल, मेलव. पक्षे–मिस्स.
उद्+ छल्— उत्थल्ल.
वि+गल् — थिप्प, णिट्टुह. पक्षे–विगल.
दल्— विसट्ट. पक्षे–दल.
वल्— वम्फ. पक्षे–वल.
धवल्+णि— दुम. पक्षे–धवल.
तुल्+णि— ओहाम. पक्षे–तुल.

उद्+घुल्+णि-गुण्ठ. पक्षे-उद्धूल.
डुल्+णि— रंखोल. पक्षे-दोल.
भाव्— भा. (एक वचनमां)
प्लव्+णि— ओम्वाल. पव्वाल. पक्षे-पाव.
भ्रंश्— फिड, फिट, फुड, फुट, चुक्क, भुल्ल
पक्षे-भंस.
नश्— णिरणास, णिवह, अवसेह,
पडिसा, सेह, अवहर. पक्षे-नास.
अव+काश्—ओवास.
सम्+दिश्— अप्पाह. पक्षे-संदिस.
दृश्— निअच्छ, पेच्छ, अवयच्छ,
अवयज्झ, वज्ज, सव्वव,
देक्ख, ओअक्ख, अवक्ख,
अवअक्ख, पुलोअ, पुलअ, निअ
अवआस, पास.
स्पृश्— फास, फंस, फरिस, छिव, छिह,
आलुंख, आलिह.
प्र+विश्— रिअ. पक्षे-पविस.
प्र+मृश्— पम्हुस.
नश्+णि— विउड, नासव, हारव, विप्पगाल
पलाव. पक्षे-नास.
दृश्+णि— दाव, दंस, दक्खव. पक्षे-दरिस
वि+कोश्+णि—पक्खोड. पक्षे-विकोस.
प्रकाश्+णि— णुव्व. पक्षे-पयास.
प्र+मृष्— पम्हुस.

पिष्— णिवह, णिरिणास, णिरिणज्ज, रोञ्च, चड्ड. पक्षे– पीस.

भष्— भुक्क, बुक्क. पक्षे– भस.

कृष्— कड्ढ, साअड्ढ, अंच, अणच्छ, अयंछ, आइंछ. पक्षे–करिस.

,, — अक्खोड. (म्यान मांथी तलवार खेंचवाना अर्थमां)

गवेष् — ढुण्ढुल्ल, ढण्ढोल, गमेस, घत्त. पक्षे–गवेस.

श्लिष् — सामग्ग, अवयास, परिअन्त. पक्षे–सिलेस.

बुभुक्ष् — णीरव. पक्षे– बुहुक्ख.

म्रक्ष् — चोप्पड. पक्षे– मक्ख.

कांक्ष् — आह, अहिलंघ, अहिलंख, वच्च, वम्फ, मह, सिह, विलुम्प. पक्षे–कंख.

प्रति+ईक्ष्—सामय, विहीर, विरमाल. पक्षे–पडिक्ख.

तक्ष्— तच्छ, चच्छ, रम्प, रम्फ. पक्षे–तक्ख.

वि+कस्— कोआस, वोसट्ट. पक्षे– विअस.

हस्— गुंज. पक्षे– हस.

भास्— अच्छ.

स्रंस्— ल्हस, डिम्भ. पक्षे- संस.

त्रस्— डर, बोज्ज, वज्ज. पक्षे– तस.

नि+अस्— णिम, णुम.

बोधपाठ ३ जो.

पैशाची अने चूलिका पैशाची भाषा.

पैशाचीना सामान्य नियमो.

१. णकारनो नकार थाय छे. जेमके—

गुणगणाः	गुनगनो.

२. दकारनो तकार थाय छे, अने तकार[illegible]
छे. जेमके-

मदनः	मतनो.	भगवती	
मदनम्	मतनं.	भवतु	
दामोदरः	तामोतरो:	रमताम्	
प्रदेशः	पतेसो.		

३. श् तथा ष् नो स् अने ळकारनो ळका[illegible]
जेमके—

शोभनम्	सोभनं.	विषाणः	विसानो.
शर्मा	समी	शीलम्	सीळं.
वृषभः	विसभो.	जलम्	जळं.

४. टुनो विकल्पे तु थाय छे. जेमके—

कुटुम्बकम् कुतुम्बकं, कुटुम्बकं.

५. यादृश जेवा शब्दोमां दृने स्थाने ति आदेश थाय छे.
जेमके—

यादृशः	यातिसो.	भवादृशः	भवातिसो.
तादृशः	तातिसो.	अन्यादृशः	अन्यातिसो.
कीदृशः	केतिसो.	युष्मादृशः	युम्हातिसो.
ईदृशः	एतिसो.	अस्मादृशः	अम्हातिसो.

६. हृदय शब्दना य नो प थाय छे. जेमके—
    हृदयम् हितपं.

७ (क) ज्ञ, न्य तथा ण्य नो ञ्ञ थाय छे. जेमके—

प्रज्ञा	पञ्ञा.	विज्ञानम्	विञ्ञानं.
संज्ञा	सञ्ञा.	कन्यका	कञ्ञका.
सर्वज्ञः	सव्वञ्ञो.	अभिमन्युः	अभिमञ्ञू.
ज्ञानम्	ञ्ञानं.	पुण्यम्	पुञ्ञं.

(ख) राजन् शब्दना राज्ञः इत्यादि रूपोमांना ज्ञनो चिञ् आदेश विकल्पे थाय छे. जेमके—
    राज्ञा राचिञा, रञ्ञा. राज्ञः राचिञो, रञ्ञो.

८. र्य, स्न तथा ष्ट ना अनुक्रमे रिय, सिन तथा सट आदेश क्वचित् थाय छे. जेमके—
    भार्या भारिया. कष्टम् कसटं.
    स्नातम् सिनातं.

९. अकारान्त नाम थकी पंचमीना एकवचन तरीके आतो तथा आतु प्रत्यय थायछे.
    देवात्—तेवातो, तेवातु. त्वत्-तुमातो, तुमातु.
    दूरात्—तूरातो, तूरातु. मत्—ममातो, ममातु.

१० तद् तथा इदम् शब्द ने तृतीयाना एकवचन ना प्रत्यय सहित पुंल्लिंग तथा नपुंसकलिंगमां नेन अने स्त्रीलिंगमां नाए आदेश थाय छे. जेमके—
    तेन } नेन. तथा } नाए.
    अनेन }   अनया }

११. प्राकृतना तिबादि प्रथम पुरुषना एकवचन इ तथा ए ने स्थाने ति आदेश थाय छे. जेमके—

भवति भोति. ददाति देति.
नयति नेति.

१२. अकारान्त धातुथी पर प्राकृतना इ तथा ए ने स्थाने अनुक्रमे ति तथा ते आदेश थायछे. जेमके—

लपति-लपति, लपते. गच्छति-गच्छति, गच्छते.
आस्ते-अच्छति, अच्छते. रमते-रमति, रमते.

१३. भविष्यकालमां प्रथमपुरुषना एकवचन तरीके स्स्य प्रत्यय थाय छे. जेमके—

भविष्यति हुवेय्य.

१४. (क) भावकर्ममां थता क्य प्रत्ययने इय्य आदेश थाय छे. जेमके—

गीयते—गिय्यते. रम्यते—रमिय्यते.
दीयते—दिय्यते. पठ्यते—पढिय्यते.

(ख) कृ धातुने कयप्रत्यय सहित कीर आदेश थाय छे. जेमके—

क्रियते कीरते.

१५. (क) क्त्वार्थक त्वाने स्थाने तून एवो आदेश थाय छे जेमके-मन्तून,रन्तून,हसितून,पठितून,कधितून.

(ख) ष्ट्वाने स्थाने द्धून, तथा त्थून आदेश थाय छे. जेमके—

नष्ट्वा-नद्धून, नत्थून. दृष्ट्वा-तद्धून, तत्थून.

आ शिवाय पाली ना शौरसेनी भाषाना घणा नियमो पैशाची भाषाने लागु पडे छे. मात्र नियमावलिनो २४ मी कलममां ३१ मा कलम सुधीना व्यंजन लोप अने व्यंजन विकारना सामान्य नियमो, अने तेना अप-

वादरूप विशेष आदेशो शौरसेनीने लागु पडे छे पण पैशाचीने लागु पडता नथी.

पैशाचीना शब्दो—

हितपक (हृदयक) न०—हृदय.

०उज्झित (उज्झित) त्रि०—त्यक्त.

कतकपट (कृतकपट) त्रि०—जेणे कपट करेलुं छे एहवुं.

धातु.

वल (वल्)—पाछा आववुं वलवुं.

चू० पै० ना शब्दो.

अनालम्भ (अनारम्भ) त्रि०—आरंभ रहित.

लाच (राजन्)—राजा

पन्धु (बन्धु) पु०—बान्धव.

आलम्पित (आलम्बित) त्रि०—आश्रित.

चूलिका-पैशाचीना नियमो.

१. वर्गना त्रीजा अक्षर ने स्थाने प्रथम अक्षर अने चोथा अक्षरने स्थाने द्वितीय अक्षर थाय छे. जेमके—

नगरम्	नकरं.	व्याघ्रः	वक्खो.
गिरितटम्	किरितटं.	निर्झरः	निच्छरो.
राजा	राचा.	झर्झरः	छच्छरो.

१. कटलाएक आचार्यने मते उपरनो नियम अनादि अक्षरने ज लागु पडे छे. आदिभूत तृतीय तथा चतुर्थने अनुक्रमे प्रथम तथा द्वितीय अक्षर थतो नथी. जेमके—

गतिः	गती.	धर्मः	धम्मो.
जीमूतः	जीमूतो.	झर्झरः	झच्छरो.
डमरुकः	डमरुको.	ढक्का	ढक्का.
दामोदरः	दामोतरो.	भगवती	भकवती.

जर्जरम्	जच्चरं.	गाढम्	काढं.
जीमूतः	चीमूतो.	ढक्का	ठक्का.
तडागम्	तडाकं.	षण्ढः	सण्ठो.
डमरुकः	टमरुको.	मधुरम्	मधुरं.
मदनः	मतनो.	पान्थयः	पन्थो.
कन्दर्पः	कन्तप्पो.	धूलिः	थूली.
दामोदरः	तामोतरो.	रभसः	रफसो.
पालकः	पालको.	रम्भा	रम्फा.
मेघः	मेखो.	भगवती	फकवती.

२. र नो ल् विकल्पे थाय छे. जेमके—

गोरी—गोली, गोरी. चरणम्—चलनं, चरनं.

आ शिवाय बाकी बधुं पैशाची माफक जाणवुं.

पैशाचीनी गाथाओ.

पञ्चान रानिना गुननिधिना रञ्ञा अनञ्ञपुञ्ञेन ।
चिन्तेतव्वं मननानिवेरिनो किल विजितकथा ॥१॥
सुद्धाकसाणहितपक-जिन-चरन-कुतुम्प-चेमरो गोरी ।
मुथकुटुम्पसिनेहो न चलति गन्तून मुक्खपथं ॥२॥
पन्ति कमाया नत्थून पन्ति नठून सच्चकम्माइं ।
समसलिलसिनानानं उज्झितकलकदमरियान ॥३॥
यति पविसिरमनन्तो पठिल्ले कारते न आयच्चो ।
पासित तानिस जामी तमो जनो निच्चुन्ति याति ॥४॥
फच्छति रन्ने सेलेवि अच्छते दढनपं तपन्तोवि ।
ताव न लभेय्य मुक्खं याव न विसयान तूरागो ॥५॥
मुरातु नेन नेच्छति मुत्तिसिरी नाट्ट योगकिरियाए ।
कसाहिअंगळवसुमितन्नरम् उवयो समाहेन ॥६॥

सु० म० काळ गा० १–११.

चूलिकापैशाचीनी गाथाओ

वन्धू सठासठेसुवि आलम्पितउपसमो अनालम्फो।
सव्वञ्जलाचचलने अनुझायन्तो हवति योगी ॥७॥
भच्छरडमरुकभेरीढक्काजीमूतगफिरघोसावि ।
पम्हनियोजितम्र अप्पं जस्स न दोलिन्ति सो घञ्जो ॥८॥

-कु० च० अष्टमे सर्गे १२--१३

बोधपाठ ४ थो.

अपभ्रंश भाषा.

सामान्य नियमो.

१. अपभ्रंशमां एक स्वरने बदले बीजो स्वर प्रायः थायछे. जेमके—

वचन—	वेण,	वीण.	
कृत्य—	कच्चु,	काच.	
बाहु—	बाह,	बाहा,	बाहु.
पृष्ठ—	पुट्टि,	पिट्टि,	पट्टि.
तृण—	तणु,	तिणु,	तृणु.
सुकृत—	सुकिदु,	सुकिओ,	सुकृदु.
क्लृन्न—	किन्नओ,	किलिन्नओ.	
रेखा—	लिह,	लेह,	लीह.
गौरी—	गउरि,	गोरि.	

२. विभक्तिनी पूर्वे नामना अंत्य दीर्घ स्वरनो ह्रस्व अने

१. लुकनो पण विभक्तिमां समावेश थायछे.

ह्रस्व स्वरनो दीर्घ विकल्पे थाय छे. जेमके—

श्यामलः— सामला, सामल.

दीर्घः— दीहा, दीह.

स्वर्णरेखा— सुवण्णरेह. सुवण्णरेहा.

निद्रया— निद्दए, निद्दाए.

३. अनादि, असंयुक्त तथा स्वरथी पर कनो ग, खनो घ, तनो द, थनो ध, पनो ब, फनो भ, थाय छे. जेमके—

विक्षोभकर–विच्छोहगर. शपथ—सवध.

सुख— सुघ. सफल—सभल.

कथित— कधिद.

४. अनादि तथा असंयुक्त मनो वँ विकल्पे थाय छे. जेमके—

कमल— कवँल, कमल.

भ्रमर— भवँर, भमर.

५. (क) संयुक्त रनो विकल्पे लोप थाय छे. जेमके—

प्रिय— पिय, प्रिय.

(ख) क्वचित् संस्कृतमां रेफ न होय तोपण अपभ्रंशमां आवे छे. जेमके—व्यास–व्रास, वास

६. प्राकृतमां थयेल म्हनो अपभ्रंशमां म्भ विकल्पे थाय छे. जेमके—

संस्कृत	प्राकृत	अपभ्रंश
ग्रीष्म—	गिम्ह.	गिम्भ, गिम्ह.
श्लेष्म—	सिम्ह.	सिम्भ. सिम्ह.
ब्रह्म—	बम्ह.	बम्भ. बम्ह.

७. अनादि तथा असंयुक्त म तथा यनो लोप थाय छे,

अने तेने बदले आगला स्वरनो अनुक्रमे ए तथा ओ थाय छे. जेमके—

संस्कृत	प्राकृत	अपभ्रंश
वचन—	वयण,	वेण.
शयन—	सयण,	सेण.
नयन—	नयण,	नेण.
नवनीत—	नवणीअ,	नोणीअ.

तद्धित प्रत्ययो.

८. पुल्लिंग तथा नपुंसक लिंग वाचक नामने स्वार्थमां अ, अड, उल्ल, अडअ, उल्लअ तथा उल्लडअ प्रत्यय लागे छे. जेमके—

दृष्ट— दिट्ठअ. हृदय— हिअडअ.
दोष— दोसड. चूड— चूडुल्लअ.
कुट— कुडुल्ल. बल— बलुल्लडअ.

९. नामने संबंधार्थमां केर अने तण प्रत्यय लागे छे. जेमके—

जसुकेरु ( ), अम्हहं तणु ( ).

१०. युष्मद् तथा अस्मद् शब्दने संबंधार्थमां आर प्रत्यय लागे छे. जेमके—

त्वदीय— तुहार. मदीय— महार.
युष्मदीय— तुम्हार. अस्मदीय—अम्हार.

११. नामने भाव अर्थमां प्पण तथा त्तण प्रत्यय लागे छे. जेमके—

वृद्धत्व— वड्डप्पण, वड्डत्तण.

गुरु शब्दनां रूपो.

	ए०	ब०
प्र०	गुरू, गुरू.	गुरू, गुरू.
द्वि०	गुरु, गुरू.	गुरू, गुरू.
तृ०	गुरुणं, गुरूणं, गुरुं, गुरूं, गुरुणा, गुरुणं, गुरूणा, गुरूणां,	गुरुहिं, गुरूहिं.
पं०	गुरुहे, गुरूहे.	गुरुहुं, गुरूहुं
ष०	गुरु, गुरू.	गुरुहुं, गुरूहुं, गुरुहं, गुरूहं.
स०	गुरुहि, गुरूहि.	गुरुहिं, गुरूहिं. गुरुहुं, गुरूहुं.
सं०	गुरु, गुरू.	गुरुहो, गुरूहो, गुरु, गुरू.

उकारान्त पुल्लिंग शब्दोनां रूपो गुरु शब्द माफक जाणवां.

अकारान्तनपुंसकलिंग शब्दोना प्रत्ययो.

	ए०	ब०
प्र०	उ, ० (लुक्)	इं.
द्वि०	उ, ० (लुक्)	इं.
सं०	उ, ० (लुक्)	हो. इं.

बाकीना प्रत्ययो अकारान्त पुल्लिंगनी माफक जाणवा.

नेण शब्दनां रूपो.

	ए०	ब०
प्र०	नेणु, नेण, नेणा.	नेणाइं
द्वि०	नेणु, नेण, नेणा.	नेणइं,
सं०	नेणु, नेण, नेणा.	नेणहो,

बाकीनां रूपो अकारान्त पुल्लिंगनी माफक जाणवां।

अकारान्त नपुंसकलिंग शब्दोनां रूपो नेत्तशब्दनी माफक जाणवां.

इकारान्त तथा उकारान्त नपुंसकलिंगना प्रत्ययो.

	ए०	ब०
प्र०	० (लुक्)	इं.
द्वि०	० (लुक्)	इं.
सं०	० (लुक्)	हो, इं.

बाकीना प्रत्ययो इकारान्त तथा उकारान्त पुल्लिंगनी माफक जाणवां.

अच्छि शब्दनां रूपो.

	ए०	ब०
प्र०	अच्छि, अच्छी.	अच्छिइं, अच्छीइं.
द्वि०	अच्छि, अच्छी.	अच्छिइं, अच्छीइं.
सं०	अच्छि, अच्छी.	अच्छिहो, अच्छीहो, अच्छिइं, अच्छीइं.

बाकीनां रूपो इकारान्त पुल्लिंगनी माफक जाणवां।

इकारान्त नपुंसकलिंग शब्दनां रूपो अच्छि शब्द माफक जाणवां.

धणु शब्दनां रूपो.

	ए०	ब०
प्र०	धणु, धणू.	धणुइं, धणूइं.
द्वि०	धणु, धणू.	धणुइं, धणूइं.

सं० धणु, धणू. धणुहो, धणूहो,
धणुइं, धणूइं.

बाकीनां रूपो उकारान्त पुलिंगनी माफक जाणवां.

उकारान्त नपुंसकलिंग शब्दोनां रूपो धणु शब्द माफक जाणवां.

जेने छेडे कनो उद्वृत्त अ होय एवा शब्दोने नपुंसकलिंगमां प्रथमा तथा द्वितीयाना एकवचनमां शून्य तथा उने बदले मात्र उं प्रत्यय लागे छे. जेमके—

नेत्तअ (नेत्रक) शब्द.

प्र० द्वि० नेत्तउं. नेत्तअइं, नेत्तआइं.

बाकीनां रूपो नेत्त शब्द माफक जाणवां.

अच्छिअ (अक्षिक) शब्द.

प्र० द्वि० अच्छिउं. अच्छिअइं, अच्छिआइं.

धणुअ (धनुष्क) शब्द.

प्र० द्वि० धणुउं. धणुअइं, धणुआइं.

बोधपाठ ५ मो.

अपभ्रंश भाषा–चालु.

स्त्रीलिंग तथा सर्वनाम शब्दो.

स्त्रीलिंगना प्रत्ययो.

	ए०	ब०
प्र०	०(लुक्)	उ, ओ.
द्वि०	०(लुक्)	उ, ओ.
तृ०	ए	हिं.
पं०	हे	हु.
ष०	हे, ०(लुक्)	हु, ०(लुक्)
स०	हि	हिं.
सं०	०(लुक्)	हो, ०(लुक्)

१. स्त्रीलिंगवाचक नामने स्वार्थमां ई, अडी, उल्ली, अडिआ, उल्लिआ तथा उल्लडिआ प्रत्यय लागे छे. जेमके—

माला+ई=माली, माला+अडी=मालडी, माला+उल्ली =मालुल्ली, माला+अडिआ=मालडिआ, माला+उल्लिआ= मालुल्लिआ. माला+उल्लडिआ=मालुल्लडिआ.

मालडिआ (माला) शब्दनां रूपो.

	ए०	ब०
प्र०	मालडिआ, मालडिअ.	मालडिआउ, मालडिअउ, मलडिआओ, मालडिअओ.

सं० भणु, भणू. भणुहो, भणूहो, भणुइं, भणूइं.

बाकीनां रूपो उकारान्त पुल्लिंगनी माफक जाणवां.

उकारान्त नपुंसकलिंग शब्दोनां रूपो भणु शब्द माफक जाणवां.

जेने छेडे कनो उद्वृत्त अ होय एवा शब्दोने नपुंसक लिंगमां प्रथमा तथा द्वितीयाना एकवचनमां अन्त तथा उने बदले मात्र उं प्रत्यय लागे छे. जेमके—

नेत्तअ (नेत्रक) शब्द.

प्र० द्वि० नेत्तउं. नेत्तअइं, नेत्तआइं.

बाकीनां रूपो नेत्त शब्द माफक जाणवां.

अच्छिअ (अक्षिक) शब्द.

प्र० द्वि० अच्छिउं. अच्छिअइं, अच्छिआइं.

भणुअ (धनुष्क)शब्द.

प्र० द्वि० भणुउं. भणुअइं, भणुआइं.

बोधपाठ ५ मो.

अपभ्रंश भाषा—चालु.

स्त्रीलिंग तथा सर्वनाम शब्दो.

स्त्रीलिंगना प्रत्ययो.

	ए०	ब०
प्र०	०(लुक्)	उ, ओ.
द्वि०	०(लुक्)	उ, ओ.
तृ०	ए	हिं.
पं०	हे	हु.
ष०	हे, ०(लुक्)	हु, ०(लुक्)
स०	हि	हिं.
सं०	०(लुक्)	हो, ०(लुक्)

१. स्त्रीलिंगवाचक नामने स्वार्थमां ई, अडी, उल्ली, अडिआ, उल्लिआ तथा उल्लडिआ प्रत्यय लागे छे. जेमके—

माला+ई=माली, माला+अडी=मालडी, माला+उल्ली =मालुल्ली, माला+अडिआ=मालडिआ, माला+उल्लिआ= मालुल्लिआ. माला+उल्लडिआ=मालुल्लडिआ.

मालडिआ (माला) शब्दनां रूपो.

	ए०	ब०
प्र०	मालडिआ, मालडिअ.	मालडिआउ, मालडिअउ, मलडिआओ, मालडिअओ.

द्वि० मालविआ, मालविअ. मालविआउ, मालविअउ, मालविआओ, मालविअओ.
तृ० मालविआए, मालविअए. मालविआहिं, मालविअहिं.
पं० मालविआहे, मालविअहे. मालविआहु, मालविअहु.
ष० मालविआहे, मालविअहे, मालविआ, मालविअ, मालविआ, मालविअ. मालविआहु, मालविअहु.
स० मालविआहिं, मालविअहिं. मालविआहिं, मालविअहिं.
सं० मालविआ, मालविअ. मालविआहो, मालविअहो, मालविआ, मालविअ.

आकारान्त स्त्रीलिंगशब्दोनां रूपो मालविआ शब्द माफक जाणवां.

मुद्धि शब्दनां रूपो.

	ए०	ब०
प्र०	मुद्धि, मुद्धी.	मुद्धिउ, मुद्धिओ, मुद्धीउ, मुद्धीओ.
द्वि०	मुद्धि, मुद्धी.	मुद्धिउ, मुद्धीउ, मुद्धिओ, मुद्धीओ.
तृ०	मुद्धिए, मुद्धीए.	मुद्धिहिं, मुद्धीहिं.
पं०	मुद्धिहे, मुद्धीहे.	मुद्धिहु, मुद्धीहु.
ष०	मुद्धिहे, मुद्धीहे, मुद्धि, मुद्धी.	मुद्धिहु, मुद्धीहु, मुद्धि, मुद्धी
स०	मुद्धिहि, मुद्धीहि.	मुद्धिहिं, मुद्धीहिं.

सं० बुद्धि, बुद्धी.   बुद्धिहो, बुद्धीहो, बुद्धि, बुद्धी.

इकारान्त स्त्रीलिंगशब्दोनां रूपो बुद्धि शब्द माफक जाणवां.

कुडुल्ली शब्दनां रूपो.

	ए०	ब०
प्र०	कुडुल्ली, कुडुल्लि.	कुडुल्लीउ, कुडुल्लिउ, कुडुल्लीओ कुडुल्लिओ.
द्वि०	„	„

बाकीनां रूपो बुद्धि शब्दनी माफक जाणवां.

ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोनां रूपो कुडुल्ली शब्द माफक जाणवां.

धेणु शब्दनां रूपो.

	ए०	ब०
प्र०	धेणु, धेणू.	धेणुउ, धेणूउ, धेणुओ, धेणूओ
द्वि०	धेणु, धेणू.	धेणुउ, धेणूउ, धेणुओ, धेणूओ
तृ०	धेणुए, धेणूए.	धेणुहिं, धेणूहिं.
पं०	धेणुहे, धेणूहे.	धेणुहु, धेणूहु.
ष०	धेणुहे, धेणूहे, धेणु, धेणू.	धेणुहु, धेणूहु, धेणु, धेणू.
स०	धेणुहि, धेणूहि.	धेणुहिं, धेणूहिं
सं०	धेणु, धेणू.	धेणुहो, धेणूहो, धेणु, धेणू.

उकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोनां रूपो धेणु शब्द माफक जाणवां

चमू शब्दनां रूपो.

	ए०	ब०
प्र०	चमू, चमु.	चमूउ, चमुउ, चमूओ, चमुओ.
द्वि०	"	"

बाकीनां रूपो धेणु शब्दनी माफक जाणवां.

ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोनां रूपो चमू शब्द माफक जाणवां.

सर्वनाम शब्दो.

अकारान्त सर्वादि शब्दोनां रूपो सामान्य रीते जिण शब्दनी माफक थाय छे; लगार फेरफार थाय छे, ते नीचे प्रमाणे छेः—

१. इदम् शब्दने आय आदेश थाय छे अने सर्व शब्दने साह तथा किम् शब्दने कवण तथा काइं आदेश विकल्पे थाय छे.

२. अकारान्त सर्वादि शब्दोने पंचमीना एकवचनमां हां तथा सप्तमीना एकवचनमां हिं प्रत्यय लागे छे. जेमके-सव्वहां, सव्वाहः सव्वहिं, सव्वम्मि. बाकीनां रूपो जिण शब्द माफक जाणवां.

३. यद् तथा तद् ने प्रथमा तथा द्वितीयाना एकवचननी विभक्ति सहित अनुक्रमे ध्रुं तथा त्रं आदेश विकल्पे थाय छे.

४. किम् शब्दने पंचमीना एकवचनमां विभक्तिसहित किहे आदेश विकल्पे थाय छे. पक्षे काहां, कहां.

५. एतद् तथा अदस् शब्दने प्रथमा तथा द्वितीयाना

१ [illegible]

बहुवचनमां विभक्ति सहित अनुक्रमे एइ तथा ओइ आदेश थाय छे.

६. एतद् शब्दने प्रथमा तथा द्वितीयाना एकवचनमां विभक्ति सहित पुल्लिंगमां एहो, स्त्रीलिंगमां एह तथा नपुंसकलिंगमां एहु आदेश थाय छे.

७. यद्, तद् तथा किम् शब्दने स्त्रीलिंगमां षष्ठीना एकवचनमां विभक्ति सहित अनुक्रमे, जहे, तहे तथा कहे आदेश थाय छे.

८. इदम् शब्दने नपुंसक लिंगमां प्रथमा तथा द्वितीयाना एकवचनमां विभक्ति सहित इमु आदेश थाय छे.

नोंध—स्त्रीलिंगमां सर्वादि शब्दोने ई तथा आ प्रत्यय लागवाथी सव्वी तथा सव्वा बनशे, अने तेनां रूपो कुडुल्ली तथा मालडिआ माफक जणवां.

तुम्ह (युष्मद्) नां रूपो.

	ए०	व०
प्र०	तुहुं.	तुम्हइं, तुम्हे.
द्वि०	पइं, तइं.	तुम्हइं, तुम्हे.
तृ०	पइं, तइं.	तुम्हेहिं.
पं०	तउ, तुज्झ, तुध्र.	तुम्हहं.
ष०	तउ, तुज्झ, तुध्र.	तुम्हहं.
स०	पइं, तइं.	तुम्हासु.

अम्ह (अस्मद्)नां रूपो.

	ए०	व०
प्र०	हउं.	अम्हइं, अम्हे.

धम्नु शब्दनां रूपो.

	ए०	ब०
प्र०	धम्नु, धमु.	धम्नुउ, धमुउ, धम्नुओ, धमुओ.
द्वि०	"	"

बाकीनां रूपो धेणु शब्दनी माफक जाणवां.

उकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोनां रूपो धम्नु शब्द माफक जाणवां.

सर्वनाम शब्दो.

अकारान्त सर्वादि शब्दोनां रूपो सामान्य रीते जिण शब्दनी माफक थाय छे; खास फेरफार थाय छे, ते नीचे प्रमाणे छे:—

१. इदम् शब्दने आय आदेश थाय छे अने सर्व शब्दने साह तथा किम् शब्दने कवण तथा काइं आदेश विकल्पे थाय छे.

२. अकारान्त सर्वादि शब्दोने पंचमीना एकवचनमां हां तथा सप्तमीना एकवचनमां हि प्रत्यय लागे छे. जेमके- सव्वहां, सव्वाहां; सव्वहि, सव्वाहि. बाकीनां रूपो जिण शब्द माफक जाणवां.

३. यद् तथा तद् ने प्रथमा तथा द्वितीयाना एकवचनमां विभक्ति सहित अनुक्रमे ध्रुं तथा त्रं आदेश विकल्पे थाय छे.

४. किम् शब्दने पंचमीना एकवचनमां विभक्तिसहित किहे आदेश विकल्पे थाय छे. पक्षे काहां, कहां.

५. एतद् तथा अदस् शब्दने प्रथमा तथा द्वितीयाना

१ कई शब्दनां रूपो इकारान्त माफक जाणवां.

बहुवचनमां विभक्ति सहित अनुक्रमे एइ तथा ओइ आदेश थाय छे.

६. एतद् शब्दने प्रथमा तथा द्वितीयाना एकवचनमां विभक्ति सहित पुल्लिंगमां एहो, स्त्रीलिंगमां एह तथा नपुंसकलिंगमां एहु आदेश थाय छे.

७. यद्, तद् तथा किम् शब्दने स्त्रीलिंगमां षष्ठीना एकवचनमां विभक्ति सहित अनुक्रमे, जहे, तहे तथा कहे आदेश थाय छे.

८. इदम् शब्दने नपुंसक लिंगमां प्रथमा तथा द्वितीयाना एकवचनमां विभक्ति सहित इमु आदेश थाय छे.

नोंध—स्त्रीलिंगमां सर्वादि शब्दोने ई तथा आ प्रत्यय लागवाथी सव्वी तथा सव्वा बनशे, अने तेनां रूपो कुडुल्ली तथा मालडिआ माफक जणवां.

तुम्ह (युष्मद्) नां रूपो.

	ए०	ब०
प्र०	तुहुं.	तुम्हइं, तुम्हे.
द्वि०	पइं, तइं.	तुम्हइं, तुम्हे.
तृ०	पइं, तइं.	तुम्हेहिं.
पं०	तउ, तुज्झ, तुध्र.	तुम्हहं.
ष०	तउ, तुज्झ, तुध्र.	तुम्हहं.
स०	पइं, तइं.	तुम्हासु.

अम्ह (अस्मद्)नां रूपो.

	ए०	ब०
प्र०	हउं.	अम्हइं, अम्हे.

जं हितु चपणु चविज्जइ थोवउं पुं परिणमँइ समत्त-
पयारेहिं ॥२॥

तं वोल्लिअइ जु सचु पर इमु धम्मक्खरु जाणि ।
एहो परमत्था एहु सिवु एह सुहरयणहं खाणि ॥३॥
एहु सुसावय ओइ सुणि, विचरन्त तवहिं तवाइं ।
आयहो जम्महो एहुफलु नायइं विसय सुहाइं ॥४॥
साहुवि लोउ तडप्फडइ सव्वुवि पण्डिउ जाणु ।
कवणुवि एहु न चिन्तवइ काइंवि अं निव्वाणु ॥५॥
सव्वहो कासुवि उवरि तुहुं एहु चिन्तसु निम्मोह ।
तुम्हे म निवडहु भवगहणि तुम्हइं सुहिआ होह ॥६॥
तुम्हे निक्खउ अप्पु जिम्वँ तुम्हइं जिम्वँ अप्पाणु ।
पइं अणुसासउं पसमु करि तइं नेउं अक्खउ ठाणु ॥७॥
पइं करिजव्वी जीवदय तइं बोल्लेवउ सच्चु ।
पइं सुहु तइं कल्लाण तउ तउ होहिमि कयकिचु ॥८॥
सेवेअव्वा साहु पर तुम्हेहिं इह जम्मम्मि ।
तुज्झु समत्तणु तुम्र खम नउ संजमु चिन्तेमि ॥९॥
कलिमलु तुज्झु पणासिहो तउ घनेही पावु ।
मुक्खवुवि तुम्र न दूरि ठिउ करि धम्मक्खरि ठावु ॥१०॥
तुम्हइं मुक्खु न दूरि ठिअ जइ संजमु तुम्हासु ।
हउं तुम्ह पन्थवु इअ भणिवि एहु जम्पहु सव्वेसु ॥११॥
अम्हे निन्दउ कोवि जणु अम्हइं वण्णउ कोवि ।
अम्हे निन्दहुं कंवि नवि नम्हइं वण्णहुं कंवि ॥१२॥
मइं मिल्लेवा भवगहणु मइं सिर एहो बुद्धि ।
मन्था हत्थउ सुगुरु मइं पावउं अप्पहो सुद्धि ॥१३॥
अम्हेहिं केणवि विहिवसिण एहु मणुअत्तणुपत्तु ।

मज्झु अदूरे होउ सिवु महु रुचउ मिच्छत्तु ॥१४॥
अम्हहं मोह परोहु गउ संजमु हुउ अम्हासु ।
विसय न लोलिम महु करहिं म करहि इअ वीमासु॥१५॥

— कु० च० अष्टमे सर्गे ३९–४०.

× × × × × × ×

कायकुडुल्ली निरु अथिर जीवियडउ चलु एहु ।
ए जाणिवि भवदोसडा असुहउ भावु चएहु ॥१६॥
ते धन्ना कन्नुल्लडा हिअउल्ला ति कयत्थ ।
जे खणि खणिवि नवुल्लडअ घुण्टहिं धरहिं सुअत्थ ॥१७॥
पइट्ठी कन्नि जिणागमहो वत्तडिआवि हु जासु ।
अम्हारउँ तुम्हारउँ वि एहु ममत्तु न तासु ॥१८॥
जीवु जित्तुलु जिअइ जियलोइ जइ तित्तुलु दमु करइ ।
गणइ विहवु एत्तुलु न केत्तुलु तो इत्तहे नाणु लहि जाइ
लोइ तेत्तहि निरुत्तउ ॥१९॥

—कु० च० अष्टमे सर्गे ७२–७५.

बोधपाठ ६ ठो.

(अपभ्रंशभाषा-चालु)

धातुओ.

१. वर्तमानकालना प्राकृत तथा शौरसेनी करतां विशेष प्रत्ययो नीचे प्रमाणे छे:—

	ए०	ब०
प्र०	×	हिं.
म०	हि	हु.
उ०	उं	हुं.

२. आज्ञार्थमां प्राकृत उपरांत मध्यम पुरुषना एकवचनमां इ, उ तथा ए प्रत्यय विशेष लागे छे.

३. भविष्यकालमां प्राकृतना हि ने स्थाने स विकल्पे लागे छे.

४. नीचे आपेला संस्कृत धातुओने नीचे बताव्या प्रमाणे आदेशो थाय छे:—

व्रज्—वुञ. तक्ष्—छोल्ल.
भू—हुच. दृश्—प्रस्स.
ब्रू—ब्रुव. ग्रह्—गृण्ह.

कृदंतो

५. कृ धातुने कर्ममां वर्तमान कालना उत्तम पुरुषना एकवचनमां प्रत्यय सहित कीसु आदेश विकल्पे थाय छे. पक्षे किज्जउं (किये).

६. तव्य प्रत्यय ने इएव्वउं, एव्वउं तथा एवा आदेश थाय छे. जेमके—

कर्तव्यम्—करिएव्वउं, करेव्वउं, करेवा.

७. त्वा प्रत्ययने इ, इउ, इवि, अवि, एप्पि, एप्पिणु, एवि तथा एविणु आदेश थाय छे.

८. गम् धातुथी एप्पिणु तथा एप्पिना एकारनो विकल्पे लोप थाय छे. जेमके—गम्पिणु, गमेप्पिणु; गम्पि, गमेप्पि.

९. तुम् प्रत्ययने एप्पि, एप्पिणु, एवि, एविणु, एवं अण, अणहं तथा अणहिं आदेश थाय छे.

१०. धातुथकी कर्ता अर्थमां अणअ प्रत्यय थाय छे. जेमके—मारणअ.

११. नीचे आपेला कृदन्तने नीचे बताव्या प्रमाणे आदेशो थाय छे:—

विपण्ण—वुन्न. रम्य—रवण्ण.
उक्त—वुत्त.

अव्ययोना आदेशो.

१२. नीचे आपेला अव्ययोने नीचे बताव्या प्रमाणे आदेशो थाय छे:—

कथम्—किम, किवँ, केम, केवँ, किध, किह.	मनाक्—मणाउं.
यथा—जिम, जिवँ, जेम, जेवँ, जिध, जिह.	यावत्—जाम, जाउं, जामहिं.
तथा—तिम, तिवँ, तेम, तेवँ, तिध, तिह.	तावत्—ताम, ताउं, तामहिं.
	किल—किर.
	दिवा—दिवे.
	अथवा—अहवइ.

यत्र—जेत्थु, जत्तु, जेत्तहे.
तत्र—तेत्थु, तत्तु, तेत्तहे.
कुत्र—केत्थु, केत्तहे.
अत्र—एत्थु, एत्तहे.
सर्वत्र—सव्वेत्तहे.
परत्र—परेत्तहे.
एतर्हि—एएत्तहे, एतेत्तहे.
प्रायशः—प्राउ, प्राइव, प्राइम्व, पग्गिम्व.
अन्यथा—अनु, पक्षे अन्नह.
कुतः—कउ, कहन्तिहु.
ततः—तो.
तदा—तो.
एवम्—एम्व.
परम्—पर.
समम्—समाणु.
ध्रुवम्—ध्रुवु.
मा—मं.
सह—सहुं.
नहि—नाहिं.
पश्चात्—पच्छइ.
एवमेव—एम्वइ.
एव—जि.
इदानीम्—एम्वहिं.
प्रत्युत—पच्चलिउ.
इतः—एत्तहे.
शीघ्रम्—वहिल्लु.
पुनः—पुणु.
विना—विणु.
अवश्यम्—अवसें, अवस.
एकशः—एक्कसि.
इव—जणि, जणु, नं, नउ, नाइ, नावइ.
पृथक् पृथक्—जुअं जुअ.
यदि—छुडु.
मामिकाः—मम्भेसी.

१३. घइं, खाइं, इत्यादि पादपूरणार्थक निपातो अपभ्रंशमां कोइ कोइ ठेकाणे वपराय छे.

१४. केहिं, तेहिं, रेसि, रेसिं, तणेण ए पांच निपात तादर्थ्य चतुर्थीना अर्थमां वपराय छे.

१५. हुहुरु आदि शब्दानुकरणमां अने घुग्घादि चेष्टानुकरणमां वपराय छे.

शब्दो.

आलडी (आलि) स्त्री० परस्त्री आदिनी प्रार्थनारूप अनर्थ.
निच्छअ (निश्चय) पुं० शंका रहित.
पहाण (प्रधान) न० मुख्य.
बम्भ (ब्रह्म) न० शील.
संतोसामअ (संतोषामृत) न० संतोषरूपी अमृत.
दुक्कयकम्म (दुष्कृतकर्म) न० नठारां कर्मो.
पच्छइताव (पश्चात्ताप) पुं० पस्तावो.
कसरक्क (कसरत्क) पुं० जमती वखते करवामा आवतो एक जातनो अवाज.
पावद्दह (पापह्रद) पुं० पापरूपी तलाव.
मक्कड (मर्कट) पुं० वांदरो.
परिग्गह (परिग्रह) पुं० वस्तुओनो संग्रह.
अलिअ (अलीक) न० कूट भाषण.
तुरिअ (त्वरित) त्रि० उत्सुक.
अणाउलअ (अनाकुलक) त्रि० आकुल नहि तेवुं.
अचप्पलअ ( ) न० सत्य.
झाण (ध्यान) न० ध्यान.
निम्ममत्त (निर्ममत्व) न० ममत्व रहित.
भल्लत्तण (भद्रत्व) न० भद्रता, भलाई.
सामाइअ (सामायिक) न० सामायिक व्रत.

धातुओ.

जोअ (द्युत) शोधवुं

अव्ययो.

इणपरि ( ) अ० आ रीते.
निरानिउ ( ) अ० निश्चित.

गाथाओ.

रे मण करसि कि आलसो विसया अच्छहु दूरि।
करणइं अच्छइ कम्भिअइं कहुउं सिवफलु भूरि ॥१॥
इणपरि अप्पउ सिक्खविवि तुह अक्खहुं परमत्थु।
सुमरि जिणागम धम्मु करि संजमु वहु पसत्थु ॥२॥
संजम लीणहो मोक्खसुहु निच्छइं होसइ तासु।
पिय वल्लि कोसु भणन्ति अउ णाइं पहुचहिं जासु ॥३॥
मयहं वयणइं जो सुणइ उवसमु युणइ पहाणु।
पस्सदि सत्तुवि मित्तु जिम्व सो गुन्हइ निव्वाणु ॥४॥

— कु० प० महो सर्ग ४१–४४

× × × ×

धम्मु अणाणाहसु चरइ जो अणवराइमनित्तु।
पाइय पावइ तहिं जि भवि सो निव्वाणु पवित्तु ॥५॥
पाइम्व भवि सुहु दुक्खइं पणिस्थ जण सुहलुद्ध।
ते संतोसामयण चिणु पाउ पमगहिं मुद्ध ॥६॥
रयणत्तउ फुडु अणुसरहु अमह मुत्ति फलंति।
भण्डइ लम्भहिं पउर धण अनु किं नहउ पडन्ति ॥७॥
कउ वह भमिअइ भवगहणि? सुक्खु गहन्निहिं होइ।
एहु जाणिवउं जइ मणसि तो जिणआगम जोइ ॥८॥
चंचल संपय धुवु मरणु मच्चुवि एम्व भणेइ।
मिल्लिवि समाणु महामुणिहिं पर संजमु न करेइ ॥९॥
मकरि मणाउवि मणु विरसु सं परि दुक्कारम्भु।
पावारम्भुवि मा करहि जइ फिर इच्छसि सम्मु ॥१०॥
मिल्लिवि अच्छउ सव्व गणि अच्छइ निअगेहिवि।

दिवेदिवे करइ जु जीवदय सो सिज्झइ सव्वोवि ॥११॥
तवें सहुं संजमु नाहिं जसु एम्वइ गम्वइ जु दीह ।
पच्छइ तावु न जो करइ तासु फुसिज्जइ लीह ॥१२॥
सिज्झउ सो नरु एम्वहिं जि एत्तहि माणुस जम्मि ।
जो पडिकूलिवि कूव करइ पचल्लिउ गयधम्मि ॥१३॥
जइ संसारहो विचि ठिउ वुन्नउ वुत्तु सो एहु ।
पवणवहिल्लउं अप्पणउ मणु वढ सुथिरु करेहु ॥१४॥
निअमविहूणा रत्तिदिवि खाहिं जि कसरक्केहिं ।
हुहुरु पडन्ति ति पावद्रहि भमडहिं भवलक्खेहिं ॥१५॥
तव परिपालणि जसु मणु वि मक्कड घुग्घिउ देइ ।
आहर जाहर भवगहणि सो घई नहु प्राम्वेइ ॥१६॥
सग्गहो केहिं करि जीवदय दमु करि मोक्खहो रेसि ।
कहि कसु रेसिं तुहुं अवर कम्मारम्भ करेसि ॥१७॥
कसु तेहिं परिगहु अलिउ कासु तणेण कहसु ।
जसु विणु पुणु अवसें न सिवु अवस तम् इक्कसिलेसु ॥१८॥

—कु० च० अष्टमे सर्ग ५८–७१

× × × × ×

भल्लत्तणु जइ महसि भल्लप्पणु पसमेण ।
जइ करिएव्वउं पसमु विजउ तो करेव्वउं करणहं ॥१९॥
जइ अ करेवा करणविजउ तो मणु निचलु धरहु ।
निचलु मणु पुणु धरहु करिउ जउ रागदोसहं ॥२०॥
तह विजउ करहि रागाइअहं अविचलु सामाइउं करिवि ।
अविचलु सामाइउं करहि निम्ममत्तु निम्मलु करवि ॥२१॥
अन्तु करेप्पि निरानिउ कोहहो अन्तुकरेप्पिणु सव्वह
माणहो ।

अन्तु करेविणु मायाजालहो अन्तु करेवि नियत्तसु
लोहहो ॥२२॥

जइ चएवं मणसि संसारु मियसुक्ख भुञ्जणु तुरिउ ।
तो किर संगु मुंचणहिं करि मणु ।
तह सुह गुरु सेवणहं निम्ममत्तु अइ दढु करेविणु ॥२३॥

चित्तु करेवि अणाउलउं वयणु करेप्पि अनप्पलउं ।
कम्मु करेप्पिणु निम्मलउं झाणु पजुञ्जसु निच्चलउं ॥२४॥

जमणु गमेप्पि गमेप्पिणु जन्हवि गच्छि सरस्सइ गच्छि-
णु नम्मद ।
लोउअजाणउ जं जलि बुड्डइ तं पसु किं नीरइं सिवस-
मेद ॥२५॥

--कु० ना० भाग [illegible]

प्रशस्ति

गीति-

इमिआ रइआ माला, गिरिरसंणिहिणहंमिअम्मि वरिसम्मि
मंडणपुरम्मि फल्दे गुलाबमीसेणं मुणिरयणेणं ॥१॥
संसोहिअ पुण लिहिआ णगंमुत्तरं णंगुणवीसाए।
पोस सुकिलपक्खाए झालावाडोमरहाणम्मि ॥२॥

इति श्री प्राकृत-पाठमाला समाप्ता.

---

१ [illegible]

बोधपाठमां आवेलां प्राकृत वाक्योनो गुजराती तथा गुजराती वाक्योनो प्राकृत अनुवाद.

बोधपाठ २ जो.

(प्राकृत वाक्योनो गुजराती अनुवाद).

१ तीर्थंकरो मोक्षे जाय छे. २ आचार्य मार्गे जाय छे. ३ तुं अवसर जाणे छे. ४ उपाध्याय मोक्षमार्ग कहे छे. ५ अमे महावीरस्वामीना गुणो जाणीए छीए. ६ माणस गुणोथी प्रमोद मेलवे छे. ७ अमे धर्म वडे वधीए छीए. ८ तमे साधुनो धर्म पालो छो. ९ कृपणो लोभने लीधे नरकमां पडे छे. १० क्षत्रिय लोकोने दुःखमांथी बचावे छे. ११ तमे अधर्ममांथी अमने बचावो छो. १२ हुं धर्मना पंथमां रहुं छुं. १३ तुं गृहस्थाश्रममां रहे छे. १४ क्रोधथी अथवा लोभथी अमे बोलता नथी. १५ तुं श्रावकोना नियमो भणे छे.

(गुजरातीनां प्राकृत वाक्यो).

१ अम्हे धमस्स पहे गच्छामो । २ तुब्भे वीरस्स धम्मं बुज्झह । ३ कोहेण जणो णरअं लहइ । ४ अहं तुम्हे वयामि । ५ तुब्भे मोक्खस्स मग्गं गच्छित्था । ६ तुब्भे ण पढह । ७ तुमं अहम्मेण णरए पडसि । ८ किविणो धम्मं ण रक्खइ । ९ किलेसेण कोहो वड्ढइ । १० आप-

रिओ समणधम्मं रक्खइ । ११ वयं खत्तिआणं धम्मं बुज्झामु । १२ जणा धम्मेण पमोअं लहन्ते । १३ तुम्हे पत्थावं बुज्झित्था ।

बोधपाठ ३ जो.

(प्रा० गु० अनुवाद).

१ गुरुओ शिष्योनी मुक्ति इच्छे छे. २ तुं गुरुनो विनय इच्छे छे. ३ ऋषिओ विषयभोगोमां आसक्त थता नथी. ४ ऋषिओ झाडना मूले (मूल पासे) बसे छे. ५ साधुओ संयमथी आनन्दरूपी वनोमां विचरे छे. ६ मुनिनुं रहेठाण पर्वत उपर श्रेष्ठ छे. ७ मुनि गुरुने नमे छे. ८ अज्ञानी क्रोधाग्निथी तपे छे. ९ शत्रुओ बाण फेंके छे. १० बालक (ने) हाथमां लाडवो लइ जाय छे. ११ हाथी पर्गो वडे वृक्षो फेंके छे. १२ हाथीओ पर्वतना शिखर उपर क्रीडा करे छे. १३ सूर्य ग्रीष्ममां तपे छे.

(गु० प्रा० वाक्यो).

१ अम्हे रिसी णमिमो । २ भाणू गिरिणो सिहरम्मि तवइ । ३ तुम्हे मोक्खएसु गिज्झह । ४ तुमं गिरिस्स सिहरम्मि चरसि । ५ अम्हे इसीणं पहे रमेम । ६ हत्थी तरुणो खिवन्ति । ७ वयं मोक्खम्मि ण गिज्झिमो । ८ साहवो संजमं वहन्ति ।

बोधपाठ ४ थो.

(प्रा० गु० अनुवाद).

१ भमरो फूलनुं तत्त्व पीए छे. २ तुं पर्वतना शिखर

उपर उभो छे. ३ हुं साधुना गुणोनो संचय करुं छुं. ४ भमरो पराग एकठो करे छे. ५ राजा शत्रुओने जीते छे. ६ तमे क्रोध रूपी शत्रुने जीतो छो. ७ हुं भव्य जनोने मार्गे लइ जाउं छुं. ८ तुं संसारथी बीए छे. ९ अमे दुर्गुणोथी बीए छीए. १० तुं वेपारीनी दुकानेथी खरीदे छे. ११ अमे मुनिओना बोधने सांभलीए छीए. १२ ब्राह्मणो अग्निमां जव होमे छे. १३ हुं तीर्थंकरनी स्तुति करुं छुं. १४ पंडित धर्मनिष्ठ होय छे. १५ साधुओ आत्मसाधक होय छे. १६ धर्म देहने पवित्र करे छे. १७ पताका पवनथी कंपे छे. १८ खेडुत खेतरमां जव लणे छे. १९ चतुर माणस धर्मनो उद्योग करे छे. २० चोर साहुकारनो रथ चोरी जाय छे.

(गु० प्रा० वाक्यो).

१ किंकरो णिवत्तो बीहइ । २ वाणिओ हत्थिणो किणइ । ३ तुब्भे गुरुणो बोहं सुणित्था । ४ अम्हे आवणे चिट्ठामु । ५ तेणो वाणिअस्स आवणाओ (धणं) हरइ । ६ रिसओ भविअजणे धम्ममग्गे णेन्ति । ७ तुमं णिंव थुणसि । ८ वयं खत्तिआ होमु । ९ तुब्भे बम्हणा होह । १० साहूणं बोहो भव्वजणे पुणइ । ११ वयं धम्मस्स वावारं कुणेम । १२ मुणीणं बोहो दुग्गुणे हरेइ ।

बोधपाठ ५ मो.

(प्रा० गु० अनुवाद).

१ तुं चतुर छे. २ हुं धर्मनिष्ठ छुं. ३ अमे साधुओ

होय. ४ तुं क्षत्रिय छे. ५ तमे वेपारी छो. ६ भव्यजनो महावीरस्वामीनां वचनो सांभले छे. ७ तमे तलावमां पाणी पीओ छो. ८ राजा धनुष वडे बाण फेंके छे. ९ राजानुं बाण जंगलमां पडे छे. १० साधुनुं दर्शन हृदयने पवित्र करे छे. ११ वेपारी धनवडे वस्त्रो खरीदे छे. १२ सूर्य प्रकाश वडे टाढने दूर करे छे. १३ शास्त्रना श्रवण वखते भाग्ये ज कोइ ... सुणे छे. १४ धर्ममां सुख छे. १५ बालक दहिं साथे भात खाय छे. १६ पवनथी आंखमां रजकण पडे छे. १७ ते आंखनी दवा करे छे. १८ भव्यजन मनमां तीर्थंकरनुं दर्शन इच्छे छे. १९ माणस सुख अथवा दुःख पूर्वभवनां कर्मो अनुसार भोगवे छे. २० पंडितो सदा हित, मित तथा मधुर वचन बोले छे. २१ तमे साचुं बोलो छो. २२ अमे जुठुं कोइ पण वखते बोलता नथी.

(गु० प्रा० वाक्यो).

१ अम्हे वणम्मि मुणीण दंसणं कुणीमो । २ वयं वत्थस्स वावारं करामु । ३ मच्छराइं वयणाइं हियस्स सुहं हरन्ति । ४ तेणा वणम्मि वत्थाइं हरन्ति । ५ किविणा धणस्स लोहेण दुहं लहन्ति । ६ अम्हे रिमउ मो । ७ तुम्हे सुही अत्थि । ८ अहं पण्डओ मि । ९ तुम्हे गाम- म्मि सत्थं सुणेह । १० जले सराणो वहि पवाहइ । ११ णेत्तस्स दुक्खाउ मिं पुणइ । १२ वयं गोसस्स ओसहं कुणिमो । १३ तुम्हे पाअं सणेणं इच्छह । १४ कुसला जणा हिअं मिअं सच्चं (अ) वयंति । १५ बालिआ कुसला अत्थि । १६ तुमं पालिआ सि ।

बोधपाठ ६ ट्ठो.

(प्रा० गु० अनुवाद).

१ सारथी वनमां रथने भमावे छे. २ तुं गाममां अमने भमावे छे. ३ राजा नोकरने काम देखाडे छे. ४ हुं जिनदासने हस्तिनापुरनो मार्ग देखाडुं छुं. ५ तुं भव्य जनोने शास्त्रनो अ[illegible]डे छे. ६ अधर्म कंकाश (करावी) हृदयने [illegible] भमरो पुष्पमांथी पराग (लेवा) इच्छे छे. ८ तमे बोध वडे श्रावकोने रंजन करो छो. ९ तीर्थंकर भव्यजनोना कर्मोनो नाश करे छे. १० कृपण दान करवामां ढील करे छे. ११ उपाध्याय शिष्योने शास्त्र भणावे छे. १२ तमे अमने उत्तराध्ययन भणावो छो. १३ राजा धनुप वडे शत्रुने बीवडावे छे. १४ पंडित विस्तारथी शास्त्र संभलावे छे. १५. मुनिओ बोध वडे धर्म करावे छे. १६ साहुकारो विवाहमां ज्ञातिजनोने जमाडे छे.

(गु० प्रा० वाक्यो).

१ तुब्भे लोहेण अम्हे भमाडेह । २ तुब्भे सया हिअमग्गं दंसित्था । ३ मुणिणो कयावि अहम्मस्स मग्गं ण दावेन्ति । ४ णिवा लोहेण जणे दूमन्ति । ५ भविअ-जणा मोक्खं सिहिरे । ६ सारही णिवं रावइ । ७ वयं णिवस्स अरिणो णासवेम । ८ किंकरो आलस्सेण कालं जवइ । ९ पंडिआ बाले पाढेन्ति । १० वाणिआ धणेणं वत्थाइं किणावेन्ति । ११ गुरवो अम्हे सत्थं सुणावन्ति ।

बोधपाठ ७ मो.

(प्रा० गु० अनुवाद).

१ वनिता माथामां फूलनी माला धारण करे छे. २ मुनि भूखने तथा तरसने सहन करे छे. ३ पंडित बुद्धिनी परीक्षा करे छे. ४ देवांगनाओ स्त्रीओनी परिषद्मां उभी रहे छे. ५ तीर्थंकरनी वाणी लोकोनुं कल्याण करे छे. ६ चतुर माणस क्षमा वडे क्रोधने जीते छे. ७ नीति द्वारा आचार माणसने मोक्षमार्गे लइ जाय छे. ८ धीरज लोभना विस्तारनो नाश करे छे. ९ गुरुओनी कृपा शिष्योनुं हित साधे छे. १० तुं सूक्ष्म दृष्टिथी काम करे छे. ११ अमे गुरुओ साथे प्रेमथी वर्तीए छीए. १२ तमे परिषदोमां धर्म कहो छो. १३ मुनिओ सभामां नीतिनो बोध करे छे. १४ उत्तराध्ययनसूत्रमां गाथाओ छे. १५ धीरजथी मनमां प्रमोद थाय छे. १६ तमे शास्त्रनुं पुनरावर्तन करो छो. १७ चोर वस्त्रने धरे छे.

(गु० प्रा० वाक्यो).

१ अम्हे बुद्धीए सव्वं बुज्झामु । २ इत्थीओ सिरंमि कुसुमाइं कुणन्ति । ३ जिणस्स वाणी लोइयाणं दावेइ । गुरुणो पीई सम्मत्तं पावेइ । ५ सुहुमा दिट्ठी सम्मत्तं देसेइ । ६ निवस्स कोई जणाणं सुहं साहेइ । ७ कोई बोहि हियं पुणाइ । ८ जिणस्स किवा जणाणं हियं साहेइ । ९ समाइ जणो मणं जिणाइ । १० मुणी सम्मत्तं गाहाओ पढइ । ११ धम्मं सभाए बोहं सुणिमु । १२ परिसाए इत्थीओ (वि) आगच्छन्ते । १३ तुझ्झ पिवासा कर मणं कुणिरे ।

बोधपाठ ८ मो.

(प्रा० गु० अनुवाद).

१ जुवानो मानसिक बल वडे काम (विकार) ने जीते. २ बालको प्रातःकालमां बापने नमे. ३ तमे सामायिक करो. ४ राजाओ नीति द्वारा लोकोनुं हित साधे. ५ शिष्य गुरुनो विनय करे. ६ तुं उतावलथी पुनरावर्तन कर. ७ तुं विनयने न छोडतो. ८ तमे दोषसहित अथवा असत्य (वचन) न बोलता. ९ उपाश्रयमां अशुद्ध कपडां पहेरीने न आवता. १० तुं दोषने त्याग (अने) गुणने ग्रहण कर. ११ क्षमा वडे क्रोधने जल्दी तज. १२ उपाध्याय विनीत शिष्योने सूत्र भणावे १३. शत्रुओनुं पण कल्याण थाओ एम इच्छुं छुं. १४ विनयथी अथवा मृदुताथी अभिमाननो नाश करे. १५ हृदयमां संतोष राखो. १६ हुं कंजुसाइ नहि करुं. १७ अमे शुद्ध अध्यवसायथी हृदयशुद्धी करीए. १८ तुं धर्मस्थानकमां शयन नहि कर.

(गु० प्रा० वाक्यो).

१ तुब्भे सुत्तस्स अट्ठं पढावेह । २ वयं सज्झायं कुणिमो। ३ भविअजणा मोक्खमग्गं लहन्तु । ४ मुणिणो असुद्धं वत्थं ण गेण्हेज्जा । ५ तुब्भे देहस्स असुद्धिं परिहरह । ६ (तुब्भे) पभायम्मि सया उवस्सयम्मि आगच्छह । ७ (तुब्भे) सामाइअम्मि असच्चं मा वयह । ८ (तुब्भे) संतोसेण लोहं चयह । ९ विणेआ अज्झवसाअवलेणं हियअसुद्धिं कुणिज्जाह । १० सभाए बुद्धीए परिक्खं कुणह । ११ तुब्भे पिवासं अ सहेह । १२(तुब्भे) पीडए पहं कयावि ण १३ (तुब्भे) सुद्धेणं अज्झवसाएणं मणं पुणेह (ति । १

छे. १४ सारथी बलदोने रथमां जोडे छे. १५ सूर्यनो प्रकाश अंधकारने दूर करे छे. १६ सूर्य पासेथी लोको प्रकाश मेलवे छे. १७ वनस्पतिओने पोषवा सूर्य समर्थ छे. १८ माणस पोताना बलथी जेटलो वधे छे तेटलो बीजाना बलथी वधतो नथी. १९

(गु० प्रा० वाक्यो).

१ जुवाणेहिं गुरुस्स सिक्खं गिण्हिऊण णीइपहे गच्छियव्वं। २ रण्णा अप्पणो दीणजणेसु किवा कायव्वा। ३ साणो तडागम्मि जलं पाउं गच्छइ। ४ उज्जाणम्मि ठिओ अणाहिमुणी सेणिअरायमुवएसइ। ५ उच्छाणो णीरजम्मि गावाणम्मि अच्छइ। ६ पूसणो पआसो अंधआरं पराजयइ ७ रण्णो आएसेण सारही रहं णिओअइ। ८ पूसा अप्पणो पआसेणं वणप्फइं पूसइ। ९ (ते) परोप्परं ण जुज्झिज्जा तहा उवएसइ।१० सिस्सा गुरुणो पाअम्मि अप्पणो मुद्धाणं णावावेन्ति। ११ तरुणो हेट्ठं अच्छमाणं जणं (सो) पासइ।

बोधपाठ १२ मो.

(प्रा० गु० अनुवाद).

१ हमणां तुं केम देखातो नथी?· २ माराथी जैनशास्त्रो संभलाय छे. ३ आकाशमां मेघनो ध्वनि संभलाय छे. ४ राजाथी जंगलमां चोर हणाय छे. ५ साधुथी सूक्ष्म पण जीव हणातो नथी. ६ चोरथी साहुकारना घरमांथी धन हराय छे. ७ नदीना प्रवाहथी गाममां जतो माणस अटकावाय छे. ८ आत्मा कर्म रूपी रज्जुथी बंधाय छे. ९ धुता-

पुरुषो त्यां उभा छे? जेटला माटे गामना वधांये लोको तेमनो मार्ग जुए छे. ३ कोण कहे छे के जैनधर्म बीजा वधा धर्मो करतां उत्तम नथी. ४ जे धर्म करे छे ते सुख पामे छे. ५ शा कारणथी तमे हसीने बोलो छो?. ६ जे हेतुथी वधी स्त्रीओनो पहेरवेश विकार पामेलो देखाय छे. ७ शा कारणोने लइने ते तेमना माथाओ कापे छे?. ८ केटलाएक लोको पोतानो वध थाय छतांये असत्य बोलता नथी. ९ तेटलामाटे तेना मनमां वेर प्रगटे छे. १० कया गाममां ते कुटुम्ब साथे रहे छे. ११ जे गाममां नथी कोई पण चोर. १२ त्यां राजा कोण छे? तेनुं नाम शुं छे?. १३ ज्यारे गाय दोहे छे त्यारे ते घेर आवे छे. १४ ज्यां राजा पोते अपराध करे छे, त्यां बीजा लोकोनी शी वात?. १५बेमांथी कया गाममां ते लोकोनुं रहेठाण थवानुं छे. १६बीजे क्यां सुखथी अमे रहीए. १७ ते कयी स्त्रीनो भरथार छे?. १८ जेनुं मुख जोइने खुशी थाय छे तेनो भरथार. १९ बीजाओनी निन्दा न कर. २० (ते) कोनाथी बीए छे? जेमनुं मुख भयंकर जुए छे तेमने जोईने बीए छे.

(गु० प्रा० वाक्यो).

१ अम्हे सव्वे मुणी णविमो। २ तुब्भे कस्स गिहं गच्छह। ३ अण्णेहिन्तो तेसिमाआरो वरो अत्थि। ४ जे ण पढन्ति ण ते सुहं लहन्ति। ५ किणा ते णरअम्मि गच्छन्ति। ६ तम्हा तुब्भे ते कहह। ७ सव्वेसिं हिअं कत्थ रक्खिज्जइ। ८ जास मणं धम्मम्मि रमइ सो जणो अप्पणो हिअं साहेइ। ९ जत्थ तुब्भे वसह तत्थ अम्हे वसामो। १० कस्सिं जणम्मि

अभडाएलो ब्राह्मण न्हाईने जमे छे. २१ चांरेलुं धान्य वेपारी धनवडे खरीदे छे. २२ राजाए धर्मनुं मकान बंधाव्युं.

(गु० प्रा० वाक्यो).

१ मए मुणीणं बोहो सुणिओ। २ तए देहो पिव धम्मो रक्खिओ। ३ खत्तिओ बम्हणेहिं सह जुज्झीअ। ४ जणा पुरा इड्ढिमन्ता अहेसि। ५ सिरि महावीरो धम्मस्स णिउ-लमब्भुदओ करीअ। ६ सो साहुसेवाए फलं लहीअ (तेण......लहिअं) ।७ सेट्ठी किंकराणं विउलं धणं देसी। ८ अम्हे वि पहे तेहिं सह आसि । ९ सव्वे जणा सह वसीअ। १० अम्हे रण्णो पासाए अच्छीअ। ११ तेहिं विउलं धणमज्जिअं। १२ वाणिआ धणमज्जिउं परएसं गच्छीअ। १३ सज्जणा गुणेहिं सग्गइं गआ। १४ सेट्ठिणा विउलधणेण पासाओ कराविओ।

बोधपाठ १५ मो.

(प्रा० गु० अनुवाद).

१ ए साधु आ श्रावकने शुं कहे छे?. २ आ माणस पात्रे घणुं दान करे छे. ३ आनां जन्म तथा जींदगी सुकृत वडे सफल थाय छे. ४ आणे खरेखर सारो मनुष्य जन्म मेलव्यो. ५ एमना हृदयमां उन्नत विचारो छे. ६ अहिं कयो पुरुष उभो छे? ७ एओ पेलानी साथे मैत्री राखे छे. ८ पेली स्त्री सर्व कार्यमां निपुण छे. ९ पेलो माणस सदाय परमार्थना कार्यो करे छे. १० पेलुं फल भर्तृहरिए पिंगलाना हाथमां आप्युं हतुं ११ आ गणिका जुवानोनुं धन हरी ले छे. १२ पेलुं लश्कर कोणिक राजाने साहाय्य करे छे. १३ आ

बोधपाठ १६ मो.

(प्रा० गु० अनुवाद).

१ आ माणस महापुरुषोना संगथी महापुरुष थशे. २ एओ साधुओनी पासे कठिन शास्त्रो भणशे. ३ तुं अहिं उभो रहीने शुं करशे? ४ तेओ सुपात्रे उचित अन्न आपशे. ५ हुं गुरुना दर्शन करवा सोरठ जइश. ६ अमे हृदय शुद्धि करीने आप्तवचनो सांभलीशुं. ७ हुं नित्य अध्यात्म शास्त्रो सांभलीश. ८ तमे आगल जतां इष्ट पुरुषने जोशो. ९ ज्यारे शेठ पूछशे त्यारे काम कर्या विना तुं शुं कहेशे? १० अकार्यना परिणामे पापनो प्रादुर्भाव थतां तुं घणो रडीश तोपण कोइ छोडावशे नहि. ११ त्यारे तुं पापनुं फल जाणशे, ज्यारे जमो त्हारा हाथ, पग, नाक, जीभ तथा कान कापशे. १२ जो तुं कुत्सित भोजन, मांस अथवा दारु कोइ पण वखते खाशे तो तेनुं परिणाम भयंकर आवशे. १३ तुं जो नीतिमार्गे चालशे तो त्हने हुं घणुं धन आपीश. १४ अधर्म करशे तो विपरीत फल पामशे. १५ जेटलो धर्म करशो करावशो तेटलां सुख शांति मेलवशो. १६ एना प्रतापथी बधो कंकाश शमी जशे. १७ एओ रुद्रत्र गाममां अथवा संघमां कंकाशने शमावशे. १८ आनाथी ए झाड भेदाशे नहीं. १९ आ पटेल उद्यमवडे धनवान् थाय छे.

(गु० प्रा० वाक्यो).

१ तुम्हे धम्मस्स कज्जं कया करिहित्था? । २ तुम्हे जं हणह, सो तुम्हे हणिहिइ तया तुम्हे किं ण रुविहिह? । ३ मच्चू आगच्छिहिइ चे तुम्हे ण मोच्छिहिइ । ४ कुडुंबं

भणं वा किंचिवि सह ण आगच्छिहिइ । ५ धम्मो कुणिओ चे सोच्चेअ सहागच्छिहिइ । ६ कस्स वि जंतुणो पाणा मा हरिहिह ।७कंवि छेच्छिहिह भेच्छिहिह चे तुम्भे छिन्दिज्जिहिह भिन्दिज्जिहिह ।८अम्हे धणमज्जिऊण दीणजणे दाहामो । ९ तुम्भे वि सुपुत्तम्मि दाहित्था ? । १० वयं सगा एएहिं सह चलिहामु । ११ ते परमत्थस्स कज्जे अईव साहज्जं दावेहिन्ति । १२ (तुम्भे) कस्स वि हरिअं दव्वं मा किणिहिह । १३ जहा करिहित्था तहा लहिहित्था । १४ साहवो उवएसिहिन्ति समणोवासआ धम्मकज्जाणि करिहिन्ति । १५ पावं करिहिह चे तस्सोदअम्मि विरूवं तप्परिणामं दच्छिहित्था । १६ धणं लहिअं चे भोअगामत्तेण मा पमोअह किन्तु अगणे भोआवेहित्था । १७ धम्मसत्थाणि सुणिहित्था चे अप्पणो सुद्धी होहिइ ।

बोधपाठ १७ मो.

(प्रा० गु० अनुवाद).

१ जो ! बे ब्राह्मणो अहिं उभा छे. २ बे पांख वडे पक्षी उडे छे. ३ पुरुषोने बे हाथ, बे पग अने एक मोढुं होय छे. ४ आनी बे आंखो तथा बे कानो रमणीय छे. ५ आ राजा अपराधी तेमज निरपराधी बन्नेने दंडे छे. ६ चंडाले कमलावतीना बे हाथ कंकण सहित कापी नाख्या. ७ बे हाथ विना ते घणी दुःखी थइ. ८ राम अने लक्ष्मण बे भाइओमां घणी प्रीति हती. ९ ते लांबा वखत सुधी नरकादि चार गतिमां विविध योनिओमां भम्यो. १० दश सोथी हजार थाय छे. ११ अरे ! ते आत्मा बीभत्स कार्य करीनेज कारा-

गृहमां पड्यो. १२ पांच पुरुषो जे कहे ते साचुं. १३ अरे! केम आ अकार्य कर्युं. १४ बेमांथी कोइ एक बीजानो विरह सहन करवाने समर्थ नथी. १५ साधुओनी पासे त्रण पात्र होय छे. १६ आ तो त्रण लाडुओ मोंढामां नाखे छे. १७ त्रण पुरुषोथी आ (माणस) जंगलमां मरायो. १८ चार गतिओ, चार कषायो, चार सर्व घाती कर्मो छे. १९ जे क्रिया चार गतिओ साधे छे, ते अध्यात्म क्रिया नथी. २० जे चार कषायोने जीते छे, ते महापुरुष थाय छे. २१ हा धिक्! आखोये संसार चार कषायोथी जीतायो छे. २२ आ चारथी बधांये बीए छे. २३ पांच आंगली वडे हाथ शोभे छे. २४ दरेकने विभाग करीने कार्य सोंपवुं. २५ माणस सो, हजार, लाख रूपीआ मेळवे छे तोपण संतोष पामतो नथी. २६ ते पंदर कर्मादान करीने नरकमां पड्यो. २७ कागडाओ बे पांखवडे उडे छे.

गु० प्रा० वाक्यो.

१ अम्हे तत्थ दुवे जणा रममाणा पासीअ। २ तुम्भे तिण्णि जणा सह चेअ आगच्छीअ। ३ पंच जणा सह चलमाणा आलवमाणा गच्छन्ति। ४ ते अप्पुणा सह चत्तारि गावीओ णेन्ति। ५ इणं घणं तिण्हं जणाणमत्थि। ६ जत्थ पंच जणा तत्थ परमप्पा अत्थि। ७ पंच इंदिआणि जेऊण मणं णियच्छह। ८ मुणी पंचमहव्वयाइं पालेन्ति। ९ बारसण्हं मासाणमेगो वच्छरो, एगम्सि वच्छरे अ तीणि सआणि सट्ठीओ दिणाणि अत्थि। १० गावी चऊहिं पाएहिं चलइ। ११ णरो दोहिं पाएहिं चलइ। १२ पक्खी दोहिं पक्खेहिमागासे उड्डेइ। १३ अस्स जणस्स छ

पुत्ता सत्त बुद्धिमाओ अ अत्थि। १४ अयं एगं सअं णराणं पालेइ। १५इमेगं एगम्मि जुद्धम्मि णराणमेगसहस्सं मारिअं। १६ अयं लक्खरूवगाणि अज्जिऊण सेट्ठी होहीअ। १७ आयारंगसुत्तस्स अट्ठारससहस्साणि पयाणमत्थि। १३ चतुर पुरुष रस्तामां धूर्त्तनी साथे जतो नथी.

बोधपाठ १८ मो.

प्रा० गु० अनुवाद :

१ पग पसारीने गुरुनी नजीक न उभा रहेवुं. २ ते तीव्र बुद्धिवडे कठिनशास्त्रोमां निपुण थायछे. ३ तुं आ पुरुषने क्यां लइ जायछे? ४ ते नित्य सत्य वचन बोले छे, कदापि असत्य बोलतो नथी. ५तेओ पहेला अहिं आवीने पछी त्यां जाय. ६ आ बधांये पाठकनी पासे सामायिक भणशे. ७ ए वृद्धावस्थामां धर्मशास्त्रमां चतुर थशे. ८ जो सुवृष्टि थशे तो सुकाल थशे. ९ एणे मापापनो सारो विनय कर्यो. १० प्राणीओनी हिंसा न करवी, जुठुं न बोलवुं, प्रभातमां शुभ मनोरथोनुं चिन्तन करवुं. ११ धर्मना कार्यमां एक क्षण पण प्रमाद न कर. १२ पाप न करवुं, न करावबुं, अने कोइ करतो होय तो तेमां संमति न आपवी. १३ चतुर पुरुष रस्तामां धूर्त्तनी साथे जतो नथी.

गु० प्रा० वाक्यो.

१ माणुस्सं जम्मं लहिअ णीईए वट्टियव्वं। २ जो समत्थो होहिइ सो जेहिइ। ३ रावणो धम्मी अहेसि तह वि परित्थीए इच्छाए णरयम्मि पडिओ। ४ सिरि महावीरो माआपिअराणं अईव सेवां कुणीअ। ५ गावीओ

वणम्मि पव्वअम्मि चरन्ति। ६. महप्पाणो सव्वेसिं सुहं करिउं इच्छन्ति। ७ राआ गामस्स बहिं चरिअ पुणो गामम्मि आगच्छीअ। ८ अणीईए मग्गम्मि गच्छमाणे सव्व जणे णिरुन्धइ। ९ दीणजणा सुद्धहियएण रक्खियव्वा। १० परित्थीए पसंगत्तो मणम्मि शीहेज्ज। ११ पभाअम्मि माआपिअरे पणवेज्जा। १२ तित्थअरा संजमगहणत्तो पुव्विं एगं वच्छरं दाणं दाहीअ। १३ अहं परमत्थेण रहिअं धम्मं ण मणामि।

बोधपाठ १६ मो.

प्रा० गु० अनुवाद.

१ तुं कुहाडावडे वृक्षनी पेठे दानवडे पापने भेदे छे. २ घोडा अथवा हाथी उपर बेठलो तुं सारो देखाय छे. ३ हुं तमारा मुख सिवाय बीजुं कंइ पण जोवा इच्छतो नथी. ४परिषदमां जतां तेणे हुं शामाटे बोलावाउं छुं. ५मारा तरफथी त्हने किंचित पण भय नथी. ६ हुं बधा जीवोनी क्षेमकुशलता इच्छुं छुं.७ शय्यामां उत्पन्न थतां देवने बीजा देवो पूछे छे के स्वामी! पूर्वभवमां तमे शेनुं दान कर्युं, शुं कृत्य कर्युं, जेथी आ ऋद्धि तमे प्राप्त करी. ८ अमाराथी एक वरसमां जेटलुं धन मेलवायुं तेटलुं तमाराथी सो वरसे पण मेलवाशे शुं?. ९ अमारो तो धर्मनोज व्यापार छे. १०. हुं बधाने कहीश, म्हने कोइ पण कहेशे तो हुं रडीश. ११ तारामां म्हारो पूर्ण विश्वास छे. १२ तारी कृपाथी ज्यां ज्यां अमे जइए छीए त्यां त्यां घणुं सुख मेलवीए छीए. १३ जे त्हारी भक्तिवडे स्तुति करे छे, ते त्हारी कृपा मेलवीने दुःखथी मुक्त थाय छे. १४ तमे मनमां अमारी वांछना

करो छो, ते अमे खरेखर जाणीए छीए. १५ योद्धाना समूहमां प्रवेश करता म्हने रोकवाने कोण समर्थ छे? १६ त्हाराथी म्होटो शेठ बीजो कोण छे? १७ कोइ पण शुभ कार्यमां कदापि म्हारी ना नथी. १८ धर्ममार्गमां अमारी सदा एक ज रीति होय छे. १९ म्हारा मनमां लेश पण गर्व नथी. २० अमारामां कोण म्होटो अथवा कोण जीतशे ते अमे जाणता नथी. २१ तमारी पासे केटला पुरुषोनुं बल छे? २२ म्हारा उपर जो तमारी कृपा थशे तो तमे म्हने शुं दर्शन नहि आपो? २३ तुं प्रख्यात सोनी देखे छे.

गु० प्रा० वाक्यो.

१ मो सव्वे पासामो किन्तु कोवि अम्हे ण पासइ। २ तुम्ह संपइ अस्सि गामम्मि किं वावारं कुणह? । ३ तुम्हेसु कास विस्सासो णत्थि? । ४ अम्हे जाव सच्चं णव्वइ ताव मणिमो । ५ तुवेसुं आलस्सं णत्थि तो भे सव्वत्थ जिणेह। ६ जइ किंचिवि आलस्सं होहिइ तया तं तुम्हाणं भयंअरं दुहं दाहिइ । ७ तुज्झे तं जहातहा ण जाणह सो एगो भयंअरो अरी अत्थि। ८ को वयइ जं तुम्हे पंडिआ णत्थि। ९ अम्हेहिं जं करिउं सक्कं तं भे कुणिमो। १० तुम्ह सिरि महावीरस्स सासणमाराहेह तो तुम्हाणं कल्लाणं होहिइ। ११ तुम्हेसु अम्हं पुण्णो विस्सासो अत्थि। १२ तुब्भेहिं सव्वेसिं हिअं साहिज्जइ। १३ अम्हाणं किं णाणं, अम्हं उ अप्पा बुद्धी अत्थि। १४ तुब्भाणं हिअं साहिउं तुम्हाणं समासे सत्ती अत्थि । १५ तुमाणमंतिए जाव अत्तबलमत्थि तेण तुम्ह किंकिं करिउं ण सक्कह। १६ संतबले ण किंचि उज्जमं कुणह तं च्चिअ तुहाणं दुद्दसा।

बोध पाठ २० मो.

प्रा ० गु ० अनुवाद.

१ जे स्नेहाल होय छे ते दयालु अथवा लज्जाशील थायछे . २ ईर्ष्याखोरनुं मन पारकी समृद्धि जोईने सदा पोतानी मेलेज तपेछे . ३ ते कुलीन स्त्री अकार्यमां लज्जाशील रहे छे . ४ कदरूपो पण वस्त्रालंकार सिवाय पण विद्या वडे शोभितो देखाय छे . ५ हे रसाल फल! तुं शामाटे रस छोडतो नथी ? ६ पवन राजानो पुत्र हनुमान् रामचंद्रजीनो भक्त हतो . ७ श्रीमन्तो पण जो धन वडे परमार्थ न करे तो पछी बीजानी शी वात ? ८ गर्विष्ठ माणस गर्वने लीधे विनय-थी भ्रष्ट थायछे . ९ म्हें सो वार तेने कह्युं तोपण अभिमानी माणस मानतो नथी. १० अहो! जव खावाने लीधे आ बकरानी केवी पुष्टता छे!. ११ आ गरीब वाछरडानी कृश-ता–दुर्बलता आज सुधी पण न मटी . १२ एक तरफथी धर्मीओ धर्मोपदेश करेछे , बीजी तरफथी अधर्मीओ अधर्म करेछे, एमां कोण जीतशे ? . १३ ज्यां वाणीआओ रहेछे त्यां तेनुं घर छे . १४ आ रखडेल बालक अमारुं वचन मानतो नथी . १५ ते गामडीओ माणस शहेरी लोकोनी वातमां शुं जाणे? १६ आत्मिक आनन्दने ज्यां सुधी जाणता नथी , त्यां सुधी बीजा विषयसुखोमां लोको आसक्त रहेछे . १७ पांजरामां रहेलुं पक्षी आकाशमां उड-वा इच्छे छे . १८ श्रावको दिवसमां जमेछे ; रात्रिए कदापि न जमवुं . १९ प्रभातमां सूर्यना किरणोवडे पल्लवित थए-ला वृक्षो शोभेछे . २० ते हाथ वडे मुखने ढांकी ने भयथी कंपेछे . २१ अरे एना हृदयनी केवी मृदुता , एथी ते दुनी-

थाने प्रिय थयो. २२ धनवानोना घर आगल पंडितो पण नोकर पेठे उभा रहे छे. २३ प्राणनो नाश थाय तो पण ज्ञा अकार्य करतो नथी.

गु० प्रा० वाक्यो.

१ बुद्धिमन्तो जणो सव्वत्थ विजअं लहइ। २ दयालू जणो सव्वेसिं जणाणं वल्लहो होइ। ३ तस्स मुहुल्लं सया आणंदिल्लं दीसइ। ४ तस्स भाअरा अईव सिरिमन्ता अत्थि। ५ पुरिल्ला जणा णिउणा पंडिआ अ हवन्ति। ६ एगओ रुहिरत्तणं दीसइ अण्णत्तो कोहग्गी पसरिओ अत्थि। ७ भगवन्तेहिन्तो विज्जावंतो जणो सेट्ठो अत्थि। ८ धम्मिणो जणा णीईए पहं कया वि ण मुअन्ति। ९ सो सव्वे जन्तुणो अप्पव्व पासइ। १० स परित्थि माउव्व भइणीव्वअ मणइ। ११ अम्हे गामिल्लेहिं सह वसामु। १२ जत्थ कोवि णिसेहं ण कुणइ तत्थ अम्हे वसामो। १३ गुरुभत्तिमंतो जणो अप्पुल्लमाणंदं लहइ।

बोधपाठ २१ मो.

प्रा० गु० अनुवाद.

(नगर वर्णन)

१ लटकनी लुमोवाला केलना झाडथी बंधाएल तोरणो ने लीधे जेना किरणोनो विस्तार अटकावयामां आव्यो छे एवो सूर्य वरसादऋतुनी माफक शरदऋतुमां पण ज्यां देखातो नथी. (२) ज्यां चौलुक्यवंशना मूलराज आदि राजा ओनुं सर्वत्र वंपोपारहेलुं सुवासथी उत्पन्न थएलुं यश आकाशने सुगंधि बनावती फुलनी मालानी पेठे दिशारमणी

ओना मस्तकने सुरभि बनावे छे, अर्थात् लोकना प्रांत भाग सुधी यश पसरी रह्युं छे. (३) सर्व अवस्थाओमां जेम मध्यम (युवा) अवस्था, सर्व जातनां फूलोमां जेम जाइनां फूल, सर्व सुखोमां जेम मुक्ति सुख श्रेयस्कर छे तेम पृथ्वी उपरनां सर्व नगरोमां जे नगर श्रेष्ठ छे. (४) जेने चर्मचक्षु नथी किन्तु ज्ञानचक्षु छे, एवा मुनिओनां नेत्रो पण जे नगरने जोवामाटे विकसित थाय छे त्यारे बीजाना नेत्रोनी शुं वात करवी! (५) जे नगरमांना विद्वानोने जोया नथी त्यांसुधी बृहस्पतिनां वचनो वचनरूप छे, माहात्म्य माहात्म्यरूप छे अने गुणो गुणरूप छे. अर्थात् बृहस्पति करतां पण जबरा विद्वानो त्यां रहे छे. (६) जे नगरमां हरि हर ब्रह्मा तेमज बीजा पण सूर्य नाग वगेरे देवो वसे छे. एना महिमाथी सुरपुरी-अलकानो महिमा उतरी गयो छे. (७) ज्यांना माणसो याचकोने सोनुं अने रत्नो अंजलि भरीने आपे छे तो पण तेमनो सुवर्णनिधि अने रत्ननिधि अक्षीण रहे छे.

ग्रीष्मऋतु--वर्णन.

(८) अथ राजाए पुछेल द्वारपाले एम कह्युं के हा. उद्यानमां ग्रीष्मऋतुनी शोभा (देखावा लागी छे). हे राजन् कदली वनमां उष्ण पण शीतल प्रतीत थाय छे ते आप फरीवार जुओ. (९) 'अमने विदेशमां जवुं पडे ए खेदनी वात छे, प्रिया जीवे छे के नहीं? अरेरे, शुं प्रियाने पण अमे मुकी दीधी, नक्की तेनुं मृत्यु थशे, खरेखर ग्रीष्मऋतु यमरूप छे' एम मुसाफरो लव्या करे छे. १० "मद्य त्यो आ सुगंध त्यो" एम बोलता होय नी एवा भमरा अने

स्वास्थ्य पूर्वक धर्मध्यानमां तत्पर थाय छे तो चतुर्थवर्ग-निर्वाणपदनी साधना करे छे. (३) पुण्यशाली, तीक्ष्णबुद्धि वालो, सरल स्वभावी, साधुने पंथे विचरतो सज्जन आखा जगतनुं वत्सलपणुं मेलवतो परमपद-मोक्षने मेलवे छे. (४) स्वपरनी विवक्षा—भेदभाव रहित अर्थात् शत्रु मित्रमां समभाव राखतो सर्वने करुणा दृष्टिथी जोतो परिमित अने मिष्ट वचन बोलतो माणस मोक्षना मार्गमां स्थिर थाय छे. (५) एनो वध करुं अने एनी भक्ति करुं एवी जेनी बुद्धि छे ते बन्नेना तरफ आत्मभावनी बुद्धि राखवी जोइए. अर्थात् घातक के भक्त बन्ने मारा समान ज छे एम मानवुं.

बोधपाठ ३ जो.

पै० गु० अनुवाद.

(१) प्राज्ञ पुरुषोना नायक, गुणनिधान, अनुपम पुण्यशालि राजाए मदन आदि आन्तर शत्रुओने चोक्कस जितवा एम चिंतववुं जोइए. (२) शुद्ध अने कषाय रहित जेनुं हृदय छे अने इंद्रिय रूप कुटुम्बनी चेष्टा जेणे जीती छे, कुटुम्ब स्नेहथी जे मुक्त थएल छे एवो योगी मोक्ष पदने पामीने त्यांथी पाछो वलतो नथी. (३) शम-शान्ति रूप पाणीमां स्नान करेल, अने कृत्रिम कपटरूप स्त्री नो त्याग करनारना कषायो अने सर्व कर्मो नष्ट थइ चाल्या जाय छे. (४) जो परमेष्ठि मंत्रनो पाठ कराय अने जीवनो वध न कराय तो जेवी तेवी जातनो पण माणस निर्वाण पदने पामे छे. (५) गमे तो जंगलमां बेसे, गमे तो पर्वत उपर बेसे, भले

आकरी तपस्या पण करे, पण ज्यां सुधी विषयथी दूर नहीं थाय त्यां सुधी मोक्ष मेलवशे नहीं.(६) चत्तारि मंगलं इत्यादि मंत्रनी उद्घोषणा करतां तेणे योगक्रियानी पेठे दूर रहेली पण मोक्ष लक्ष्मी ग्रहण करी छे अर्थात् स्वाधीन करी छे. (७)

सर्वज्ञराज-जिनेन्द्रना चरणने ध्यावतो योगी शठ अने अशठ बन्नेनो बन्धु, उपशमनो आश्रय करनार अने आरंभरहित होय छे. (८) झर्झर, डमरुक, भेरी, ढक्कादि वाजित्रो अने मेघनो गंभीर शब्द परमात्मामां लीन थएल जेना आत्माने चलायमान नथी करतो ते धन्यवादने योग्य छे.

बोधपाठ ५ मो.

अप० गु० अनुवाद.

सरस्वतीनो राजाने उपदेश.

(१) जे जेमांथी थतुं हो ते तेमांथी थाओ, शत्रु हो के मित्र हो, क्यांथी पण आवो, जे ते मार्गमां-गमे ते पंथमां लीन हो तथापि ते बन्ने तरफ एकज दृष्टिथी-समदृष्टिथी जो. (२) कोइ पण जे ते पुरुष, कोइ पण जे ते स्त्री अर्थात् गमे ते पुरुष के गमे ते स्त्री हो तेने ते हित वचन कहेवुं के जे बधी रीते रुचिकर थाय. (३) 'जे परम सत्य होय ते बोलवुं' ए धर्मनुं रहस्य तुं जाण. एज परमार्थ, एज कल्याण अने एज सुख अने रत्ननी खाण छे. (४) जो आ सुश्रावको अने आ मुनिओ तप तपी रह्या छे. आ जन्मनुं एज फल छे. विषयसुख ए तेनुं फल नथी. (५) सर्वलोको प्रयत्न

स्वास्थ्य पूर्वक धर्मध्यानमां तत्पर थाय छे तो चतुर्थवर्ग-निर्वाणपदनी साधना करे छे. (३) पुण्यशाली, तीक्ष्णबुद्धि वालो, सरल स्वभावी, साधुने पंथे विचरतो सज्जन आखा जगतनुं वत्सलपणुं मेलवतो परमपद-मोक्षने मेलवे छे. (४) स्वपरनी विवक्षा—भेदभाव रहित अर्थात् शत्रु मित्रमां समभाव राखतो सर्वने करुणा दृष्टिथी जोतो परिमित अने मिष्ट वचन बोलतो माणस मोक्षना मार्गमां स्थिर थाय छे. (५) एनो वध करूं अने एनी भक्ति करूं एवी जेनी बुद्धि छे ते बन्नेना तरफ आत्मभावनी बुद्धि राखवी जोइए अर्थात् घातक के भक्त बन्ने मारा समान ज छे एम मानवुं.

बोधपाठ ३ जो.

पै० गु० अनुवाद.

(१) प्राज्ञ पुरुषोना नायक, गुणनिधान, अनुपम पुण्यशालि राजाए मदन आदि आन्तर शत्रुओने चोक्कस जितवा एम चिंतववुं जोइए. (२) शुद्ध अने कषाय रहित जेनुं हृदय छे अने इंद्रिय रूप कुटुम्बनी चेष्टा जेणे जोती छे, कुटुम्ब स्नेहथी जे मुक्त थएल छे एवो योगी मोक्ष पदने पामीने त्यांथी पाछो वलतो नथी. (३) शम-शान्ति रूप पाणीमां स्नान करेल, अने कृत्रिम कपटरूप स्त्रीनो त्याग करनारना कषायो अने सर्व कर्मो नष्ट थइ चाल्या जाय छे. (४) जो परमेष्ठि मंत्रनो पाठ कराय अने जीवनो वध न कराय तो जेवो तेवो जातनो पण माणस निर्वाण पदने पामे छे. (५) गमे तो जंगलमां बेसे, गमे तो पर्वत उपर बेसे, भले

आकरी तपस्या पण करे, पण ज्यां सुधी विषयथी दूर नहीं थाय त्यां सुधी मोक्ष मेलवशे नहीं.(६) चत्तारि मंगलं इत्यादि मंत्रनी उद्घोषणा करतां तेणे योगक्रियानी पेठे दूर रहेली पण मोक्ष लक्ष्मी ग्रहण करी छे अर्थात् स्वाधीन करी छे. (७)

सर्वज्ञराज–जिनेन्द्रना चरणने ध्यावतो योगी शठ अने अशठ बन्नेनो बन्धु, उपशमनो आश्रय करनार अने आरंभरहित होय छे. (८) झर्झर, डमरुक, भेरी, ढक्कादि वाजित्रो अने मेघनो गंभीर शब्द परमात्मामां लीन थएल जेना आत्माने चलायमान नथी करतो ते धन्यवादने योग्य छे.

बोधपाठ ५ मो.

अप० गु० अनुवाद.

सरस्वतीनो राजाने उपदेश.

(१) जे जेमांथी थतुं हो ते तेमांथी थाओ, शत्रु हो के मित्र हो, क्यांथी पण आवो, जे ते मार्गमां–गमे ते पंथमां लीन हो तथापि ते बन्ने तरफ एकज दृष्टिथी–समदृष्टिथी जो. (२) कोइ पण जे ते पुरुष, कोइ पण जे ते स्त्री अर्थात् गमे ते पुरुष के गमे ते स्त्री हो तेने ते हित वचन कहेवुं के जे सघी रीते रुचिकर थाय. (३) 'जे परम सत्य होय ते बोलवुं' ए धर्मनुं रहस्य तुं जाण. एज परमार्थ, एज कल्याण अने एज सुख अने रत्ननी खाण छे. (४) जो आ सुश्रावको अने आ मुनिओ तप तपी रह्या छे. आ जन्मनुं एज फल छे. विषयसुख ए तेनुं फल नथी. (५) सर्वलोको प्रयत्न

करी रह्या छे तेम घणा पण पंडितो छे. एम हे राजन् तुं जाण. परन्तु तेमांनो कोइ पण एम नथी विचारतो के निर्वाणनुं शुं स्वरूप छे?.

(६) (श्रुतदेवी कुमारपालने कहे छे के आ नीचेनो उपदेश सर्वने कही संभलावजे) हे निर्मोह! तुं सर्व कोइना उपर आ चिन्तव अर्थात् सर्वने कहे के तमे संसाररूप अटवीमां पडो नहि किन्तु तमे सुखी थाओ. (७) तेमज आत्मानी पेठे तमने जोइने अने तमारी माफक आत्माने जोइने अर्थात् समभाव राखीने तने अक्षय स्थान प्रत्ये लइ जवाने तनेज शिखामण दउं छुं के "तुं समभाव राख." (८) तारे जीवदया पालवी. तारे साचुं बोलवुं. तेथी तारामां सुख अने कल्याण थशे तेथी (तुं) कृतकृत्य थइश. (९) आ जींदगीमां केवल तमारे साधुओनी सेवा करवी. (एज) तारुं सम्यक्त्व (एज) तारी क्षमा, (एज) तारो, संयम हुं मानुं छुं. (१०) धर्माक्षर–धर्मसिद्धान्तमां आग्रह राख. (एथी) कलिरूप मल तारी पासेथी नष्ट थशे, पाप चाल्युं जशे, मोक्ष पण ताराथी दूर नहीं रहे. (११) जो तमारामां संयम होय तो तमारो मोक्ष दूर नथी रहेल. 'हुं तमारो बान्धव छुं' एम कहीने सर्वने आ कहे. (१२) कोइ पण माणस अमने निन्दो के कोइ पण अमारी स्तुति करो. अमे तो कोइने पण नहि निन्दीए तेमज कोइने पण नहि स्तवीए (१३) 'मारे गहन संसार मुकवो' एवी मति मारामां स्थिर थाओ. सुगुरु मारे माथे हाथ मुको के (जेथी) आत्मानी शुद्धि मेलवुं. (१४) अमे कोइ पण विधिने दशे आ मनुष्यपणुं मेलव्युं. मोक्ष माराथी अदूर हो. मिथ्यात्व मारी पासेथी

भागी जाओ. (१५) मोहनो अंकुर अमारी पासेथी चाल्यो गयो. अमारामां संयम उत्पन्न थयो. विषयो मने लंपट नहि करे, एम विश्वास न राख.

(१६) काया झुंपडी नक्की अस्थिर छे. आ जींदगी चंचल छे. ए बन्ने संसारना दोषोने जाणीने अशुभ भावने तजी दे. (१७) ते कानने धन्य छे, ते हृदय कृतार्थ छे के जे क्षणे क्षणे नव नवा शास्त्रना पदार्थो सांभले छे अने धारण करे छे. (१८) जेना कानमां जिन आगमनी वात पेठी तेने 'अमारुं ने तमारुं' एवुं ममत्व रहेतुं नथी. (१९) जीव जेटलो वखत जीवलोकमां जीवे छे तेटलो वखत जो दमन करे अने आटला वैभवने न कंइ अर्थात तुच्छ गणे तो आ भवमांज ज्ञान प्राप्त करी ते लोकमां—मोक्षमां नक्की जाय.

बोधपाठ ६ मो.

अप० गु० अनुवाद.

(१) रे मन! शामाटे तुं परस्त्रीनी प्रार्थना करे छे.? रे विषयो! तमे दूर जइने बेसो. हे इंद्रियो! तमे नियन्त्रित थइने बेसो केमके हुं पुष्कल मोक्षनुं फल (मारी तरफ) खेंचुं छुं-मेलवुं छुं. (२) एवी रीते आत्माने शीखव. जिन आगमने संभार. धर्मनुं अनुष्ठान कर. प्रशस्त संयमप्रत्ये जा. तारो परमार्थ अमे कहीए छीए. (३) हे प्रिय! 'हुं तमारी पूजा करुं' एम बोलती वनिताओ संयम लीन थएल जे पुरुषने चलावी शक्ती नथी ते पुरुषने चोक्कस मोक्षनुं सुख मलशे. (४) जे सत्य वचन बोले छे, प्रधान–श्रेष्ठ उपशम भावने पामे छे, शत्रुने पण मित्र समान जुए छे, ते माणस निर्वाणपदने ग्रहण करे छे.

(५) जेनुं चित्त बीजाना जेवुं चपल नथी एवो जे माणस लोकोत्तर ब्रह्मचर्य पाले छे, ते माणस प्राये तेज भवमां पवित्र निर्वाण पद पामे छे.(६) संसारमां प्राये सुख दुर्लभछे. माणसो घणे भागे सुखमां लुब्ध थएल छे.मुग्धज्ञान–विकल मनुष्यो प्राये संतोष रूप अमृतनुं पान कर्या विना ते सुखने शोधे छे. (७) ज्ञान दर्शन चारित्र रूपी त्रण रत्नने चोक्खीरीते अनुसरो;अन्यथा मुक्ति क्यांथी होय! भाण्ड–करिआणा वगेरे वस्तु होय तो घणुं धन मले अन्यथा शुं आकाशमांथी पडे? (८) गहन संसारमां शाथी भमाय छे अने मोक्ष शाथी थाय? ए जाणवाने हे मूढ! जो इच्छतो हो तो जिन आगम जो. (९) संपत् चंचल छे अने मरण निश्चे छे एम यधाए कहे छे, पण महामुनिओनी साथे मलीने कोइ संयम पालतो नथी. (१०) मनने जरी पण विषय लम्पट न कर. दुष्कृत्य कर्म पण न कर. वचननो आरंभ पण न कर.जो निश्चे मुक्ति सुख इच्छतो हो तो.(११) वनमां जइने वेसे अथवा घरमां वेसे के तीर्थ स्थले वेसे पण जे माणस दररोज जीवदया पाले छे ते सर्वे सिद्धिपद पामे छे. (१२) जेने तपश्चर्यानी साथे संयम नथी किन्तु संयम विना एमने एम जे दिवसो गुमावे छे अने तेना माटे जे पस्तावो करतो नथी तेनी साधुवर्गमां गणना थती नथी अर्थात् साधुपणानी तेनी रेखा भुंसाइ जाय छे. (१३) जे मनुष्य पुण्यहीन अने प्रतिकूल वर्तनार उपर पण दया राखे छे ते आ मनुष्य जन्ममां हमणांज सिद्धि मेलवो. (१४)जो संसारना मार्गमां रहेलो प्राणी खिन्न थाय छे तो में आ कयुं छे के हे मूर्ख! पवन जेवी शीघ्र गतिवाळुं पोतानुं मन स्थिर कर. (१५)

नियम वगरना जे माणसो 'कसर कसर' करतां राते पण खाय छे. ते माणसो हु हु करतां पापरूप द्रहमां पडे छे अने लाखो भव (संसारमां) भमे छे. (१६) जेनुं मन तपनुं पालन करवामां वांदरानी घुग्घिका-चेष्टा (उत्सुक पणुं) आपे छे ते गहन संसारमां आवर जावरनी क्रिया नथी पामतो अर्थात् तेनी गत्यागति बंध थाय छे. (१७) स्वर्गने माटे जीवदया कर (पाल). मोक्षने माटे इंद्रिय दमन कर. तुं कहे के कोनामाटे बीजा कर्मनो आरंभ करे छे. (१८) कोना माटे परिग्रह अने कोना माटे जुठुं(बोले छे,)ते कहे. जेना विना वलि अवश्य मोक्ष न मले, ते आवश्यक मोक्षसाधन उपशमादिक एकवार पण ले (अंगीकार कर).

(१९) जो तुं कल्याण इच्छतो हो तो प्रशम-प्रकृष्ट शांतिथी कल्याण छे. जो प्रशम करवो होयतो करण-इंद्रियोनो विजय करवो जोइए. जो इंद्रियोनो विजय करवो होय तो निश्चल मनने धर. वली राग द्वेषनो विजय करीने निश्चल मन राख. तेमज अविचल सामायिक व्रत आचरीने रागादिनो विजय कर. निर्मल अममत्व भाव करीने अविचल सामायिक कर. (२०) निश्चे क्रोधनो अन्त करीने, सर्वथा माननो अंत करीने, माया जालनो अंत करीने, अने लोभनो अन्त करीने तुं निवृत्त था. (२१) जो संसारने छोडवा धारतो हो अने मोक्षसुख भोगववा उतावल होय तो चोक्कस पुत्र कलत्रादिनो संग मुकवाने, शुभ गुरुनी सेवना करवाने अने ममत्व रहित थवाने मनने अति दृढ कर. (२२) चित्तने अनाकुल करवाने वचनने अचपल बनाववाने, कार्य निर्मल करवाने निश्चल

ध्यान—धर्मध्यानादिनो प्रयोग कर. (२६) जमुना नदीए जइने, गंगाए जइने, सरस्वतीए जइने अने नर्मदाए जइने, अजाण लोक पशुनी माफक जे पाणीमां डुबकी मारे छे, ते पाणी शुं मोक्षनुं सुख आपे छे?.

शब्द कोश

अ अ० (च) अने.
अअ पुं० (अज) बकरो.
अइ अ० (अति) बहु, घणुं.
अइ अ० संभावनाना अर्थमां.
अइ उप० (अति) हद बहार, उल्लंघन, उत्कर्ष, अतिशय.
अइच्छ दे० धा० जवुं, गमन करवुं.
अइवाअ धा० (अति+पात्) हिंसा करवी.
अइसरिअ न० (ऐश्वर्य) पराक्रम.
अईव अ० (अतीव) अत्यन्त, घणुंज.
अकज्ज न० (अकार्य) न करवा लायक काम.
अकासि अ० निषेधमां, नहि ए अर्थमां.
अग्ग न० (अग्र) आगल.
अग्गि पुं० (अग्नि) अग्नि.
अच्छ धा० (आस्) बेसवुं.
अच्छ न० (दे०) जल्दी, तरत.
अच्छि न० (अक्षि) नेत्र, आंख.
अच्छि पुं० स्त्री० न० (अक्षि) आंख.
अज्ज अ० (अद्य) आज.
अज्ज धा० (अर्ज्) एकठुं करवुं, मेलववुं.
अज्जव न० (आर्जव) मृदुता.
अज्भत्थ न० (अध्यात्म) आत्मतत्त्व संबंधी.
अज्झत्थिय न० (अध्यवसित) अध्यवसाय, परिणाम.
अज्झप्प न० (अध्यात्म) अध्यात्म, आत्मतत्त्व संबन्धी.
अज्झवसाअ पुं० (अध्यवसाय) परिणाम.
अट्टज्झाण न० (आर्त्तध्यान) माठुं ध्यान.
अट्ठ पुं० (अर्थ) शब्दनो वाच्य.
अट्ठ सं० वा० (अष्टन्) आठ.
अट्ठारस सं० वा० (अष्टादश) अढार.
अडणी स्त्री० (दे०) मार्ग, रस्तो.
अण अ० निषेधमां, 'नहि' ए अर्थमां.
अणवयग्ग त्रि० (अनवदग्र) अनन्त.
अणाह त्रि० (अनाथ) अनाधार.
अणु उप० (अनु) पाछल, सरखुं, समीप.
अणुजाण धा० (अनु+ज्ञा) अनुमोदवुं, संमति आपवी.
अणुव्वग्ग त्रि० (अणुव्रतिक) अणुव्रतयुक्त।
अण्ण स० (अन्य) बीजो.
अण्णहा अ० अन्यथा, नहि तो.
अण्णी स्त्री० (दे०) देराणी [२] नणंद [३] फइबा.
अत्त पुं० (आत्मन्) आत्मा, पोते.
अत्तवयण न० (आप्तवचन) प्रामाणिक वचन.
अत्थरिअ पुं० (दे०) नोकर.
अद्ध पुं० (अध्वन्) मार्ग, रस्तो.
अद्धाण पुं० (अध्वन्) मार्ग, रस्तो.

अनालम्भ त्रि० (अनारम्भ) आरंभ रहित ।
अन्तरयल न० अन्दरनुं बल, मानसिक बल.
अन्तिअ न० (अन्तिक) नजदीक, पासे.
अप्पणो अ० स्वयं, पोते, पोतानी जाते.
अप्प पुं० (आत्मन्) आत्मा, पोते.
अप्प वि० (अल्प) थोडुं.
अप्पसाहग पुं० (आत्मसाधक) आत्मार्थी.
अप्पाण पुं० (आत्मन्) आत्मा, पोते.
अप्पुल्ल वि० (आत्मिक) आत्मिक, आत्म सम्बन्धी.
अबीअ त्रि० (अद्वितीय) एकाकी ।
अब्भुदअ पुं० (अभ्युदय) चडती, उदय.
अम्मो अ० आश्चर्य.
अम्हे स० (अस्मान्) अमने.
अम्हे स० (वयं) अमे, आपणे.
अरि पुं० (अरि) शत्रु, दुश्मन.
अरे अ० संबोधन, कलह.
अलमंजुल त्रि० (दे०) आलसु.
अलं अ० निषेधमां, नहि ए अर्थमां.
अलंकार पुं० (अलंकार) घरेणां, दागीना.
अलाहि अ० निषेधमां, नहि ए अर्थमां.
अलि पुं० (अलि) भमरो.
अव उप० (अव) नीचे, निश्चय.
अवत्था स्त्री० (अवस्था) वय, दशा ।
अवयासिणी स्त्री० (दे०) नाशारज्जु.
अवराह धा० (अप+राध्) अपराध करवो.

अवलिअ दे० खोटुं, मिथ्या.
अव्वो अ० सूचना, दुःख, संभाषण, अपराध, विस्मय, आनन्द, आदर, भय, खेद, तथा पश्चात्तापना अर्थमां.
अस धा० (अस्) थवुं, होवुं.
असंगय दे० वस्त्र.
असुद्ध वि० (अशुद्ध) शुद्ध नहीं, मेलुं.
अस्स पुं० (अश्व) घोडो.
अह न० (दे०) दुःख.
अहम्म (अधर्म) पुं० धर्म विरुद्ध धर्म-रूप.
अहं स० हुं.
अहिअअ (दे०) गुस्सो.
अहिअ वि० (अधिक) वधारे.
अहि उप० (अधि) उपर, अधिकार.
अहि उप० (अभि) तरफ, पासे, वारंवार.
अहिल त्रि० (दे०) धनवान्.
अहुणा अ० (अधुना) हमणा.
अंग न० (अङ्ग) आचारांगादि सूत्र [२] शरीर अवयव.
अंगुलि स्त्री० (अंगुलि) आंगळी.
अंजलि पुं० (अञ्जलि) हथेली.
अंधआर पुं० (अन्धकार) अंधारं.
आआर पुं० (आचार) आचार.
आइच्च पुं० (आदित्य) सूर्य.
आ उप० (आ) हद, मर्यादा, अभिव्याप्ति, थोडुं, उलटापणुं.
आएस पुं० (आदेश) हुकम, फरमान.
आ+करिस धा० (आ+कृष्) खेंचवुं, आकर्षवुं.

आकारि धा० (आ+कृ+णि) बोलाववुं, साद करवो.
आ+गच्छ धा०(आ+गम्) आववुं.
आगास न० (आकाश) आकाश.
आच्छाअ धा० (आ+छद्+णि) ढांकवुं, दबाववुं.
आढप्प धा० (आ+रभ्) आरंभवु, शरुआत करवी.
आणंद पुं० (आनन्द) आनन्द.
आणंदाराम पुं०(आनन्दाराम) आनन्दरूप बगीचो.
आम अ० अभ्युपगम, स्वीकार.
आ+यर धा० (आ+चर्) आचरवुं, अनुष्ठान करवुं.
आयरिअ पुं० (आचार्य) साधुगणना नायक.
आरणाल न० दे० कमल.
आलम्पित त्रि० (आलम्बित) आश्रित.
आलव धा० (आ+लप्) आलाप संलाप, बोलवुं.
आलस्स न०(आलस्य) आलस,सुस्ती.
आवण पुं० (आपण) दुकान, बजार.
आवत्ति स्त्री० (आपत्ति) आपद्.
आवत्ति स्त्री०(आवृत्ति) पुनरावर्तन.
इ अ० पादपूरणमां.
इअर स० (इतर) अन्य, बीजुं.
इच्छ धा० (इष्) इच्छा करवी, चाहवुं.
इट्ठ वि० (इष्ट) इच्छित, प्रिय.
इड्ढिमन्त त्रि० (ऋद्धिमत्) वैभववालो
इतरहा अ०(इतरथा)अयन्था, नहितो
इत्थं अ० (इत्थं) एवी रीते.
इत्थी स्त्री० (स्त्री) अंगना, स्त्री.
इन्दिअ न० (इन्द्रिय) चक्षु आदि इन्द्रियो.
इर अ० संभावना, निश्चय.
इरमंदि पुं०(दे०) उंट.
इलु पुं० (दे०) पटावालो, चपराशी
इव अ० इवार्थक, सादृश्य, तुल्य, पेठे.
इसि पुं० (ऋषि) धर्मगुरु, साधु,मुनि.
इहरा अ० अन्यथा.
ईस न० (दे०) खीलो.
ईसर पुं० (ईश्वर) प्रभु,समर्थ.
ईसा स्त्री० (ईर्ष्या) अदेखाई.
उ (तु) अ० तो.
उअ अ० जो, नजर कर.
उचिअ वि० (उचित) योग्य, लायक.
उच्चिणिरी स्त्री० (उच्चेत्री) वियणारी.
उच्छ पुं० (उक्षन्) बलद.
उच्छंग पुं० (उत्संग) खोलो, गोद.
उच्छाण पुं० (उक्षन्) बलद.
उज्जम न० (उद्यम) उद्यम.
उज्जाविय त्रि०(दे०) विकसित थयेल.
उज्जाण न० (उद्यान) बगीचो.
उज्जोमिआ स्त्री० (दे०) किरण.
उज्झस पुं० (दे०) उद्यम.
उज्झित. त्रि० (उज्झित) त्यक्त.
उज्जोअ पुं० (उद्योत) प्रकाश.
उट्ठ धा०(उत्+स्था) उठवुं, उभायवुं.
उड्ड धा० (उत्+डी) आकाशमां उडवुं.

कर धा० (कृ) करवुं.
करि पुं० (करि) हाथी.
करडा स्त्री० (दे०) भमरो.
कलय पुं० (दे०) सुवर्णकार, सोनी.
कलयंदि त्रि० (दे०) प्रख्यात.
कल्लाण न० (कल्याण) श्रेय, मोक्ष.
कव्व न० (काव्य) कविता.
कसाअ पुं० (कषाय) क्रोधादि कषाय.
कह धा० (कथ्) कथन करवुं, कहेवुं.
कहं अ० (कथं) केवी रीते.
कहा स्त्री० (कथा) कथा, वार्ता.
कंचणार पुं० (काञ्चनार) कोविदार नामनुं झाड.
कंटअ पु० (कंटक) कांटो.
कंदोट्ट न० (दे०) कमल.
कंप धा० (कम्प्) ध्रुजवुं, कंपवुं
काममोअ पुं० (कामभोग) इन्द्रियना विषय भोग.
कारण न० (कारण) हेतु, कारण.
कारागिह न० (कारागृह) केदखानुं.
काल पुं० (काल) समय, वखत.
कालय त्रि० (दे०) ठग, धूर्त.
किण धा० (क्री) खरीदवुं.
किणो अ० प्रश्नमां.
किच्च न० (कृत्य) कार्य.
किन्तु अ० परन्तु.
किर अ० संभावना, निश्चय.
किरण पुं० (किरण) किरण.
किरिआ स्त्री० (क्रिया) अनुष्ठान.
किल अ० संभावना, निश्चय.
किलेश पुं० (क्लेश) कंकाश, दुःख.
किवा स्त्री० (कृपा) कृपा, महेरबानी.
किविण पुं० (कृपण) लोभी, कंजुस.
किस वि० (कृश) पातलुं.
किसीवल पुं० (कृषीवल) खेडुत.
किंकर पुं० (किङ्कर) नोकर, चाकर.
कीड धा० (क्रीड्) क्रीडा करवी, रमत करवी.
कीर धा० (कृ) करवुं.
कुडुंब न० (कुटुंब, वालबच्चा.
कुठार पुं० (कुठार) कुहाडो.
कुण धा० (कृ) करवुं.
कुप्प धा० (कुप्) कोप करवो, खीजववुं
कुरुल त्रि० (दे०) चतुर.
कुरूव वि० (कुरूप) कदरूपुं.
कुलीण वि० (कुलीन) खानदान.
कुसल पुं० (कुशल) डाह्यो माणस, चतुर.
केअई स्त्री० (केतकी) केतकी.
केआर पु० (केदार) खेतर, घासनुं बीड.
केरिस वि० (कीदृश) केवो, केनाजेवो
कोणिअ पुं० श्रेणिक राजानो पुत्र, कोणिक.
कोसल्ल न० (कौशल्य) आरोग्य, कुशलता.
कोहग्गि पुं० (क्रोधाग्नि) क्रोधरूपी अग्नि.
कोहसत्तु पुं० (क्रोधशत्रु) क्रोधरूपी दुश्मन.
खग्घोल पुं० (दे०) वाघ.

खत्तिअ पुं० (क्षत्रिय) क्षत्रियजाति पुरुष.
खम धा० (क्षम्) खमवुं, सहनता राखवी.
खमा स्त्री० (क्षमा) सहनशीलता.
खम्म धा० (खन्) खोदवुं, खणवुं.
खल धा० (स्खल्) भटकवुं, ठेस लागवी.
खलु अ० निश्चय.
खंधक पुं० (स्कन्धक) जैनशास्त्रमां प्रसिद्ध एक आचार्य.
खिप्पामेव अ० (क्षिप्रमेव) सत्वर.
खिव धा० (क्षिप्) फेंकवुं.
खु अ० निश्चय.
खेअ पुं० (खेद) परिश्रम, विषाद, दिलगिरि.
गअ पु० (गज) हाथी.
गइ स्त्री० (गति) नरक आदिनी गति.
गच्छ धा० (गम्) जवुं, गमन करवुं.
गाह धा० (ग्रह्) ग्रहण करवुं, लेवुं.
गणिआ स्त्री० (गणिका) वेश्या.
गम्म धा० (गम्) जवुं, चालवुं.
गयण न० (गगन) आकाश.
गरीअ पुं० (गरीयस्) अतिशय, गुरु, मोटुं.
गव्व पुं० (गर्व) अभिमान.
गव्व पुं० (गर्व) मद, अभिमान.
गहण न० (गहन) कठिन, भारे.
गामिल्ल वि० (ग्राम्य) गामडीआ.
गाव पुं० (ग्रावन्) पत्थर.
गावाण पु० (ग्रावन्) पत्थर.
गावी स्त्री० (गो) गाय.
गाहा स्त्री० (गाथा) श्लोक.
गिज्झ धा० (गृध्) आसक्त थवुं, तल्लीन थवुं.
गिम्ह पुं (ग्रीष्म) गरमीनी ऋतु.
गिरि पुं० (गिरि) पर्वत.
गिह न० (गृह) घर, मन्दिर.
गिहत्थ पुं० (गृहस्थ) गृहस्थ, शाहुकार.
गिहासम पुं० (गृहाश्रम) गृहस्थाश्रम
गिहिणी स्त्री० (गृहिणी) धर्म-पत्नी.
गुण पुं० न० (गुण) गुण.
गुण पुं० (गुण) गुण.
गुरु पुं० (गुरु) धर्ममार्गने बताव-नार.
गुंज धा० (गुञ्ज्) गुंजारव शब्द करवो.
गोवच्छ पुं० (गोवत्स) वाछरडो.
गोवाल पुं० (गोपाल) गोवालीओ.
घेप्प धा० (ग्रह्) ग्रहणकरवुं, स्वी-कारवुं.
चउ सं० वा० (चतुर्) चार.
चउद्दस सं० वा० (चतुर्दशन्) चौद.
चमू स्त्री० (चमू) सैन्य, लश्कर.
चम्म न० (चर्मन्) चामडी.
चय धा० (त्यज्) छोडवुं, तजवुं, मुकीदेवुं.
चर धा० (चर्) चरवुं, फिरवुं.
चल धा० (चल) चालवुं.

चिट्ठ धा० (स्था) उभा रहेवुं, स्थिर रहेवुं.
चिण धा० (चि) चणाववुं, गोठववुं, एकठुं करवुं.
चिम्म धा० (चि) वीणवुं.
चिंत धा०(चित्) चिंतववुं, विचारवुं.
चिर अ० लांबा वखत सुधी.
चुलुक पुं०(चौलुक्य) चौलुक्यवंश.
चे धा० (चि) चणाववुं, गोठववुं, एकठुं करवुं.
चें अ० (चेत्) यदि जो.
चेअ अ० नक्की, निर्धारण.
चेडग पुं० (चेटक) विशाला नगरीनो राजा, महावीरना मामा.
चोर पुं० (चोर) हेरु, लुंटारो.
चंड वि० (चण्ड) विकराल, भयंकर.
चंडाल पुं० (चण्डाल) चंडाल.
च अ० नक्की, निर्धारण.
चिअ अ० नक्की, निर्धारण.
चेअ अ० नक्की, निर्धारण.
छ सं० वा० (षट्) छ.
छिन्द धा० (छिन्द्) छेदवुं, कापवुं.
छिप् धा० (स्पृश्) अडकवुं, स्पर्शवुं.
छुप्प धा० (छुप्) स्पर्श करवो.
छुहा स्त्री० (क्षुधा) भूख.
जग न० (जगत्) दुनिया.
जण पुं० (जन) मनुष्य, माणस.
जणवअ पुं० (जनपद) देश.
जन्तु पुं० (जन्तु) जीव, जन्तु.
जम पुं० (यम) परमाधामी, जम.
जम्म न० (जन्मन्) जन्म, उत्पत्ति.
जय धा० (जि) जीत मेलववी.
जयन्ती स्त्री० उदायनराजानी फोइ, महावीर स्वामीनी मोटी श्राविका.
जरा स्त्री० (जरा) वृद्धावस्था.
जल न० (जल) पाणी.
जव धा०(या+णि) वखत काढवो, ढील करवी.
जव पुं० (यव) जव, धान्यविशेष.
जस पुं० (यशस्) यश, कीर्ति.
जहा अ० (यथा) जेम, जेवीरीते, जेवुं.
जाइ स्त्री० (जाति) जाइनुं फूल.
जामाअर पुं० (जामातृ) जमाई.
जामाउ पुं० (जामातृ) जमाई.
जाव अ०(यावत्) ज्यां सुधी.
जिण पुं० (जिन) तीर्थङ्कर.
जिण धा० (जि) जीत मेलववी.
जिणदास पुं० (जिनदास) एक माणसनुं नाम.
जिम्म धा० (जिम्) खावुं, भोजन करवुं.
जीर धा० (जॄ) जीर्ण थवुं.
जीव पुं० (जीव) जीव, आत्मा.
जीवणिकाय पुं० (जीवनिकाय) जीव समुदाय.
जीविअ न० (जीवित) जीवितव्य, जिंदगी.
जीहा स्त्री० (जिह्वा) जीभ.

जुज्झ धा० (युध्) युद्ध करवुं, लडाई करवी.

जुद्ध न० (युद्ध) लडाई.

जुव पुं० (युवन्) जुवान तरुण पुरुष.

जुवाण पुं० (युवन्) जुवान, तरुण पुरुष.

जे अ० पादपूरणमां.

जोणि स्त्री० (योनि) उत्पत्तिनुं स्थान.

जोह पुं० (योध) योद्धो, लडवैयो.

झगिति अ० शीघ्रता अर्थमां.

झा धा० (ध्यै) ध्यावुं, चिंतवुं.

ठा धा० (स्था) उभा रहेवुं, स्थिर रहेवुं.

ठाण न० (स्थान) ठेकाणुं.

ठिअ वि० (स्थित) उभेलो.

डज्झ धा० (दह्) बळवुं, दाझवुं.

णरअ पुं० (नरक) नरक, दुःख स्थान.

ण अ० (न) नहीं.

णइ अ० नक्की, निश्चय.

णई स्त्री० (नदी) नदी.

णज्ज धा० (ज्ञा) जाणवुं, समजवुं.

णणंदा स्त्री० (ननान्दृ) नणंद.

णत्तुअ पुं० (नप्तृ) दीकरानो, दीकरीनो दीकरो.

णत्थि धा० (नास्ति न+अस्ति) नथी.

णयर न० (नगर) नगर.

णर पुं० (नर) माणस.

णरिन्द पुं० (नरेन्द्र) राजा.

णम धा० (नम्) नमी जवुं, प्रणाम करवो.

णवर अ० केवल अथवा एटलुं विशेष.

णवरि अ० आनन्तर्यना अर्थमां.

णव सं० वा० (नवन्) नव.

णवि अ० वैपरीत्य.

णव्व धा० (ज्ञा) जाणवुं, समजवुं.

णाइजण पुं० (ज्ञातिजन) नातिला.

णाइं अ० निषेधमां, नहि ए अर्थमां.

णाण न० (ज्ञान) ज्ञान.

णामहेय न० (नामधेय) नाम.

णासव धा० (नश्+णि) नाश करवुं.

णासिआ स्त्री० (नासिका) नाक.

णि उप० (नि) आदेश, नीचे.

णिओअ धा० (नि+युज्) जोडवुं, गोठवुं.

णिच्च अ० (नित्य) हमेश, सदा.

णिअवह पुं० (निजवध) पोतानो घात.

णिन्दा स्त्री० (निन्दा) निन्दा, अपवाद.

णियच्छ धा० (नि+यम्) नियममां लेवुं, वश करवो.

णियम पुं० (नियम) कायदो, मर्यादा.

णिर् उप० (निः) विना, बहार, दूर.

णिरवराह त्रि० (निरपराध) अपराध वगरनो.

णिव्विस धा० [निर्+विश्] रहेवुं, भरमवुं.

णिरिक्खण न० [निरीक्षण] अवलोकन.
णिरुन्ध धा० [नि+रुध्] रोकवुं.
णिवट्ट वि० [नि+वृत्त] निवर्त्तुं.
णिव पुं० [नृप] राजा.
णिसेह पुं० [निषेध] ना, मना.
णीइ स्त्री० [नीति] न्यायमार्ग, नीति.
णीरअ वि० [नीरजः] रजवगरनुं, निर्मल.
णी धा० [नी] दोरी जवुं, लई जवुं.
णेत्त न० [नेत्र] आंख.
णेह पुं० [स्नेह] प्रेम, प्रीति.
ण्हा धा० [स्ना] नहावुं, स्नानकरवुं.
त स० [तद्] ते.
तए स० [त्वया] युष्मद्ना तृतीयानुं एकवचन, तें.
तडाअ पुं० [तडाग] तलाव, सरोवर.
तत्त न० [तत्त्व] पदार्थ, सार.
तप्परिणाम पुं० [तत्परिणाम] तेनुं परिणाम.
तरणि पुं० [तरणि] सूर्य.
तरु पुं० [तरु] झाड.
तरुण वि० [तरुण] जुवान, नवुं.
तव धा० [तप्] तपवुं, प्रकाशवुं.
तविंधण न० [तपइन्धन] तपस्या-रूपी इन्धन.
तहवि अ० [तथापि] तो पण.
तहा अ० [तथा] तेम, तेवीरीते, तेवुं,
तं अ० वाक्योपन्यासना अर्थमां.
ताअ पुं० [तात] जनक, बाप.
ताव अ० [तावत्] त्यांसुधी.
ति अ० [इति] समाप्ति, एवी रीते.
ति सं० वा० [त्रि] त्रण.
तित्थअर पुं० [तीर्थङ्कर] जैनशासन-नायक.
तिव्व त्रि० [तीव्र] तीक्ष्ण.
तीर धा० [तॄ] तरवुं, पार पामवुं.
तुब्भे स० [यूयं] तमे.
तुम स० [त्वं] तुं.
तुम्हे स० [युष्मान्] तमने.
तेअ न० [तेजः] प्रकाश.
तेण पुं० [स्तेन] चोर, लुंटारो.
ते [तव] युष्मद्ना षष्ठीनुं एक वचन, तेनुं.
तेरस सं० वा० [त्रयोदश] तेर.
थुण धा० [स्तु] स्तुति करवी.
थू अ० तिरस्कारना अर्थमां.
दक्खरस पुं० [द्राक्षारस] द्राखनो रस
दया स्त्री० [दया] दया, अनुकम्पा.
दर अ० इषत्, थोडुं.
दरवअिअ त्रि० [दे०] भोगवाएल.
दव्व न० [द्रव्य] द्रव्य.
दस सं० वा० [दशन्] दश.
दहि न० [दधि] दहीं.
दंड धा० [दंड्] दंडवुं.
दंस धा० [दृश्+णि] देखाडवुं.
दंसण न० [दर्शन] दर्शन, जोवुं.
दाण न० [दान] दान देवुं.
दाम न० [दामन्] माला.
दाव धा० [दृश्+णि] देखाडवुं.

दिट्ठि स्त्री० [दृष्टि] दृष्टि, नजर.
दियह न० [दिन] दिवस.
दिग्घ वि० [दीर्घ] दीर्घ, लांबुं.
दीण वि० [दीन] गरीब, मनाथिन.
दीस धा० [दृश्] जोवुं.
दुग्गुण पुं० [दुर्गुण] अवगुण, दोष.
दुज्जण पुं० [दुर्जन] दुर्जन.
दुद्दसा स्त्री० [दुर्दशा] दुर्दशा
दुज्झ धा० [दुह] दोहवुं.
दुर् उप० [दुर्] दुर्नीति, दुःसंकर्षी.
दुवालस सं० वा० [द्वादश] बार.
दुह न० [दुःख] क्लेश, प्रशान्ति.
दुहिआ स्त्री० [दुःखिता] दुःखी स्त्री
दूइज्जमाण त्रि० [ ] चालतुं
दूम धा० [दु+णि] संताप‌वुं, दुःखी करवुं.
दे अ० संमुखीकरण तथा सखीना आमंत्रणमां.
दे धा० [दा] देवुं, आपवुं.
देव पुं० न० [देव] देव.
देवर पुं० [देवर] देर, दियर, पतिनो नानो भाई.
देवी स्त्री० [देवी] देवांगना.
देह पुं० [देह] शरीर
दो सं० धा० [द्वि] बे.
दोवारिअ पुं० [दौवारिक] द्वारपाल.
दोस पुं० [दोष] अवगुण.
धय पुं० [ध्वज] ध्वजा, पताका.
धण न० [धन] द्रव्य, दोलत.
धणु न० [धनुः] धनुष.
धन्न न० [धान्य] धान, धान्य.
धम्म पुं० [धर्म] धर्म, न्यायमार्ग.
धम्मणिट्ठ पुं० [धर्मनिष्ठ] धर्मनी निष्ठावाळो.
धर धा० [धृ] धरवुं, धारण करवुं.
धिइ स्त्री० [धृति] धीरज.
धीर पुं० [धीर] धैर्यवान् पुरुष.
धीवर पुं० [धीवर] माछी.
धुण धा० [धू] धुणवुं, कंपवुं.
धुत्त पुं० [धूर्त] धुतारो, ठग.
धुव धा० [धू] धुणवुं, कंपवुं.
धुवं अ० [ध्रुवं] निश्चय.
धूया स्त्री० [दुहितृ] दीकरी.
नयण पुं० न० [नयन] आंख.
नह न० [नभस्] आकाश.
निअ धा० [दृश्] जोवुं.
निक्किट्ठ त्रि० [निकृष्ट] अधम
निवास पुं० [निवास] रहेठाण.
निशादपन्न त्रि० [निशातप्रज्ञ] कुशाग्रबुद्धिवाळो.
निहि पुं० स्त्री० [निधि] भंडार.
पअ न० [पद] पगलुं, पद.
पआस पुं० [प्रकाश] प्रकाशवुं.
पइ पुं० [पति] धणी, स्वामी.
प उप० [प्र] आगळ, प्रारंभ, उत्कर्ष.
पउट्ठ त्रि० [प्रयोक्तव्य] योजवा योग्य.
पउट्ट न० (दे०) घर, मकान.
पक्ख पुं० (पक्ष) पांख.
पक्खि पुं० (पक्षिन्) पक्षी.
पाक्खिय त्रि० (पाक्षिक) पखवाडि

पच्चूह पुं० [दे०] सूर्य.
पच्छा अ० [पश्चात्] पछी.
पट्टइल्ल पुं० [दे०] गामनो मुखी, पटेल.
पड धा० [पत्] पडवुं.
पडि उप० [प्रति] सामे, उलटुं.
पडिसमय न० [प्रतिसमय] दरेक क्षणे.
पड्डुय पुं० [दे०] पासो, भेंसो.
पढ धा० [पठ्] भणवुं, पाठ करवो.
पणव धा० [प्र+नम्] नमवुं.
पणीअ न० [प्रणीत] सरस.
पत्त न० [पात्र] पातरुं, लाकडानुं ठाम.
पत्त न० [पात्र] योग्य, अधिकारी, वासण.
पत्तड त्रि० [दे०] सुन्दर.
पत्तेअं अ० प्रत्येक, दरेक, एकेक.
पत्थाव पुं० [प्रस्ताव] अवसर.
पद्धर त्रि० [दे०] पाधरुं, सिधुं.
पन्नत्त त्रि० [प्रज्ञप्त] परूपेल.
पन्नरस सं० वा० [पंचदश] पन्नर.
पभाअ न० [प्रभात] प्रातः काल.
पमाअ पुं० [प्रमाद] आलस्य, बेदरकारी.
पमोअ धा० [प्र+मुद्] खुशी थवुं,
पमोअ पुं [प्रमोद] खुशाली.
पय न० [पद] पद.
पयट्ट त्रि० [प्रवृत्त] प्रवृत्त थएल.
पयडि स्त्री० [दे०] मार्ग, रस्तो.
पयत् धा० [प्र+यत्] प्रयत्न करवो.
पया धा० [प्र+या] प्रयाण करवुं.
पर वि० [पर] अन्य, बीजुं.
परएस पुं० [परदेश] देशावर.
परज्झ त्रि० [दे०] पराधीन.
परभव पुं० [परभव] आवतो भव, बीजो भव.
परमत्थ पु० [परमार्थ] परोपकार.
परलोअ पुं० [परलोक] आवतो भव.
परा उप० [परा] उलटापणुं, पाछुं.
पराअ पुं० [पराग] फूलना रजकणो.
पराजय धा० [परा+जि] पराजय करवो.
परिक्खा स्त्री० [परीक्षा] परीक्षा.
परित्थी स्त्री० [परस्त्री] पारकी स्त्री.
परि भंस धा० [परि+भ्रंश्] भ्रष्ट थवुं.
परिहर धा० [परि+हृ] परहरवुं, तजवुं, दूर करवुं.
परोप्पर अ० [परस्पर] मांहोमांहे.
पलाय दे० चोर.
पल्लव पुं० [पल्लव] पत्रनी टोसी.
पवड्ढ धा० [दे०] सुवुं, शयन.
पवण पुं० [पवन] पवन. २ ते नामनो एक राजा
पवत्त धा० [प्र+वृत्] वर्तवुं, प्रवृत्ति करवी.
पव्वअ न० [पर्वत] पहाड.
पवाह पुं० [प्रवाह] प्रवाह, पोट.
पसंग पुं० [प्रसंग] प्रस्ताव.
पसत्थ वि० [प्रशस्त] श्रेष्ठ, प्रशंसापात्र.
पसविर त्रि० [प्रसवशील] उत्पादक.
पसाअ पुं० [प्रसाद] महेरबानी, कृपा.
पसारि धा० [प्र+सृ+णि] पसारवुं, लांबुं करवुं.
पसु पुं० [पशु] पशु, जानवर.

पह पुं [पथ] रस्तो, मार्ग, पंथ.
पहाव पुं० [प्रभाव] प्रताप.
पहिअ त्रि० [पथिक] मुसाफर.
पहु पुं० [प्रभु] समर्थ
पंकय न० [पंकज] कमल.
पंखुडिआ स्त्री० [दे०] पांख.
पंच सं० वा० [पंचन्] पांच.
पंडिअ पुं० [पंडित] विद्वान.
पाअ पुं० [पाद] पग.
पाअ पु० [पाद] पग, चरण
पाउरण दे० कपडं.
पाउस पु० [प्रावृष] चोमासुं
पाडिएक्कं अ० प्रत्येक, दरेक, दरेक.
पाडिक्कं अ० प्रत्येक, दरेक, एकेक.
पाढग पुं० [पाठक] भणावनार.
पाण पुं० [प्राण] प्राण, जीवन.
पायस न० [पायस] दूधपाक.
पाउक वि० ना० स्वजनमां वेग, एक पाणी आवाण.
पास धा० [दृश्] जोवुं.
पासाअ पुं० [प्रासाद] हवेली, मकान.
पिगला वि०ना० मयूरनी मादा.
पिंजर न० [पिंजर] पांजरुं.
पि अ० पण.
पिअ धा० [पा] पीवुं.
पिअर पुं० [पितृ] पिता, बाप.
पिउ पुं० [पितृ] पिता, बाप.
पिउच्छा स्त्री० [पितृष्वसा] फोई.
पिउसिआ स्त्री० [पितृष्वसा] फोई.
पिय अ० इत्यर्थ, पुनर, मात्र, फेर.

पिवासा स्त्री० [पिपासा] पाणीनी तरस, तृषा.
पीइ स्त्री० [प्रीति] प्रेम.
पीड धा० [पीड्] पीडवुं, दुःख देवुं.
पीणिमा स्त्री० [पीनत्व] जाडाई, पुष्टता.
पुच्छ धा० [पृच्छ्] पूछवुं, प्रश्न करवो.
पुण धा० [पू] पवित्र करवुं.
पुण अ० [पुनः] फरीने.
पुणरुत्तं अ० फरीथीना कथनो.
पुण्ण वि० [पूर्ण] पूरे पूरुं.
पुत्त पुं० [पुत्र] दीकरो.
पुप्फरस पुं [पुष्परस] फूलनो रस.
पुरा अ० आगळ, पहेला.
पुरिल्ल वि० [पूर्व] आगलुं.
पुरिस पुं० [पुरुष] माणस.
पुलइअ त्रि० [पुलकित] रोमांचित पामेल.
पुव्वकम्म न० [पूर्वकर्म] पूर्वे करेला कर्म.
पुव्वरत्तावरत्त न० [पूर्वरात्रापररात्र] मध्यरात.
पुव्विं अ० [पूर्वं] पहेले.
पूस धा० [पुष्] पोषवुं, पाळवुं.
पूस पुं० [पूषन्] सूर्य.
पूसाण पुं० [पूषन्] सूर्य.
फल न० [फल] फळ.
बज्झ धा० [बन्ध्] बांधवुं.
बन्धु पुं० [बन्धु] बान्धव.
पाहुण पुं० [प्राघुण] महेमान.
बल [बल] न० बळ, जोर, शक्ति.

बले अ० निर्धारण तथा निश्चयना अर्थमां.
बहिं अ० [बहिस्] बहार.
बहु वि० [बहु] घणुं.
बारस सं० वा० [द्वादश] बार.
बाल पुं० [बाल] बालक, अज्ञानी.
बाला स्त्री० [बाला] बालिका, छोकरी.
बाहिं अ० बहार अर्थमां.
बाहिरं अ० बहार अर्थमां.
बीभच्छ वि० [बीभत्स] निन्द्य.
बीह धा० [भी] डरवुं, बीवुं.
बुज्झ धा० [बुध्]जाणवुं, समजवुं.
बुद्धि स्त्री० [बुद्धि] मति.
बोह पुं० [बोध] उपदेश.
भअ न० [भय] बीक, भीति.
भक्खण न० [भक्षण] खावुं.
भगिणि स्त्री० [भगिनी] बहेन.
भण धा० [भण्] भणवुं, बोलवुं.
भत्त न० [भक्त] टंक.
भत्त पुं० [भक्त] सेवक, अनुचर.
भत्तहरि वि० ना० भर्तृहरि नामनो राजा.
भत्तार पुं [भर्तृ] पति, धणी.
भत्ति स्त्री० [भक्ति] भक्ति, बहुमान.
भत्तिज्जअ पुं० [भ्रातृज] भत्रिजो.
भत्तु पुं० [भर्तृ] पति, धणी.
भम धा० [भ्रम्]भमवुं, फरवुं.
भमर पुं० [भ्रमर] भमरो.
भमाड धा० [भ्रम्+णि] भमाववुं, रखडाववुं.
भमिर वि० [भ्रमिण्णु] भमवाना स्वभाववालो.
भयंअर वि० [भयंकर] भयभीत.
भर पुं० [भर] जत्थो.
भव धा० [भू] होवुं, थवुं.
भव पुं० [भव] जन्म, संसार.
भविअजण पुं० [भव्यजन] लायक माणस.
भविय वि० [भव्य] भव्य.
भसल पुं० [ ] भमरो.
भा धा० [भी] डरवुं, बीवुं.
भाअर पुं० [भ्रातृ] भाई.
भाउ पुं० [भ्रातृ] भाई.
भाउजाया स्त्री० [भ्रातृजाया] भोजाइ.
भाउज्जा स्त्री० [भ्रातृजाया] भोजाइ.
भाणु पुं० [भानु] सूर्य.
भिन्द धा० [भिद्] भेदवुं, कापवुं.
भुज्ज धा० [भुज्] खावुं, उपभोगमां लेवुं.
भुञ्ज धा० [भुज] खावुं, भोगववुं.
भूवइ पुं० [भूपति] राजा.
भोअ पुं० [भोग] इंद्रियविषय.
भोअण न० [भोजन] जमण.
मंस न० [मांस] मांस.
मइरा स्त्री [मदिरा] दारु, मद्य.
मए [मया] (अस्मद्, तृतीयानुं एक वचन) मैं.
मग्ग पुं० [मार्ग] रस्तो.
मच्चु पुं० [मृत्यु] मृत्यु, मोत.

मज्झे अ० [मध्ये] मांही.
मण धा० (मन्) मानवुं,कबूल करवुं.
मण न० [मनस्] अंतःकरण, हृदय.
मणिअं अ० [मनाक्]थोडुं.
मणे अ० विचार करवाना अर्थमां.
मणोरह पुं० [मनोरथ] विचारणा.
मत्त वि० [मात्र] मात्र.
ममभाव पुं० [ममभाव] ममत्व.
मयण पुं० [मदन] मदन, काम
विकार.
महव्वय न० [महाव्रत] साधुनां
पंचमहाव्रत.
महापुरिस पुं० [महापुरुष] महात्मा
पुरुष.
महावीर वि० ना० चोवीसमा
तीर्थंकरनुं नाम.
महिम पुं० स्त्री० [महिमन्] गौरव.
महिला स्त्री० [महिला] स्त्री.
महुर वि० [मधुर] मीठुं.
मा अ० निषेधमां, नहि ए अर्थमां.
मा अ० [मा] नहि, निषेध.
माअरा स्त्री० [मातृ] माता, देवी.
माआ स्त्री० [मातृ] माता, जननी.
माआपिअर पुं० [मातापितर] मा
बाप.
माइ स्त्री० [मातृ] माता, जननी,
माइं अ० निषेधमां, नहि ए अर्थमां.
माउ स्त्री० [मातृ] माता, जननी.
माण न० [मान] अभिमान.
माणुस्स न० [मानुष्य] मनुष्य
सम्बन्धी, मनुष्यपणुं.

मामि अ० सखीना आमंत्रणमां.
माया स्त्री [माया] कपट.
मारि धा० [मृ+णि] मारवुं.
मालारी स्त्री०[मालाकारी] मालण.
माला स्त्री० [माला] फूलनी माला,
माळाधारवाली.
मास पुं० [मास] महीनो.
माहप्प पुं० न० [माहात्म्य] मा-
हात्म्य.
मिअ वि० [मित] परिमित.
मिउ वि० [मृदु] कोमल.
मियावइ वि० ना० [मृगावती]
उदायन राजानी माता.
मिलाण त्रि० [म्लान] करमाइ गयेल.
मिव अ० उपमा, तुल्य, सादृश्य, पेठे.
मिहुण न० [मिथुन] संयोग.
मुअ धा० [मुच्] मुकवुं, छोडवुं.
मुक्ख पुं० [मोक्ष] मुक्ति.
मुणि पुं [मुनि] मौनव्रतधारी साधु,यति.
मुत्त वि० [मुक्त] छूटो, मुक्त.
मुत्ति स्त्री० [मुक्ति] मोक्ष, कल्याण.
मुद्दिआ स्त्री० (मुद्रिका) महोर.
मुद्ध पुं० [मूर्धन्] मस्तक.
मुद्धाण पुं० [मूर्धन्] मस्तक.
मुसा स्त्री० [मृषा] जूठुं.
मुह न० [मुख] मुख.
मूल पुं० [मूल] आरम्भ, आदि
कारण.
मेत्ती स्त्री० [मैत्री] मित्रता, प्रेम.
मेह पुं० [मेघ] वादळ, वरसाद.
मोअग पुं० [मोदक] लाडवो.

मोक्ख (मोक्ष) पुं० मुक्ति.
मोरउल्ला अ० वृथा, मुधा अर्थमां.
यंत्तणा स्त्री० (यंत्रणा) पीलवानुं यन्त्र
यय न० (जगत्) दुनिया.
य स० (यद्) जे.
रंज धा० (रंज्) रक्त थवुं, रंजन करवुं.
र अ० पादपूरणमां.
रअ न० (रजस्) रेती, धूल, रजकण.
रक्ख धा० (रक्ष्) रक्षण करवुं, पालवुं, संभाल करवी.
रज्ज न० (राज्य) राज्य.
रज्जु स्त्री० (रज्जु) दोरडी.
रत्तिआ स्त्री० (रात्रि) रात.
रम धा० (रम्) रति पामवी, क्रीडा करवी, रमवुं.
रम्म वि० (रम्य) रमणीक.
रस पुं (रस) स्वाद, २ स्वादयुक्त प्रवाही पदार्थ.
रसाल वि० (रसाल) रसयुक्त.
रह पुं० (रथ) रथ.
रहस्स न० (रहस्य) गुप्ततत्त्व.
राअ पुं० (राजन्) भूपति, राजा.
राआण पुं० (राजन्) भूपति, राजा.
राईसर पुं० (राजेश्वर) महाराज.
राम वि० ना० रामचंद्र, सूर्यवंशना प्रसिद्ध राजा.
राव धा० (रंज्+णि) रंजन करवुं.
रावण वि० ना० लंकानो राजा.
रिसि पुं० (ऋषि) धर्मगुरु, साधु, मुनि.
रीइ स्त्री० (रीति) रस्तो, प्रकार, आचार.
रुम्भ धा० (रुध्) रोकवुं, अटकाववुं.
रुय धा० (रुद्) रोवुं.
रूवग न० (रूप्यक) रूपीआ.
रुन्व धा० (रुद्) रोवुं, आंसु खेरवां.
रे अ० संबोधन, कलह.
रोव धा० (रुद्) रोवुं.
लंब धा० (लम्ब्) लांबुं करवुं, नीचे करवुं.
लक्ख सं० वा० (लक्ष) लाख.
लक्खमण वि० ना० रामचंद्रजीनां नाना भाई.
लच्छी स्त्री० (लक्ष्मी) लक्ष्मी.
लज्जा स्त्री० (लज्जा) लाज, शरम.
लब्भ धा० (लभ्) मेलववुं, पामवुं.
लय पुं० (लय) साम्यावस्था.
लवली स्त्री० (लवली) लताविशेष.
लह धा० (लभ्) पामवुं, मेलववुं.
लहिद त्रि० (रहित) शिवाय.
लहु वि (लघु) न्हानो.
लाच पुं (राजन्) राजा.
लिम्भ धा० (लिह्) चाटवुं.
लुण धा० (लू) लणवुं, कापवुं, छेदवुं.
लुम्बी स्त्री० ( ) द्राक्ष विगेरे फलनी लुम.
लेस पुं० (लेश) थोडुं, अंश.
लोअ पुं० (लोक) दुनिया.
लोह पुं० (लोभ) लोभ, कंजुसाई.
व अ० इवार्थक, तुल्य, सादृश्य, पेठे.
वअण न० (वदन) मुख.

वच्छ पुं० (वृक्ष) झाड.
वच्छर पुं० (वत्सर) वरस.
वट्ट धा० (वृत्) वर्तवुं, रहेवुं.
वड्ढ धा० (वृध्) वधवुं.
वण न० (वन) जंगल.
वणप्फइ पुं० (वनस्पति) लीलोतरी, औषधि.
वणिआ स्त्री० (वनिता) स्त्री, रामा.
वणे अ० निश्चय, विकल्प तथा अनुकंपाना अर्थमां.
वत्थ न० (वस्त्र) कपडुं.
वय धा० (वद्) बोलवुं, कहेवुं.
वय न० (वयस्) उमर,
वयण न० (वचन) शब्द, वाणी.
वयण पुं० न० (वचन) वचन.
वर वि० (वर) प्रधान, श्रेष्ठ.
वरिस न० (वर्ष) वरस, संवत्सर.
वल धा० (वल्) पाछा मारवुं, वळवुं.
वलग्ग धा० (आ+रुह्) चडवुं, उपर बेसवुं.
वल्लह त्रि० (वल्लभ) प्रिय, वल्लभ.
वव्वर त्रि० (बर्बर) जंगली, मूर्ख.
वस धा० (वस्) वसवुं, रहेवुं.
वह धा० (वह्) उपाडी जवुं.
व्व अ० इवार्थक, तुल्य, सादृश्य, वगेरे.
वंद धा० (वन्द्) वंदवुं.
वा अ० अथवा,
वाउ पुं० (वायु) पवन.
वागरण न० (व्याकरण) व्याकरण, भाषाज्ञान.
वाणिअ पुं०(वणिज) वेपारी, वाणीओ.

वावार पुं० (व्यापार) उद्योग.
वास न० (वर्ष) वरस.
वि अ० (अपि) पण.
वि अ० पण.
वि उप० (उप) विशेष, विरह, विहार.
विअ अ० इवार्थक, तुल्य, सादृश्य, वगेरे.
वि+अस धा० (वि+कस्) विकास पामवुं.
विआर पुं० विकार, विकृति.
विआर पुं० (विचार) मनोभाव.
विउल त्रि० (विपुल) घणुं.
विकअ वि० (विकृत) विकारपामेल.
विघट्टण न० (विघट्टन) मर्दन.
विजअ पुं० (विजय) जित.
विज्जा स्त्री० (विद्या) ज्ञान, भणतर.
विढव धा० (अर्ज्) एकठुं करवुं.
विणय पुं० (विनय) नम्रता, विवेक.
विणा अ० (विना) वगर.
विणेअ पुं० (विनेय) विनीत शिष्य.
वित्त न० (वित्त) पैसो, लक्ष्मी.
वित्थर पुं० (विस्तार) फेलावो.
विभाग पुं० (विभाग) जुदा जुदा भाग.
विरह पुं० (विरह) वियोग.
विरुद्ध त्रि० (विरुद्ध) विपरीत.
विलया स्त्री० (वनिता) स्त्री.
विव अ० इवार्थक, तुल्य, सादृश्य, वगेरे.
विवरिअसहाव त्रि० (विपरीतस्वभाव) उलटा स्वभावनुं.
विवाह पुं० (विवाह) लग्न, परणवुं.
विविह वि० (विविध) नानाप्रकार.

विखिलेस धा० (वि+श्लिष्) जुदुं करवुं.
विस्सास पुं० (विश्वास) भरोसो.
विहि पुं (विधि) ब्रह्मा.
वीर पुं० (वीर) महावीरस्वामी.
वीसा सं० वा० (विंशति) वीस.
वुच्च धा० (वच्) बोलवुं.
वुब्भ धा०(वह्) वहन करवुं, लई जवुं, उपाडवुं.
वे सं० वा० (द्वि) बे.
वेर न० (वैर) वेरभाव, दुश्मनाई.
वेव्व अ० आमंत्रणमां.
वेव्वे अ० भयवारण तथा विषादना अर्थमां.
वेस पुं० (वेष) पहेरवेस.
श त्रि०(स्व) पोतानुं.
शलश्शदी स्त्री० (सरस्वती) विद्यानी अधिष्ठात्री देवी.
सं उप० (सम्) साथे, संगति, सारीरीते, संहार.
संअम पुं (संयम) संयम.
संग पुं० (सङ्ग) सोबत, सहवास.
संघ पुं० (संघ) समुदाय.
संजम पुं० (संयम) संयम.
संतोस पुं० (संतोष) तृष्णानो अभाव.
संपेहेत्ता अ० (संप्रेक्ष्य) विचार करी.
संरम्भ पुं० (संरम्भ) आटोप, सूर्यना किरणोनो विस्तार.
संसार पुं० (संसार) जगत्.
संसारसाअर पुं० (संसारसागर) संसारसमुद्र.
स पुं० (श्वन्) कुतरो.
सअ सं० वा० (शत) सो.
सअल वि० (सकल) सर्व, बधुं.
सकंकण वि० (सकंकण) कंकण सहित.
सक्क धा० (शक्) शकवुं.
सगास पुं० (सकाश) पासे, नजीक.
सग्गइ स्त्री० (सद्गति) उंचीगति, देवादिगति.
सच्च न० (सत्य) साचुं.
सच्चवाइ पुं० (सत्यवादिन्) साचा बोलो.
सज्जण पुं० (सज्जन) लायक माणस.
सज्झाय पुं०(स्वाध्याय) पुनरावर्तन, स्वाध्याय.
सट्ठि सं० वा० (षष्टि) साठ.
सणिअं अ० (शनैः) धीरे धीरे.
सत्त सं० वा० (सप्त) सात.
सत्तरस सं० वा० (सप्तदश) सत्तर.
सत्ति स्त्री० (शक्ति) सत्ता, सामर्थ्य.
सत्थ न० (शास्त्र) आगम, प्रवचन.
सद्द पुं० (शब्द) शब्द, ध्वनि.
सद्+दह धा० (श्रद्+धा) श्रद्धवुं, आस्ता राखवी.
सद्दावेत्ता अ०(शब्दापयित्वा) बोलावीने.
सन्त व० कृ० (सत्) विद्यमान, सर्न
सपइ अ० (सपदि) तत्क्षण

सफल वि० (सफल) सार्थक.
सभा स्त्री० (सभा) पर्षदा, सभा.
समुत्तुस धा० (सम्+तुष्) संतोष पामवुं.
समण पुं० (श्रमण) साधु.
समणोवासअ पुं० (श्रमणोपासक) साधुनी उपासना करनार, श्रावक.
समत्थ वि० (समर्थ) शक्त, पहोंचवालो.
समप्पणीय वि० (समर्पणीय) सोंपवा लायक.
समय न० (स्वमत) पोतानो मत.
समस्त वि० (समस्त) सघलुं, सर्वं.
सम्म न० (शर्मन्) सुख.
समिद्धि स्त्री० (समृद्धि) वैभव, ऋद्धि.
समूह न० (समूह) जत्थो, समुदाय.
सयं अ० (स्वयं) पोते.
सयं अ० स्वयं, पोते, पोतानी जाते.
सया अ० (सदा) हमेशा.
सयाणीय वि० ना० (शतानीक) उदायनना पिता.
सर न० (सरस्) तलाव.
सर पुं० (शर) बाण.
सरअ पुं० (शरद्) शरदऋतु.
सरल वि० (सरल) निष्कपट, भोलो.
सवण न० (श्रवण) श्रवण, सांभलवुं.
सव्व स० (सर्व) सर्व, सकल.
सव्वघाइ वि० (सर्वघातिन्) सर्वनी घात करनार.
सह अ० (सह) साथे.
सह धा० (सह्) सहन करवुं.

सहस्स सं० वा० (सहस्र) हजार.
सहस्साणीय वि० ना० (सहस्रानीक) उदायनना दादा.
सहिरण्णं पुं० (सहिरण्यता) सोना सहितता.
साण पुं० (श्वन्) कूतरो.
सामाइअ न० (सामायिक) सामायिक व्रत.
सामि पुं० (स्वामिन्) मालिक, धणी.
सारहि पुं० (सारथि) रथ हांकनार, कोचमेन.
साला स्त्री० (शाला) निशाल, पाठशाला.
सावज्ज वि० (सावद्य) सदोष, पाप.
सावज्झ वि० (सावद्य) दोष सहित.
सावराह वि० (सापराध) अपराध सहित.
साह धा० (साध्) साधवुं.
साहज्ज न० (साहाय्य) मदद.
साहु पुं (साधु) धार्मिक कार्यकार.
सिंच धा० (सिच्) सींचवुं, छांटवुं.
सिक्खा स्त्री० (शिक्षा) शिखामण.
सिक्खावइय त्रि० (शिक्षाव्रतिक) शिक्षाव्रतयुक्त.
सिग्घं अ० (शीघ्रं) उतावली.
सिज्झ धा० (सिध्) सिझवुं.
सिणाण न० (स्नान) न्हावुं.
सिप्प धा० (सिप्) सिंपवुं.
सिप्प धा० (स्निह्) स्नेह-प्रेम करवो, चिकणा थवो.